

विप-कन्या

हमारा रोचक नाट्य-साहित्य

बिचपान (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२००
स्वप्न-भंग (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२००
उडार (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२००
घपघ (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२२०
घाया	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१००
शतरज के खिनाड़ी	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२००
समर्पण (पुरस्कृत)	बनमालाप्रसाद 'मितिस'	२००
मुमडा-परिणाम	श्रीरेन्द्रकुमार शुक्ल	२२०
शान्ति-भूत	देवदत्त 'अटल'	१२०
मानव-प्रताप	देवराज 'दिनेश'	२००
पगाली भोज (पुरस्कृत)	देवराज 'दिनेश'	२००
समुद्रमुक्त	बैकुण्ठनाथ दुग्गल	२००
बय ध्वनि	भाचार्य बसुरसंग शास्त्री	१२०
बितस्ता की लहरें (पुरस्कृत)	सध्मीनारायण मिश्र	२००
मए हाथ (पुरस्कृत)	दिनोद रस्तोमी	१००
सुजाता	बोधिवत्सलम पल्ल	१२०
जानहार	कुरनिया खैरी	२००
उषार का पति (हास्य)	बनमाला भवासकर	१००
बहु-बैठी	श्रीकृष्ण	०७२
अभिज्ञान शाकुन्तल	दग्गुसन्नर	२००
लभाऊ के स्तम्भ (धनुर्दिठ)	मीनाचरण दीतिठ	२२०
धूमि धूम्या सीमा (पुरस्कृत)	भा० वि० बरैरकर	१२०
कला के लिए (पुरस्कृत)	भा वि० बरैरकर	१२०
घ-मुच बवाल (पुरस्कृत)	भा वि० बरैरकर	१२०
कोरी करामान (पुरस्कृत)	भा० वि० बरैरकर	२००
अदमान मन तथा धम्य लोकी (पुरस्कृत)	सध्मीनारायण मिश्र	२२०
घानग्य का राजपथ (पुरस्कृत)	मीनाचरण दीतिठ	०२३
रंवारंग	बिरंजीत	२००

विष-कन्या

संगमंभीय एकांकी

लेखक

गोविंदचल्लभ पन्त



आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

जस-समाधि	४०
पण्डा	४००
सुबागा	१२०
बेफर्मान	६००
मुनि के बन्धन	४०
बन्माना	१७२
राजमुकुट	२००
धर्मनाम	४२०
महारी	२००
गुरजही	२००
प्रपति की पद	४२
पित्र का कंसा	(प्रेम में)

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ६

COPYRIGHT © BY ATMA RAM & SONS, DELHI-6

प्रकाशक

रामलाल पुरी संचालक

आत्माराम एण्ड सन्स

बादमीरी गेट दिल्ली ६

मूल्य	: आर	रुपये
प्रथम संस्करण	दिसम्बर,	१९२४
पाठ्यपुस्तक	: भा - भा०	द्वितीय
पुस्तक	बहीत प्रेम	दिल्ली-६

श्री शब्द

प्रस्तुत पुस्तक में मेरे पिछले हस्तलिखित कर्षणों के लिये हुए कुछ एकांकियों का बहू है। 'परदा-तोड़क बसब' सरस्वती (१९१६) में छपा था। 'जूनी मोटा (१९१८) 'बड़ बिन का चिकान' (१९४२) और 'जहरीला दाँत' (१९४३) १ सरस्वती में प्रकाशित हुए थे।

'घाटपीकाटक' (१९३१) और 'मलमारी' (१९३६) बर्मयुग में 'दिव-कन्या' (१९३७) तथा 'अपराम मेरा ही' (१९३८) गुणा में 'मार्च राठ का गायक' (१९४४) विक्रम में १०४^० (१९३०) संवत् में 'भूत-सीमा' (१९३६) मध्य राठ संदेश में और 'कौतूहल बंपर' (१९३६) समाज में छपा था।

अधिकतर एकांकियों में मेने फिर से संशोधन किया है और रचना की प्रमत्ता का ध्यान रखा है।

'अपराम मेरा ही' शीर्षक एकांकी में छपा फेंकने की जो विधिनेम् है वह उन जगते ही बाएँ तर के लिए रचना की रोशनी बुझा सकततापूर्वक करी जा सकती है।

—गोविंदबल्लभ पन्त

क्रम

१	बिय-काम्या	१
२	कुमी सोटा	२५
३	अपराध मेरा ही	२५
४	कॉलेज बंपर	८१
५	आधीरात का गायक	१०६
६	मृत-मीमा	१३३
७	परदा-तोड़क सतब	१३३
८	बड़ दिन का चिकार	१७५
९	सागरीप्राणक	१८६
१०	१०४ ^०	२०१
११	खहूरीना दाँव	२११
१२	मन्त्रमारी	२१६

पात्र

अम्बरबिजय

विजया राजा

सगराजिता

विजित पक्ष की कन्या

पहला सेनापति दूसरा सेनापति

अम्बरबिजय के सेनापति

एक क्षत्रिय

दूसरा—पशु से नीचे हुए दुर्ग के क्षयनापार के

काल—एक रात

विष-कन्या



एक बरिष्ठता की एक-मिजा

[ब्रह्म—पराहित धनु से चीन लिए गए युय के प्रासाद में एक मुसगिजत
अयनामार । समय—संध्या । सत्ते आलापन के पास एक सुन्दर दाम्या बिछी हुई
है और एक विजरे में बन्द एक कपोल लटक रहा है । महाराज अग्रविजय के
बो सेनापति प्रवेश करते हैं ।]

पहला सेनापति—सर्वो मित्र सेनापति । धनु के इस युय का जीत लेने में
हमें कई महीन लगे हैं यही पर यह विजय कहीं बहुमूल्य है ।

दूसरा सेनापति—लेकिन आश्चर्य इसी बात का है बिहित महाराज का
पता न तो युय के आहत और मृतकों में है न बंदियों में ही उनकी गिनती
हुई है ।

पहला सेनापति—हो न हो के किसी युय मुरंग से सुरक्षा क स्थान को
नेकम गए ।

दूसरा सेनापति—धीर राजा का घंठ पुर ?

पहला सेनापति—बह गया हमारे स्वायत्त क निय बहाँ रत दिया जाठा ?
भी सब भाग गए होंगे । मेरी सभ्य में हमारे महाराज अग्रविजय के विषाम

- निय यह प्रबोध सबसे अधिक उपयुक्त है ।

दूसरा सेनापति—सोचन कुछ दिन बड़ी आश्चानो से चौकसी रखनी
पड़गी ।

पहला सेनापति—एसा क्यों कहते हो ? हमने युय का एक-एक कोना छान
ढाला है एक-एक ईंट बजाकर मुन लो है । नहीं कोई सम्बेह के घापार नहीं
मिले हैं ।

दूसरा सेनापति—ये बयकट-बाती बिरबर्मा का निर्माण बताकर अपने
स्वायत्त की महिमा बताते हैं । ये पुन आनखाने रतम्भ भीके घंठ जानेबाते
बरातस धीर बीक के विभवत हो जानेबाते प्राचीर हैं तो बड़े आश्चर्यजनक !
मुन जिन नू भागों को प्रायण समझे हुए हो के मुक्त भवनों की छतें भी
हो सकती हैं ।

पहला सेनापति—घिरकर रहने के लिय बाबू का प्रबन्ध हो सकता है वह के भी रूप खुद सकते ह। लेकिन इन सबके ऊपर जिस घनाब के बाने में बनुष की कामा और कामना टिकी है, वह कहीं से घाएना ? कः महीने से हमने घनाब तमाम बाहरी संघर्ष काटकर रख दिया है। फिर क्यों तुम्हारे ऐसी संभावना जागती है ?

दूसरा सेनापति—नीचे ही नीचे सुरंगों के मार्गों से प्रवरण ही घनों के साथ चम्होने प्रपना सम्बंध बना रखा है।

पहला सेनापति—अगर एसा होता तो मैं इतने सीधे धामसपरंतु न कर सकते। बाह्य और मूलकों में महाघाब के न मिलने की क्या बिन्दा ? दुर्म की किमी टटी कीवार के नीचे उनका समाहित हो जाना कोई असम्भव नहीं है।

दूसरा सेनापति—(एकएक कुछ चौकता है)।

बहुला सेनापति—क्यों ? क्यों ? चौकते क्यों हो क्या हो क्या ?

दूसरा सेनापति—मैंने किती की साथ वा घम्भ सुना है।

पहला सेनापति—क्या बिरबकर्मों के बनाव किती गुप्त और अप्रसन्न क्या में ? लेकिन वह तो बताओ वह तीस है कौती ठंडी या गरम ?

दूसरा सेनापति—घाघम तुम्हारा ?

बहुला सेनापति—सेनापति जी बिरह की ठाम ठंडी और मिमन की गरम होती है। जो ठंडी होता है वही सम्भी भा। अब तो बताओ कौती है वह ?

दूसरा सेनापति—(ध्यान से सुनता है) ठंडा सुनने दो। (फिर मुसता है) है प्रबन्ध है और वह ठंडी साथ है।

पहला सेनापति—एक बात और बताओ गर को है या तारी की ?

दूसरा सेनापति—हुं। गरम का भेद जाया वा मजता है साथ वा कौने ?

बहुला सेनापति—घनी बहोदय साथ ही गर तो घम्भ उदर हुआ है।

सैनिक—(भेष्य में) महाघाब काटदिये की वय।

दूसरा सेनापति—महाराज तो स्वयम ही इपर घा मण।

काटदिये—(घाकर) मैं तुम दोनों सेनापतियों की सोच में हूँ।

बहुला सेनापति—धीर महाराज हम पारके विघाम के सिधे उपबुक्त

स्वान डंड रहे हैं ।

दुसरा सेनापति—यह क्या संख्या धापके योग्य है परन्तु—

अग्निविजय—घोर गुप्तने तो इसे बिस्कुम परिपुष भी कर दिया है । जाने पीने की बगलुएँ ही मूर्ही मनोरंजन के लिये बाध-अन भी साकर रख दिए ।

दुसरा सेनापति—हमने इसमें कुछ नहीं किया महाराज इसी लिए तो मैं कहता हूँ—

पहला सेनापति—गुप्त क्या कहते हो ? यह क्या ही कहता है कि समु-यव को इनका कुछ भी घामास नहीं था कि उनके दुर्म का इतने लीघ पतन हो जायगा ।

अग्निविजय—धपवान का यह विचित्र विधान है । दास-बासियो ने यह चम्या न जाने किमके लिय बिछाई घोर इसमें विधाम करने को या क्या कोश ? (अध एठ कोने में रजता है घोर कपर के बडिबंध पर हाथ रखता है) ।

दुसरा सेनापति—(अग्निविजय का उटिबन्ध घोर कबज सोलने में सहायता देता है) पर महाराज—

अग्निविजय—गुम्हारे भीतर बिस्वास की भावा बहुत कम है सेनापति एसा भी क्या ? दिन मर के यज्ञ से मैं बहुत मक गया हूँ । गुरल ही मेरे लिय विधाम धाबरवर है । सब पूछो तो यह सायतागार इस समय तकसे बड़ा बरदान है ।

दुसरा सेनापति—महापत्र मेरे कहने का धापय मही है शम् के इस दुगे को भीन केने पर धगर हम पत्नी निघाघों में बिस्कुम निडा के बनीमूत हो गए तो हम बोवा भी सा गवते हैं ।

पहला सेनापति—गुप्त शम् की बात कहते हो हमें बोवा देने में क्या हमारी इशियाँ ही कम प्रयोग है ? महाराज को विधाम करने को सेनापति । उनको रसा के निग हम घोर इगारे धपीन इतनी बड़ी सेना क्या पर्याप्त नहीं है ?

[दोनों मिलकर अग्निविजय के धापुय घोर कबज सोलकर धवातधान रखते हैं ।]

घौर बकड़ाकर घुपना है) है ! कौन हो तुम यहाँ पर खिरी घौर सिपटी हुई ? इतनी देर से मैं बकड़ा रहा हूँ घौर तुम प्रतिमा के कानों से सुन रही हो । तुम्हें तुरन्त ही मेरा भ्रम मिटा देना वा । कौन हो भव तो उतर बो ।
 परराजिता—पहले ये द्वार बंद कीजिए ।
 अश्वविजय—क्यों ? भय कैसा ?

परराजिता—घापका परिषय वा चुकी हूँ मैं । मैं भी राजकुल की रमणी हूँ । पानी बात भीड़ के बीच में घनावृत्त नहीं कर सकती ।
 अश्वविजय—ठीक है, ऐसा हो होना चाहिए । (द्वार बन्द कर साँकन बढ़ा देता है) ।
 परराजिता—(सय्या के नीचे से घपने बरभानकार समातती हुई बाहर निकल उठ खड़ी होती है और तिर भीषा कर सेती है) परराजिता मेरा नाम है । पिना के साथ परराजित हो जाने पर मेरे नाम की साटी पहिमा जाती है । उपातिपी की घपना पर मुझे क्यों न सन्नेह हो ? कैसा नाम रख दिया

अश्वविजय—कोई बिजा न करो । तुम अविवाहित जान पड़ती हो ?
 परराजिता—(घौर भी तिर भीषा कर चुप रहती है) ।
 अश्वविजय—तुम्हें भाव होगा महाराज कहाँ गए ? उनके घनपुर का घौर ता बाई भी हमें नहीं दिताई दिया । तुम ही केमत घपेती कहाँ कैठे रहे मई ?

परराजिता—इन मेरा दुर्भाग्य ही समझिए महाराज । भोजन के प्रभाव के निता नो जब दुर्ग रथा की घन्मिय घापा छोड़ देनी पड़ी तो कल घापी घत्र में उन्होंने परिवार-सहित दुर्ग का परियाय कर देने का निरषय निवा ।
 अश्वविजय—कभी-कभी निजा हनारी बड़ी बैरिज हो जाती है ।

परराजिता—नहीं महाराज एनी ठामची घत्र में नीद ही किसे घानी है ? एक रसमी के घदारे सब भोग्य दुर्ग छोड़कर उतर गए । मैं स्वभाव से ही बड़ी अघरग्या हूँ । बकड़ा घपनी बारी को डालती रही । सब के सब उतर गए सब

बन्धविजय—(घम्पा पर जाता है) हाँ सेनापति जो कुछ है उस पर कोई संशय न करा जो नहीं है उसका आबोजन होना चाहिए ।

बहुता सेनापति—घर एक माबिका होती तो इन बात-गर्भों में प्राण प्रकटित हो जाते और घायको बिना प्रवास ही निद्रा या जाती ।

बन्धविजय—है-है-है ! सेनापति दिन मर के कर्म की भाँति संपीठ से धपिक समोड़क है ।

दुसरा सेनापति—परन्तु (काने में से अङ्ग फटाकर बन्धविजय के तिरहाने रख देता है) ।

बहुता सेनापति—दीपक में सब-कुछ है केवल बसासा अपेक्षित है । हम-मन्त्री उसे भेजते हैं । घाय बेसटके सोइए मद्दायक । घायकी सेवा में घुसने और पकड़े ब्रह्मी निबुवन है । बे द्वार बन्द कर द ?

दुसरा सेनापति—गद्दी काई आबरवकना नहीं है ।

बन्धविजय—हाँ एसी ही बात है । (बीनों सेनापति जाते हैं । बन्धविजय ताबपानी से सिर का मुकुट घोसकर घम्पा में ही एक घोर रख देता है । वह क्यों ही सोने लगता है स्वों ही एक ध्वनि कर चलका ध्यान लिख जाता है । बहु एनाएक उठ बँठता है) हं प्रपदन ही काई है ? कोन ही तुम ? (फिर कण केर ध्यान सपाकर लुनता है) निस्सदेह । मरे घतिरिक्त और भी कोई तुम द्वा प्रबोष्ट में लान ल रटे हो ? सामन क्यों नहीं घाते ? किसी भी बावना में तुम्हारा स्वागत है । निष हो ता बेगा कड़ा नहीं तो मैं अपने उठाटे हुए घायप फिर उठा लूँगा । (फिर कुछ प्रतीता कर लुनता है) घम्पा घाड़कर मुनि कर पड़ा होता है । बस में इपर उपर बैकता है) बरा के भीतर तो नहीं दान बकते बाहर बड़ी हा क्या ? (द्वार पर आकर बाएँ-बाएँ घाँकता है) नहीं ब्रह्मी ता बहुत दूर कर लटे है । उनको लान क्या बाम भी काना को घग्गभ है । (फिर भीतर घाता है) तो बरा यः ध्वनि देरे भीतर का ही जानरक है ? हँ ३ ! घन्धबिक धानि हमका एक कारण हा लरनी है और कभी-कभी मन्ध्र की कामना/ घामे घात कोन घडनी है । (एकएक फिर कुछ लुनकर) नहीं ' (बड़े निरबय के साथ घम्पा की बाहर उठाकर उत्तरे नीचे बैकना है

घोर बकराबत पुखता है) है। कौन हो तुम यहाँ पर बिग्री घोर विपटी हुई? इतनी देर से मैं बड़बड़ा रहा हूँ घोर तुम प्रतिमा के कानों से मुन रही हो। तुम्हें तुरन्त ही मेरा भ्रम मिटा देना वा। कौन हो धन तो जठर दो।

अपराजिता—पहल से डार डक बीजिए।
अग्रविजय—क्यों? मय कँसा?

अपराजिता—घायका परिचय वा चुकी हूँ मैं। मैं भी राजकुल की रमणी हूँ। अपना बात मीड़ क बीब मं पनावुत नहीं कर सकती।

अग्रविजय—ठीक है देता ही होना चाहिए। (डार बग्न कर ताकत बढ़ा बैठा है)।

अपराजिता—(काम्या के नीचे से अपना बरजालकार सामानतो टुई बाहर निकल उठ लड़ी होती है घोर सिर नीचा कर बैठी है) अपराजिता मेरा नाम है। पिता के साथ पण्डित हो जानै बर मेरे नाम की मारी महिमा जाती रही। जयानिमी की गणना पर मुझे क्यों न सन्देह हो? कैसा नाम रक्त दिया लहाने मेरा?

अग्रविजय—कोई बिडा न करो। तुम पबिबाहित आज पड़ती हो?

अपराजिता—(घोर भी सिर नीचा कर चुप रहनी है)।

अग्रविजय—तुम्हें जात हागा महाराज कहाँ गए? उनके घनपुर का घोर तो कोई भी हमें नहीं बिबाई दिया। तुम ही बेबल धनेसी कहाँ कैते रह गईं?

अपराजिता—इसे मेरा दुर्भाग्य ही समझिए महाराज। भाजन के घमाक से पिता को जब दुर्ग रता की पशिम घाघा छोड़ देनी पड़ी तो कल घाघी राठ में जग्होंने परिवार-सहित दुर्ग का परिवारा कर देने का निदचय किया। हजानिमी से ही धनेसी कहाँ घूट गईं।

अग्रविजय—जमी-जमी निडा हमारी बड़ी बैरिण हो जाती है।

अपराजिता—नहीं महाराज एसी घामनी राठ में भीड़ ही किम घाठी है? एक ररमी के महारे सब लीय दुर्ग छोड़कर जठर गए। मैं स्वभाव से ही बड़ी बयघस्ता हूँ। बराबर अपनी बारी को टालती रही। सब के सब जठर बर सब

भी मेरे साहस जमा नहीं हुआ। सबके प्रसन्न में प्रभावक वह रस्सी कई धरियों के बोझ से टूट गई तब जाकर मेरे असाह हुआ। फिर क्या होता ?

अन्वयित्रीय—इसके सिने तुम्हें कोई बिठा न होनी चाहिए। बोर दुब री कामिया में हमें बड़ा दिव्य प्रकाश प्राप्त हो जाता है। अपने मान धीर तुम ही तुम बहाँ सुगन्धित ही समझो। तुम्हारे पिता के साथ मेरी समुदा हो सकती है। तुम्हारे साथ उसके होने का कोई कारण नहीं दिखाई देता।

अपराजिता—दुर्व की बीमार से नीचे नृ बाने के सिने माता-पिता पुकारते ही रहे। जो रस्सी के सहारे नहीं उतर सभी छते नृ बाने की सक्ति कहाँ से मिलती ? ये पापी प्राण बड़े त्रिय हो गए !

अन्वयित्रीय—नहीं अपराजिते ऐसा न कहो। यह अप्रतिम रूप-शोभि मेकर बिना संसार का अनुभव किए धारमचात कोई धर्म नहीं रखता। तुम बोर पातक से बच पाईं तुमने ठीक ही किया जो दुर्व की बीमार को मत्स की फोर नहीं बनाया। फिर मरण क्या सबैब ही मानने से मिल जाता है ? अगर किसी हाथ पैर की विष्णुति हो जानी तो कैसे तुम्हारी यह मुकुमारता उठ धंकीनता के मार को जीवन भर डेलती रहती ? पिता के निर्णय में मोह या धीर तुम्हारे निरक्षय में मुझ बुद्धिवादिता दिखाई देती है। यद्यपि तुम्हारी धाम सभी कम्पी ही है।

अपराजिता—हूँ ३ हूँ ३ (कलक-कलक कर रोने लगती है)।

अन्वयित्रीय—तुम्हारे रोने का कोई भी तो कारण नहीं देखता। कदाचित माता-पिता का विद्रोह

अपराजिता—मैं धाम तक कभी धनसे एक क्षय के सिने भी बिगन नहीं हुई थी।

अन्वयित्रीय—एक ही वषा से प्रकृति की समुदा है। अपराजिते तब पराण पर की संशित हो। एक दिन सने-अम्बगिर्षों में क्या तुम्हारा बिम्बेद विवाह के हाथों से नहीं लिखा गया है ?—बड़ी कटोरता से पाषाण की मढ़ी रेखाओं में। इनसिने नृ रहो। अगर तुम सिधी धम्पायी धीर धातताई के हाथों में बंद पाईं होनी सभी दुब होता। जो भी कहोबी बड़ी तुम्हारे सिने प्रस्तून

विप-कथा

किया जायगा। कीम इस स्वर्गीय कथापना की जेसा कर सकेगा ?
[बाहर से कोई धीरे-धीरे द्वार खटकाता है। अपराजिता फिर सध्या के

वे विपन को झूतो है।]
अश्विजय—मही हवें क्यों किसी का मय हो ? (द्वार की घोर
जाता है)।

[अपराजिता एक कोने में खड़ी हो जाती है फिर कोई द्वार
खटकाता है।]
अश्विजय—कौन हो तुम ?

सैनिक—(बाहर से) महागज अपराजिता समा हो। बेमा हो चुकी। मैं
सध्या के दीपक के सिये प्रकाश लेकर आया हूँ। दोनों सेमापतियों ने आपके
सिये माया बताया है।

अश्विजय—उहरो प्रहरी इस लखीन घमिबुत दुर्ग में बड़े बिरवास के साथ
मुकन्दार होकर सो जाना बढिमानी नहीं है। मैं सोमठा हूँ उसे। (द्वार का
घोड़ा-सा माग खोलकर) माघो मुझ दे दो दीपक। (सैनिक के हाथ से दीपक
लेकर द्वार बंद देता है। दीपक लेकर अपराजिता की घोर बड़वा
है) तो।

अपराजिता—(उस दीपक की अपने दोनों हाथों में लेती है)।

अश्विजय—बन्ध ! धाज की यह हममई सध्या कितनी मजूर हो उठी !
मेरे घोर तुम्हारे प्रथम स्वयं के बीच में कहीं पवित्र जाति से यह दीपक
अश्विजय हो उठा ? यह दिव्य प्रतीक ! एक घोर घमि की साथी समठा
है घोर हमरी घोर मूर्ध की तेजस्विता ! क्यों न हव दोनों हमे प्रणाम करें।
(दीपक को हाथ छोड़ता है)।

अपराजिता—(बड़े संकोच से भाव से एक हाथ से अपना मुख बंद
हुतघ दीपक-मुख हाथ तिर के ऊपर उठा लेती है)।

अश्विजय—सीम्ये ! यह बड़ी मनोहारिणी मुझ तुमने प्रकट की है।
बाइता ही वा इती मूल्य की मापरी-बरी घमिवा में तुम निरगतर लड़ी
रहती—एक मुखर्ष प्रतिभा की मीति लेकिन वृत्ते ही स्वर्ग का यह स्वर्ग

शामबातिबों ने घमसार बसा रखा होता ।

पहला सेनापति—महाराज सभी मोन कहते हैं, उबर वाँब होमे की कोई संभावना हो नहीं है ।

दूतरा सेनापति—घीर भी एक प्रार्थना है महाराज घमसार एक ही स्थान पर रहता है । बड़ प्रकाश कई दूकड़ा में बिमकल हो गया । घीर के तब के बड़ बसने लम । (बोकी पर मारी की धोर्लमणि देलकर घमाराता है) ।

अग्रविजय—गाँब होना बहाँ पर घीर वाँब में होना कोई असुब । जाघो सो रहो तुप एक मुदूड़ दुई क भीतर मूरसिल हो । इसके मीदू प्राचीर रात में किसी के द्वारा पंडित नहीं हो सकते । औपसी पर जायकक घोर स्वामिबकल सेबक ही नहीं बटि का उपयोग करने वाले संनिबों को निबुनत करो । जाघो मुदू विद्याम करने को घीर तुम्हें भी तो उसी की घाबबयकला है ।

पहला सेनापति—महाराज के प्रकाश बराबर बस ही रहे हैं घीर हुमारे हम जाँठे हुए दुब की बिगा की घोर ही लो । हुपार मज में घमाराण ही सनेह की वृत्ति नहीं हुई । घाप बसकल बल सगे लो इसी निर्मम बर पनुब बाएँ ।

अग्रविजय—उनी छोटी-छोटी बाने घपने राजा की वृत्ति में पर बीन लो बह कर्ग में बकी बाव देग सनेना ? (उसे कुप घाव घाती है) हाँ ३, हमारी बह अनिरिचन मेना जिते हम गगा से उग पार के बिबिब में छोड़ घाए बें—क्या घारबर्द है बही मघाल सिकर हममे बिबने न घा रही हो ?

पहला सेनापति—महाराज हमारी मेना की दिता दूमगी भी ।

अग्रविजय—बिनी बाग्यबवा बह दिता बरल भी मचठी है । जाघो सेनापति हार करने से पहले ही रा देने बासा स्वकिन पराजय का निबन्धण देता है ।

दोनों सेनापति—महाराज अग्रविजय की जय हो !

अग्रविजय—जय के लिय बेबल स्वनि ही नहीं पागला भी बड़ होर्ल पबिठ है । हमलिये जाघो बरिधज में जिम बिजय को प्राण दिया है बिबाल से उठ बर बये रहा । घमाराण ही मुझे बाबा बहूबाने की बने काय नहीं ।

१२
[महाराज के अन्तर्गत में दोनों सेनापति एक दूसरे को सीर्व-मलि
दिसाते हैं।]

ब्रह्मरा सेनापति—घाय निश्चित होकर विधाम कीजिए। अब हम घायको
कष्ट न देंगे।

बहुसा सेनापति—पवन में कैसे के पत-सा क्रोमस हृदय सेकर हम घाय के
पानके दो ही सडों ने उममें अचन पर्वत की स्थिरता भर ही।

[दोनों सेनापति खले आते हैं। अग्रविजय सुरत ही डार बाह कर सांभल
जा घाय के पात जाता है।]

अग्रविजय—बाहर सामो अघराजिते यदि वह तुम्हारे पिता की सत्ता भी
है तो मुझ कोई मय नहीं है।

अघराजिता—(घाय के नीचे से बाहर निकलकर) क्यों मय क्यों नहीं है ?
अग्रविजय—दुर्ग के डार पर तुम्हें खडा कर क्यों न मझे सहज ही समि
प्राप्त हो जायगी ? तुम्हारे सीमंत में जोभी गई यह तिरुर की रेखा क्या अघि-
पन के हस्ताधारों में न बदल जायगी ? (अग्रय को घार में तिरुर लगाता है)।

अघराजिता—बहु किसकी सेना है ?

अग्रविजय—किसी की भी हो। जो दोनों पक्षों में उपेक्षित है इन
अन्य में केवल बड़ी घुल से रहना है अघराजिते। सामो अघन सीमंत के इन
दोनों पक्षों को मेरे निबट सामो। बिना पदारात के ठीक बीचो-बीच में इस
संदूर की रेखा को अशित करेगा। (उसके सीमंत की घोर अग्रय बढ़ाता है)।

अघराजिता—(अपना तिर अग्रविजय की तरफ बढ़ाते हुए) धीरे धीरे
..अनु।

अग्रविजय—हां अघराजिते धीरे धीरे कि दात महारा न हो अंर अघय
द्वारास की अचन मित्रा पुरी हो जाय। (अग्रय से उसके सीमंत में तिरुर की
सा सोच्छता है)।

अघराजिता—रेखा बिच मई ?

अग्रविजय—(अपनी अंदली से बात में तिरुर बढाकर) हां रेखा भी बिच
धीर ह्वारे अंदल की दघपुटित करन के लिय रतत वा बिगु भी अचक हो

गया । (क्यों ही अचरविता के कंधे पर हाथ रखना चाहता है फिर बाहर द्वार पर एक सैनिक अटकटाता है) ।

सैनिक—महाराज की जय हो ।

अचरविजय—(रोय के स्वर में) जय हो चुकी दुर्ग पर अचरविजय भी हो गया फिर क्या करना मचाते हैं ? (द्वार के पास जाता है) ।

सैनिक—महाराज भोजन तैयार हो गया मध्याह्नी में घायली राजा मारी है ।

अचरविजय—मैं पहले ही व्यवस्था कर चुका हूँ ।

सैनिक—तो मेला को मोक्षण की आज्ञा की जाय ।

अचरविजय—बहु स्वयं ही सभी तुम्हें मिल चुकी जायो घब मेला के बचाव प्रयास की आज्ञा मिलन को न घाना । (अचरविता के पास जाता है) देता तुमने ! आज मे लडके सब घननी का कारिना है हमारे प्रम विनय के बावजूद हो उठ !

अचरविता—घाय कोई उत्तर न रहे महाराज । वे सीट बाएँ को भी हों ।

अचरविजय—तुम मारी रात की जानी हो । तुम्हारा कुन-सा मुझ दिना धीर जागरण की बोहोटी व्यथा से कुम्हना गया है । (अचरविता का हाथ पकड़कर उसे छाया पर बिठा देता है । एकाएक बाहर फिर कितनी घने जाले मुनाई देती है) फिर कोई घाना है । वे नहीं मानेंगे । विष्णुन मानें में कौती तुम्हारे इन प्रबोध्य को अचरविजय है अचरविजय ?

अचरविता—घनपुर क जोगल में ही ठा घायली पाकपाला गया की गई है । इन्ही में बहु लडक बड़बड़ है ।

अचरविजय—अचरविजय । धीर नहीं कोई दुःख प्रबोध्य नहीं है मही हब रात बिना मरें—इन कोनाहल में दूर ?

अचरविता—क्यों नहीं ? दुर्ग के उतरी जाय में उधर मेरे रिता के कई करत है ।

अचरविजय—जलो वही लने ही बंद कर हब वही देखें ली नहीं ।

अपराजिता—बनिय ।

अग्रविजय—मोजन के दरगाह विजय के बस्ताब में घातक की प्रतिरिक्त बूट बीकर घोर भी घबिक ऊचक मकाबये । तब कंता राजा घोर कसी प्रजा ? कैसा स्वामी घोर कैसा सेबक ? बनो ।

[अपराजिता अपनी धीर्य-मलि पठाकर बहनती है]

अग्रविजय—टहरो मैं वेसता हूँ बाहर कोई है तो मही । (द्वार लोमकर बेघता है, फिर लोड घाता है) बनो बहरे बर भी कोई मही है सब घोजन बर टूट बदे है । बनो । (अपना मुकुट पहन सेता है) ।

[दोनों जाते हैं । अग्रविजय जाते समय द्वार बन्द कर जाता है । कुछ देर में फिर वे दोनों सेनापति बाहर से द्वार खटसटाते हैं ।]

पहला सेनापति—महाराज ! (अचानक द्वार बन्द जाता है, दोनों सेनापति उक्त बन्द के पीतर प्रवेग करते हैं) ।

दूसरा सेनापति—है ! कहीं गए महाराज ? वे तो यहाँ महे हैं ।

पहला सेनापति—मैंने क्या तुमसे झूठ कहा था ?

दूसरा सेनापति—फिर किसकी भी वह धीर्य-मलि ?

पहला सेनापति—यह पराजित राजा का घत-पुर है होपी किसी घंत-पुर बारिणी को ।

दूसरा सेनापति—धीर्य-मलि हापी किसी घंत-पुर-बारिणी को । लेकिन कहीं है वह ? किसी का एक बरान भी तो ईके मही मिलता !

पहला सेनापति—कोई बबय यह मर् है कहीं !

दूसरा सेनापति—ईये बहते हो ?

पहला सेनापति—बह धीर्य-मलि । बहते भी यह यहाँ बर ?

दूसरा सेनापति—मही ।

पहला सेनापति—फिर घनके होने का क्या बबे है ?

दूसरा सेनापति—जुल ममक में मही घाता ।

पहला सेनापति—महाराज के बरों द्वार बन्द कर दिए ?

दूसरा सेनापति—बरो दिए ?

पहुला सेनापति—इस वध में रहने वाली रमणी की शीर्ष-मलि पुराने के सिधे नहीं ।

दूसरा सेनापति—स्पष्ट क्यों नहीं कहते ?

पहुला सेनापति—महाराज को प्रसन्न नहीं कोई मिल गई है ।

दूसरा सेनापति—प्रसन्नयक मलय है ।

पहुला सेनापति—इस वध में तुमने पहले किसी की सखीं सुनी थीं बाब तो करो ।

दूसरा सेनापति—हाँ याद तो घाटी है ।

पहुला सेनापति—तुम्हारा अनुमान ठीक ही है। दीव-द्वि उमरी लक्ष्मी है । इमलिये बसो भान बसो । महाराज किसी घाबरायक क म मे ही बड़ी पद है । उनक धायद वीर कवच यही रक्त है । घाटी ही होग । बसो ।

दूसरा सेनापति—बसो सेबिन हम कहती हुईं वध की घाघना का क्या करें ?

पहुला सेनापति—ओ पी डीगा देगा जायदा ।

[दोनों का जाना । कुछ देर बाद दोनों घबराविला घाटी है। घोर डार काव कर जल्दी जल्दी एक ताड़पत्र पर कुछ लिखकर उसे चढ़ती है। फिर उसे अपनी कंबुकी के भीतर रख लेती है । वह वपौत के पित्रे के पास जाती है। घोर क्योंही पित्रे का डार तोलना चाहती थी। बाहरी डार पर पद-पद होती है । घबराविला हींकर उसे लोभ देती है । बस-बिबय घाता है ।]

बगडिबय—यही वध मुझ त्रिय है क्योंकि यह तुम्हारा है । वध में प्रहरी को सावधान कर घाया है। इपर स किसी को न जाने दे । (बीला को रिखा कर) यद भीगा तुम्हारी ही है ?

घबराविला—हाँ महाराज ।

बगडिबय—मुझूँ तो । तुम्हारे स्वर के प्रभाव से यह गति मुबानिज ही उठनी ।

घबराविला—नहीं महाराज लोभ क्या कहेंगे ?

बगडिबय—तुम्हारा मीठ मुन लैने पर फिर किसी का माहम न रहेगा

इपर धारण का ।

अपराधिता—पात्र धमा कर वीजिए, मेरी धाँसें भीड़ से मारी हो उठी ।

अन्धविश्रय—अच्छा तो बापों । कैंठा मद्भूत यह हमारा घोर तुम्हारा भित्तन है । यह एक दिन का परिचय नहीं अम-अमान्तों का सम्बन्ध है । जिस तरह जगन सूर्य की परिचय करता रहता है जी चाहता है वे भी ऐसे ही निरालर तुम्हारे प्रवृत्तियाँ करता रहें । जीवन की सम्मत्ता नाममात्र इसी एक कर्म में निर्भर हो जायें । (उसको परिष्कृत करनी धारण्य करता है । दोनों सेनापति फिर बाहर से धाकर द्वार टटपटपते हैं । अन्धविश्रय अन्ध होकर अपना सङ्घ उठाता है) धीन है ?

अन्ध सेनापति—(बाहर ही से) महाराज के प्रकाश के पुंज बराबर इगा दुर्ग की घोर बह बस धा रहे ह । ये हमारे सङ्घिक नहीं ह क्योंकि इयन मयामों से जा संकेत किए, उन्हें पहन कर नहीं मीटाया गया । हमन मेरियो में भी उन्हें मूल संवाद दिए वे उन्हें समझकर कोई उत्तर नहीं दे सके ।

अन्धविश्रय—(विना द्वार धोसे ही भीतर से) तो क्या बिमद गया तुम्हारा ?

अन्ध सेनापति—उनक मधुकर हमारी धार बहने के उमाह की देलकर तो महा जान पन्ता है वे कड़ी ग ठाठ सहायता पाकर हमारे ऊपर धाक्रमण करन धा रहे हैं ।

अन्धविश्रय—मान दी । इन धपरे में तुम्हारे बने इरपोको की परीधा होनी उचित है ।

दुतरा सेनापति—अपर रात ही में उन्होंने धाक्रमण कर दिया तो ?

अन्धविश्रय—क्या तुम्हारी सेना घोबर घोर मिट्टी की रचना है ? तुम्हारे बने बापों में गगे बापुरों की बोई बात सुनने के तिये तपार नहीं ह । हटो बधि रगने हो तो उसका उपयोग करो नहीं तो मेरे बाग धामे में अच्छा है कि मन्त्र-गण तुम्हारी मयाजि हो जाय । (दुध देर द्वार पर धम लपाकर पुनगा है) बने गए ! (हँसता है) हा-हा ! इन बिचारों की मामूम नहीं है—घोर इन धाक्रमण करन बातों का भी नहीं कि तबि तत्र हूँ भित्त गया है ।

(अपराजिता को छोड़ी बलवृत्ता है) हाँ अपराजिते ! मेरे निष्कट धापो कि ह्मारे पित्तन में दो बिबुह-प्रिय राम्यो के एधि-बाध सम पर भङ्कृत हो उठें । (क्योंही उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी धीर कौशले लपता है त्योंही वेपथ्य में घट्ट खरों में भरियो बजने लगती हैं ; लतिकों का कोलाहल सुनाई देता है । बहु अपराजिता का हाथ छोड़कर उतर प्याल देता है) ।

अपराजिता—(अग्रविजय के सामग आकर) यह क्या हो रहा है ?

अग्रविजय—यह लम्पिपाठ भरी है ।

अपराजिता—क्या धर्म है इसका ?

अग्रविजय—मेरा प्रत्येक शेषक इस मुनकर जहाँ भी जित वसा में हूँ गुपुत ही भरी बजने के प्याल पर बसा जाता है बड़ी इन भेरी का धर्म है । इनको पञ्जा मनु-बट है । तापो मरा बचन पहना हो मुझे ।

अपराजिता—(अग्रविजय का हाथ पकड़कर) सेफिन महाराज—

अग्रविजय—ही ही हुरपखरी ! (हार का शृंता घोषता है) ।

अपराजिता—प्रियतम !

अग्रविजय—क्या बसो नहीं ?

अपराजिता—आप यभी तक बिलुप्त सिधंय य । लम्पिपाठ भरी के बस में आ भी हो जायें यों ? यह किसको छात्रा है ?

अग्रविजय—ही दिगी । मैं ही उम छात्रा का जनक हूँ । इनतिये मैं उतके ब मन मे मनन भी हूँ । लम निध्याक करा । (उत्ते टाप्या पर मुक्ता देता है) नहीं मैं बही बही जाऊगा । कोई आवायकता नहीं रही ।

[शान्तों सेनापति हार सातकर भोठर धा माने हैं । अपराजिता अपनी लीठ किराकर पूर तक सिता है ।]

बलवृत्ता सेनापति—महापुत्र तानु न पागजय धारम्भ कर दिवा है । बिम्बु (सिद्धि होकर टाप्या की धीर देलता है) ।

अग्रविजय—(बीच के छात्रन में) तुम बिना छात्रा के मेरे बस में क्यों बने थाय ?

बलवृत्ता सेनापति—गप्यीव नवक के नवप दिष्टाचार मने काठे है ।

बाइबिलिय—ऐसा कहना तुम्हारी धृष्टिपटा की पगकाष्ठा है।

भूतरा सेनापति—दाहियतब की पुकार के लिय मर्यादा के मान के लिय राष्ट्र-पम की रदा न सिय कल्प्य के ऐसे भीषण साक्षान क समय—घरा यह क्या कर रहे हैं ?

बाइबिलिय—क्या कर रहा हैं ?

पहला सेनापति—कर रहे हैं रक्त के दोष में रम की बीजा घड के दौरान में प्रम की सीला मृत्यु क प्रोषण में मन्मथ की पूजा । रदा यह मगो की बीघार में आपने कर्णों की टाप्या नहीं बिछाई है ?

बाइबिलिय—क्या बकते हो ? तुम मेरे लीकर हो ।

पहला सेनापति—हम सब ममुप्यता के लीकर हैं । यदि हम राष्ट्र के सेवक नहीं हैं उग्रही आपदा के समय अपने इन्द्रिय-मुग के समथक हैं तो बामी विभासी धीर पनु है । मानवता के नाम के कलंक धरठी-माता के भार है । हमारी धीरठा हमारा डोंक हमारा घड हमारा स्वाधं धीर हमारी बिजय हुसरे के सधंरक ना इरक है ।

भूतरा सेनापति—राजन् लसा ही है, इतीनिये तम कोई उतर नहीं दे सकते ।

बाइबिलिय—(भाषा भीषा करता हुआ) अपराध हो क्या मुमने ? क्या पनराध हो क्या ?

पहला सेनापति—आप सेवकों के नरमुग्धों पर धपनी पधु-कामता से चलते हैं । रण की गद बाल रात्रि धीर धाप कानों में ठेक मरकर चुप बंटे हैं ? पिरकार है ! वह सन्निपात भेरी बज उठी ! उनक साक्षान पर मव जने जीवन को हुपनी पर रगकर उनके नीचे धा गन हो गए । धाप क्यों हीं धाप ? उतर बो ।

बाइबिलिय—बह मेरी पुकार है । उन धाजा का गप्टा मैं हूँ । पुकारने वाला नहीं नहीं जाता सबको दिग्गबबामी धाल धपने को नहीं देगती ।

भूतरा सेनापति—पिरकार है जमे सप्टा को को नंततम के धान से धरनी धाप-उषाना बभ्यता है ।

अन्धबिजय—वह सब तुम्हारा भ्रम है ।

ब्रह्मा सेनापति—मह भ्रम है ? (संकेत से सम्भा में लौड़ी हुई अपराजिता की दिखाता है) यह इतनी स्थूल छाती ! इतने भ्रम कहा जायगा ? जलो सेनापति ऐसे बोले तर्क में हमें बहुकृत्य समझ की आहृति देने से कोई लाभ न होया ।

ब्रह्मा सेनापति—बिस्कार है ! बू ।

बहुला सेनापति—बिस्कार है ! बू ।

[दोनों धरती पर झूक गयी मुखा व्यक्त कर जैसे बसो है]

अन्धबिजय—(जमातक पीड़ा का अनुभव कर दोनों हाथों से अपना माथा ढोभता है, फिर अपने लक्ष्य की ओर वृष्टि कर अपराजिता की बैसता है) अमाजिमा माटी !

अपराजिता—(इस लम्बोवन से धरराकर धम्या में उठ बैठती है) तुमने यह क्या कहा ?

अन्धबिजय—बुद्ध नहीं ।

अपराजिता धरत्य बार्द महग घाघाम है तम्हारा । (धम्या से उठकर अन्धबिजय का हाथ पकड़ लेती है) ।

[अन्धबिजय अपना श्मूय उठा लेता है]

अपराजिता—तुमने यह शङ्कन क्या उठा लिया ? धीर तुम्हारी धोखों में मुझ दिमा रंजना हुई शिया^२ देने गया ?

अन्धबिजय—दगा मुझ ? व सब हुआ लयों के सब हा उठ । धोड़ ! कदा पाया ग व मर मर पर बक कर मरू तिरगु । कर बते पाग ! के धीरे बीडा ! जीवग के इस पाट अचमान का बिभी प्रकार स्मृति के बटल पर के गुरुक कर भा मिटा नहीं सकूँगा । कौन उजवा मंड यान हो ? क्या लक्ष्य में से जाती धीर बापुदय है ? (बुद्ध केर तट विचार करता है) नहीं ! एया नहीं है । मैं जाती नहीं है ! मैं बापुदय भी नहीं है ! मैं धारककठा पढ़ने पर जानी प्रियतम शङ्क की कनि भी के सरता है ।

अपराजिता—(धरराकर अन्धबिजय के घले में दोनों हाथ बैठती है)

तुमने क्या कहा वह ?

अश्वविजय—तम बीरापता हो तुम्हें कदापि अपने स्वामी के माने की बाधा बनना धोमा नहीं देता । तुम्हें तो अच्छा जसाह बड़ाने में सर्वस्व देने के लिये भी तैयार रहना चाहिए ।

अपराजिता—शिवतम । प्राय ।

अश्वविजय—हां प्रेम अमरत्व है । (उसके दोनों हाथ बिछकाकर) नहीं यह बेरी ही ध्वनि है । मुझे भी अथर्वें बंधना होया ।

अपराजिता—ठहरो न । मुझे भी अतने दो अपने साथ । तुमने कहा था—

अश्वविजय—नहीं ! (उसके पैर में चरम भोंक देता है) ।

अपराजिता—(घरती पर गिरती हुई) ओ ड ड । पापी ! हमारै !

अश्वविजय—तुम्हारी गालो भी मुझे खुत्तो की बर्बा है पर उनकी अरुणा अमानक बयबाठ । अपराजिते तुम्हें एक ही निगा को कुछ पहियो में अमरत्व प्यार दिया बही संसार को अमर हो उठ्य धीर नहीं तुम्हारे बध का अरुण बन गया । तुम्हारे जीवित रहने पर मुझे फिर फिर एसा ही मोह करना पड़ता धीर उन्हें बार-बार मुझे अश्विन करने के अक्षर मिसते रहते । इसीलिये ! मुमुक्षि एमीमिय ! अमरय ही तुम्हारा अपराधी है । (उसके पैर से चरम बाहर निकालकर उसके हाथ में देता है) इस अरुण से मेरा अस्वक चक्र को अथ तुम्हारी बारी है । मैं हूँमते हुए प्राय दे दुना । (अपराजिता के शिपिल हाथों से चरम नीचे गिर पड़ता है । अश्वविजय उसकी कंधकी के बाहर निकले हुए उस ताड़-वज्र को देता है) है ! यह बीगा ताड़ वज्र है ? (उसकी तामब धीरे-धीरे फिर दोनों तामपति बही प्रवेश करते हैं) इनमें कुछ निगा है । चढ़ूँ ता । (पड़ता है) — योजना अस्वक हो गई ! मैंने अश्वविजय को अरुने जाण मैं बंधा लिया । एक-ना बटे में मैं इने अमरत्व कर ही शर्मनी । तुम के दुष्ट द्वार पर तीन बार विषाग बजाना । मैं ठमे घोल टूपी— तुम्हारी विषकथा ।" विष-कथा ! है ! विषकथा ? (अपराजिता टटपटाकर प्राण त्याग देती है) अपराजिता ! अत बनी ! एनी अश्वनी ! इनकी मोहमर्द ! सब भी ता इनक विष मेरे अक्षर करनी धीर सीधते है । (

धीरे उसकी धीरे बूँह बढ़ाता है धीरे एहसे सेनापति की छाँसी मुसकर खोदता है धीरे पलकी तरफ़ देखता है) कीन सेनापति ? मैं बिप का प्राण हो गया था । बड़ बिप क्या है ? कितनी छसनाभरी ! बड़ टपका रहस्य ! (ताक-पत्र की दिखाता है) धीरे बड़ी तो टापट पिछाया हुआ कर्पोल है जिसके गले में बँधकर यह लक्ष्मण मन् के पास पहुँच जाता । क्या तुमने डी मेरे प्राण बचाए ? (फिर लक्ष्मणपत्र लेरी बजती है) फिर बज उठी यह सन्निपाठ मेरी ! बाँधनेवाला सबसे पहिले बंध—यही बिपान की सार्थकता है धीरे बड़ी उठकी ध्वनि ! (तलवार सेनाभ, कपड उठा बहनते हुए बाहर को खोदता है) ।

दोनों सेनापति—(उरलात में धरका) महाराज चन्द्रविजय की मय ! (दोनों चन्द्रविजय का धमतरण करते हैं) ।

[परदा गिरता है]

पात्र

सेठ लंबोदर

मानिसी

जलक्री. कर्षी

प्राणुन

उतवा मोकर

बदामी ज्योतिषीजी हकीमजी प्राकृतिक चिकित्सक

डॉक्टर और मोन्दा

देन—सेठ लंबोदर के सोमै का बमरा

बाल—एक राठ और उछकी मुबइ

डाकता है पर जब पटो होने से समूचा हाथ बाहर निकल जाता है) पूरे पीर फगी तकबीर । (माय पर हाथ मारता है) मामिनी जी इय सी बेना नहीं चाहती । (शेठ सोलकर घुंकी पर टॉप बैठा है) कम्बल उबार के धामेबाजे । (पुस्ता होकर घुंता ताकता है) धज मेरी कुकाम का रास्ता ही मुमाग बैठ है । (हथंसी में पुंता मारकर) मामिना कर दूंगा जी । मामिना (बिलर की ओर बढ़कर कबल लीचणा है धखानक सिर पर हाथ रसकर मामुम करता है कि धमी टोपी नहीं उतारी है । टोपी से लोहा हेंक टैता है । सटकर कंक्षन घौड़ हुबका गुङ्गुङ्गना धारकन करता है) पुङ्क पुङ्क [भोतर बर्तंग मसन को धाबाज सेटजी हुबका गुङ्गुङ्गते लो जाते हैं ।

मामिनी कामज की एक बुझिया लकर धाली है ।]
 मामिनी—है ! इनकी मुङ्गुडी तो सिल क पापर की तरफ चुप हो गई । लो यए क्या ? (पीरे से धाबाज बैकर) धरे धो ध्यमन । एक सीटे में पानी मरकर डे जाना । हा मनबान् ! हाय पीके न होठे न लारी कानी लेंयमी में भी तो नाई धम्पा नहीं है । मैं दली इण्डा को मेकर धरी हो काईवी पर लण्डें क्या ? टनका रिज जायपा चीज कादमा नर बिचारी मामिनी देवी को फगी कोटी भी न मिलेगी ।

कागुन—(पीटी से हाथ बाँधने हुए जाता है) धीर यह गरीब कागुन भी हुमेमा धपनी तनखाह के लिये लसठा ही रह जायपा ।
 मामिनी—नयों रे कितने महीने की तनखाह काकी है लैरी ? सेटजी लो बहते न लब बबाक है ।

कागुन—तम्हारे मुलाए मे कमी मुस नहीं सफटा । कागुन भी धब बहुत रिम से गहर में रहने के सबब इट से जगारा होखियार हो जाता है । जमे पप के बीचे पड़ा धरते धीर बिजली की रोगनी में बर्तन बसते बरधों बीठ गए हैं । [लबीरर धीर मुनकर जाय बफ्टा है धीर उटकर मामिनी की धरकारता है । कागुन सिलक जाता है ।]
 लबीरर—धरो बाख बज चुके हैं ! कुछ चुप होग भी है ? धारी बुनिया लो गई नर लैरी नडाई धमी तक नहीं उतरी है । मुझे लोकर लक बनाने के

निय स्वरुप दिन पड़ा हुआ है, पर मुझ कम्बख्त को तो सुबह पाँच बज डूकान गोलनी है।

मासिनी—तो एहवाज किस पर है ? बिना सोचे प्रमत्त ही क्या फसा बैठे हो। उगी डूकान में “सविधा” धीरे “श्रीगणेशाय नमः” लिखने के निय इतनाम कर रही थी। तमगा की बात तो उगी में बसाई।

संबोहर—(अस्ती से गरम पड़कर) धण्डा धण्डा एगो बात है, तक टिक है।

मासिनी—(मुंह बनाकर नाराज हो जाती है) क्या भी तो समाप्त नहीं।

संबोहर—(पठकर उठे मनाने भूमि पर पड़ा जाता है) क्यों ? नाराज हो गई ? (असहाय हाथ पकड़ना चाहता है)।

मासिनी—(दूर हट जाती है) रहने दो अपनी बनुराई। मैं नहीं बोलती एघों स।

संबोहर—(फिर पलके मुँह को तरफ जाता है) यों ही हँसते-धसते नाराज हो जाती हूँ मसा यह भी कोई बात है। (कुछ देर हाथ जोड़ अज्ञान बर, बसे मनाता है) क्या वह नहीं मानती तो क्या भी बठ जाता है। धण्डा तो नहीं बोलोगी ? (मासिनी मुँह फिर खुप रहती है) वगैरे बात ? मासिनी की धरने पर मैं कोई जपह ही नहीं ? मासिनी ! तुम्हें बगान में हल्ला जी ने मिसरी इगरी धपिक नहीं मिलाई जितनी ज्यादा मिसरे—नास मिसरे ! हो क्या फिर ? नहीं बोलोगी ? (मासिनी नहीं बोलती। संबोहर देर पटक बँधा धीड़कर सो जाता है। टुकड़े में से एक-दो दम छीपता है) धर्मा नहीं घाता) बोपगे बुझ गए ! (नती दूर कर मँह टक सो जाता है)।

मासिनी—(धैरुता दिखाकर) नाराज हूँ मैं तो क्या ? धनकारों बिसी धीरे बो। मासिनी के गुरने के निय भी धरपर एजिन बाहिए।

कामून—(द्वार में से धीरे-धीरे मँह निकालकर घाता है) सेटरी तो क्या क्या ?

मासिनी—मैं क्या जानूँ ? बसतमीज ! बड़ा ताजवाह है नू। मैंने तुम्हें क्या करने को कहा था ?

झड़कर चारपाई बिछा है ।

पद्मगुप्त—मगर यह कंबल जमीन पर कूद कैसे गया ? (चारपाई बिछाता है) ।

सबोदर—भूष रह । बहुत बातें बनापना तो जुबान धीर समझवाह दोनों काट सी जाएंगी । (सम्बालू मुड़मुड़काता है) ।

मागिनी—(भीतर से पुकारती है) पद्मगुप्त ! घो पद्मगुप्त !

सबोदर—बहु मुन मालकिन तुम्हें बुला रही है । जा जना जा ।

[पद्मगुप्त जाता है]

सबोदर—मुड़ब मुड़ब मुड़ब ! बाह बा ! विवाह के पहलू की प्रीति धीर घोब जाने से पहलू का हुकला—इन दोनों का जबाब दुनिया में कहीं नहीं मिलता । मुड़ब मुड़ब—हू ५५ ! (गुड़गुड़ी छोड़कर उठता है । सीटे के पास जाता है । उसके ऊपर से टोपी उठते हुए) आते बस्त सिर नवा धीर जमल आते समय गिर डका होना चाहिए एसा बेद में लिखा है । इस पर उदा बाप-बापों ने धमक किया है । सबोदर भी इसकी वृत्त यों ही न छोड़ देना । (बापी पहनकर लोहा उठाता है । फिर जमीन में बैठकर हुकले की जलो बंदू में डका मुड़मुड़काने लगता है फिर बेद में स्त्रीपर डालकर जाता जाता है) ।

[पद्मगुप्त जाता है]

पद्मगुप्त—हुकले की राग तक बन गए हूँगे । (बिलम उठाकर हम लीकता है घुमा छोड़कर) है है अभी तो बहुत कुछ है । (फिर हम लीकता है) ।

मागिनी—(घाकर उठकर एक घण जमाती है जिससे उसकी डोपी जमीन पर गिर पड़ती है) बंदू मारो ! जब देखो अभी घण जगलता रहता है । यह कैसा २५ है ना—

पद्मगुप्त—गुफान डेल का डमर ।

मागिनी—(एक घण धीर जमाकर) मैंने तुम्हें बाव के लिये दूध लाने की कहा था ।

पद्मगुप्त—(डोरी उठाकर बहनते हुए सीने के खर में) तो मैंने कब जानै मे डमकार किया ? मेडनी की घोड़ी धीर घेंदोछा डेल घाया ना । इपर डक

रसमरी बिलम को देखकर धमस जाय पड़ा। धमस में कई हजार पोड़ों की टाकट है एना अक्षरवारबार्मों में छाया है।

मालिनी—घाय सग तेरे धमस के सिर में।

कामुन—यह भी क्या भड है बिना घाय के घुर्पा कहाँ? एक रम घीर ओष लेने बो सरफार। जहाँ बानीस वहाँ पपबानीस। (फिर पीने लगता है)।

मालिनी—मैं हरपिज तुम्ह पर न पीने दूँगी। (कम्मूब के हाथ से बिलम पीन हुएके पर रल बैठो है) देख लूने कितनी मर्तबा तमायू न पीने की कसमें आई है।

कामुन—धजी सरकार यह कभी का एट गया होता धपर एकपेच न होता तो।

मालिनी—पेच कीनता?

कामुन—यही कि धपर सैठजी के लिये दिन में दस लठे न भरना पड़ता तो। मेरी बिलम के मुरपटाम बड़ी है। के धपर बल बो इसे छोड़ दें तो सेबक दसो बड़ी मे इसकी परछाद भो न लापिगा।

मालिनी—यह तमायू बो बीमापी टीक नहो जान पड़तो। मवान का हूर कोना इनके कोपके-कूड से घाबार है। पागसाल मेरा नया लिहाफ घीर इस पास मेरी रोगमी साड़ी दोनों इसी की बचीलन जसे। के इसी बो मंह लपाए टूने से बकन पर भोजन नहो करते घीर लू इसी की टोह में नगम छोड़-छोड़कर न देता है। पर नही सहा जा सक्ता। (मुट्टी बाँपकर हाथ ऊँचा करती है) मैं पपने घर में इगरी जद सोरकर रहूँगी।

कामुन—बस गोर बुकी! यह धारबामबेस है, इसकी बड़ बगी हो ली घाय उने सोनन की मेहनत भी करें। बाउ ऐसी है, लंबोन्ट जी की हर नय घीर रोम रोम में तमायू का घुर्पा बम गया है—धब बुय नही हो सक्ता देखी की! इनबिय यह सेबक बो धारके बरगों में बिनयी करता है कि इसे एक रम घीर सीब लेने बीजिए।

मालिनी—जा बिलम बहते दूब सा।

[अमृत निपट हो झूड़ी पर से सेठजी की बोली धीरे धंगोपा उतार लेता है ।]

मालिनी—मैं नहीं जानती यह बरबूवार क्यों तुम लोगों को इतना प्याप क्योंकर हो गया ?

अमृत—उसमें कुछ बूझनी जाती है ।

मालिनी—बस ! बस !

[दोनों जाते हैं । नेपथ्य में सेठजी का कराहना सुनाई देता है]

सबोदर—(भीतर से) प्रो १ १, प्रो १ १ । (सेठजी जमीन पर बैठते-बैठते घाते हैं धीरे घपना घेत बघाते हैं मानो कई दिन से बीमार हों) घरे बापरे । सब साज हो गया । झुन की न आने बिलगी नबिया बह गई । हाथ-धैर मोटा-साटा—सबके सब साज । बड़ी मुश्किल से हाथ-धैर धो सका । एक-एक मिन्ट में धीरे से ताकत निकलती जमी जा रही है । फिर बकराठा है । धाँजिर इमका बापन क्या है ? पट्टे के धार टिपनड़ तीन छोटा मुनी का रस धीरे बोझा-सा जमी के पत्तों की बबिया धीरे क्या मीने साया रात छो ? (काड़ा होता है) है । फिर घूमता है । (फिर बँट जाता है) मनी कुछ नहीं कर सकती बकर किली मे कोई बादू कर दिया । नहीं बस सबता । यह पड़ोसियों की धाँख का नाँटा सबोदर घाज क दिन धब नहीं बप सकता । (बापपाई पर सेट जाता है) नीम के पेड़-तले के बजरम बमी महाराज । मुधि लीमिए जो हुकम दाने सेवा करुया । (धरे फासूम कर) उरु । छरी-वाँटे बान-वने बिधिधियों के टक धीरे भी न जाने क्या-नवा चुन रहे हैं । (कंबल छोड़ लेता है) ।

अमृत—(बाय सेकर घाता है) है नरवार ! फिर लो बप क्या ?

सबोदर—कर दिया । कर दिया । घरे बाप रे ! (करबट बदलता है) ।

अमृत—बिसने कर दिया ?

सबोदर—क्या धाँजू ? बसा सबता है मालिनी मे लो नहीं कर दिया कुछ ? बट बस नाराज हो गई बी । लाने में कुछ ? वू ! वू ! नहीं नहीं अमृत मैं घाने लार बघ सेता है ।

कागुन—क्या कह रहे हैं आप यह ?

लंबोहर—मेरा मतलब है घमट दूधमे में कोई चीज परोसी जाती है तो यह जाना भी जरूर हो जाता है । मगिन खाना जिसाने के बाद के माराज हुई ।

कागुन—(बंजल घोल सेठजी की झरल देखकर) क्या हूँ क्या आपकी यह ? एवाएक सबम ही बंजल गई आपकी ? अभी जबस जाते बरन तो आप बन-बंसे थे !

लंबोहर—घरे मान-मान घन गन की मगिनी नदियों का महाममद !
घोह नहीं कहा जाता !

कागुन—यह गून का महाममून ! कहीं मरवार ? आप किसी निनेया या खपन की कहानी तो नहीं कह रहे ह ?

लंबोहर—घरे बिनकुल धापो-देगा मरुबार्द ! यह गून भी किनी घोर का नहीं इसी बिषार संबाहर का ।

कागुन—है । घागवा ही गून ! (बंजल हो चाय का पिताम भूमि पर रन लंबोहर की घोर बढ़ता है) कहीं ? बिपर ?

लंबोहर—घरे देट में । (देट को बखाना है) ।

कागुन—देट में क्या ?

लंबोहर— देट में ही तो ।

कागुन—क्या किसी पुरान बजहार न छुरा ता नहीं भीक दिबा ? (बंजल हटाकर उसके बैठ को देखता है) घाब गनरनाक ता नहीं है मरुवार !

लंबोहर—घरे छुरा बाकू कुल भी नहीं घाय भीतर में हा गया जान बढ़ता है । घोह ! मरु-मरा घब तो नहीं बच सकता ।

कागुन—घमो मरुवार ! अभी भी बबरा जाने को क्या जान है ? बाईं घबिब निधी या कर्धी रोगी घटक गई है घावर देट में । (चाय का पिताम उठाकर) मीजिए यह गरबामरन चाय मड़क मीजिए । इसमे बहु रोटी गरम बढ़कर घरने-घाड भीने को मरुक आयी ।

लंबोहर—घरे रोटी बोटी कुल भी नहीं घटकी । घरी तो बनों कून इन घीर का यह क्या ।

कापुन—फिर नहीं खून । धापको बचासीर तो नहीं ?

लंबोदर—बुध रह । क्या गंदा नाम लिया ? बचासीर हमारे पिताजी की छी पुस्तो में से एक को भी नहीं हुई ।

कापुन—तो क्या हुआ है । चाय मुकसाम तो कमी करती ही नहीं । इसकी पत्नी-पत्नी में गुन भरे हुए हैं ठीकी हुई या रही है । बीमारियों की प्राप्ति बट-लियम को तो चाय यों ही पचसठ कर बेती है । लीजिए, पी लीजिए, अभी साबित हो जायगा । (लंबोदर के मना करते रहने पर भी उसके घोठों तक चाय का बिलास बढ़ा ही देता है) ।

लंबोदर—(हाथ मारकर चाय का बिलास दूर चेंक देता है) उम्हू ! यबे ! तुम्हे क्या हुआ गया ? मैं तो मर रहा हूँ धीर तुम्हे हँसी सुन्नी है । (दर्द से भीसता है) मरा मरा यो चाय रे बढ़ा दर्द है । मालिनी ! धरे तुम क्या इस तरह कठी ही रहोगी ?

कापुन—तो क्या मामला समीत है ?

लंबोदर—धीर नहीं तो क्या ? फिर मैं दर्द हो गया धीर बुलार भी बढ़ गया । नाड़ी बंद चल बहा रही मह तो लड़क रही है । धरे, खन ही को छेकर तो इस जाक के पुनले में बरामात है वह जब सब-का-सब निकसकर वह मयाँ तब बिट्टो क मिया घोर क्या बाकी रह जायगा ? घोड़ ? दर्द ! दर्द ! पीडा ! पीडा !

कापुन—क्या बर्द फिर ?

लंबोदर—धरे तो भी क ता है बुध कर बस्तो ही लेकिन ऐसा जान पड़ना है मेरी बंसी में बिना बार् मारी छव किए मह दर्द इन बर के बाहर जाने वाला नहीं है ।

कापुन—माली धापका मतलब है डॉक्टर को बसाकर पेट में घोंतेघब कराना पस्यी है ।

लंबोदर—धरे रे ! क्या बरता है मह ?

कापुन—फिर किसने जाकर बहूँ ?

लंबोदर—धरे बहूँ बर की मालबिन को ता बना । मैं धरने को संवार

हैं धीर बह धमो तक धपना मस्सा जारी रखे हुए है। (धीर से पुकारकर) मातिनी ! मैं भरता हूँ धीर तुम्हारे शोध के लिए क्या बूनरी बड़ी न धायमी ?

मातिनी—(घाकर बड़ी बिता के साथ) है ! तम्हे यह एकएक क्या हो गया ?

लंबोदर—उफ़ बर्द ! बर्द ! हर नम हर नाड़ी में बर्द ! हर हड्डी हर बसली में बर्द ! बास बास में दर—तिस तिस में बर्दनी ! (छटपटाता है)

धीर तुम मंह फुसाए बैठी हो ?

मातिनी—नहीं महीं कोन कहता है ? क्यों रै फागन ?

धामुन—नहीं तरकार ! धगर एसा होता तो धाय बनाकर क्या मजली ?

मातिनी—रान तो धाय बिसकुल धच्छे ये ।

लंबोदर—गुबहू तब धच्छा ही बा । बहू तो धभी धभी-धभी ! गुन-गन खून ! लाल-लाल-लाल ! एक बम लाल समुदर ! मातिनी बेबी धब नहीं बब सवता । (हाथ-धर धेंकता है) ।

मातिनी—धंघा माल समुदर ? बुद्ध माफ़-माफ़ तो कहो म ?

धामुन—धत्री इनबा बतलब मैं नमझता हूँ । धभी धभी बिधा जाने से बहमे ये बिसकुल बुरस्त धीर धीरध ये । बहू इन्हें न जाने बिलना गुन गिरा कि इनको एलो हासत हो गई ।

मातिनी—गुन बिरने का कोई कारण नहीं ।

लंबोदर—हो मातिनी कोई मइपद धीर न तुपन गिना धीर न धैने धाई ।

मातिनी—किर क्या बात है मजनी रै धीर ?

धामुन—बदधान् ही धाने ।

मातिनी—बूबान में तो बिनी के बुद्ध नहीं गिमा दिया इन्हें ?

धामुन—बै क्या जानूँ ?

लंबोदर—धरे धरी जान जा रही है धीर तुम धर-नरे बरग ही करते रहोने क्या ?

मातिनी—जा धामुन जा बूनरी मे बिनी रबिन्धर को बुला जा ।

लंबोदर—मरे नहीं नहीं डॉक्टर को मत बुला ।

मालिनी—ठी क्या फिर किसी हस्तबाई को बलाऊँ ?

लंबोदर—जरा बीरे से कुछ ठीक-ठीक बोलो मालिनी जो बात ठीक हो बहो करो ।

मालिनी—बताते क्यों नहीं फिर ठीक बात क्या है ?

लंबोदर—इसो बनी की लोक पर तो बंधनी रहते हैं । वे हमारे पिताजी के समय से हमारे मुक्त-बुद्ध के भाषी हैं । (फिर पीड़ा व्यक्त करता है) प्रोह ! यव ! बर्द ! घोर मालिनी बंधनी बह भल घावमी है । पास ही है—दिन म घान बकत भी बुझाघानी तो भी कोई पीस नहीं लने । हाँ दबा के बाम ? उम कौन छोड़ता है ?

मालिनी—मैं क्या बेल रहा है या प्यवन बना सा ।

[कायुन जाता है मालिनी सेठजी की परिचर्या में लवती है]

[परदा गिरकर उल्टा है]

तीसरा दृश्य

[बही कमरा उसी दिन सुबह जरा देर बाद । लंबोदर उसी तरह बीमार पड़ा है । मालिनी उसके पर दबा रही है ।]

लंबोदर—ह मयकान् बही सहा जाठा जब तो किसी तरह बरदाएत नहीं जाता मालिनी । यह दिन जनम के पागा वा व्याय पुकाना पड़ा ?

[प्यवन क फिर पर बरल रलकर दबा घोरते हुए बंधनी वा घान]

कायुन—वा १२१ वा गरवार । घोर दबा भी मीरी नापडी बर घटती हुई लनी घा रही है । जब घापके बम होन में क्या सक है ?

बंधनी—हाँ इतने बड़ा दि लंबोदर जी के पेट में बर्द है । मुझे ताब जाने में जरा भी देर नहीं मरी कि बनी गुगना बाम् वा योना फिर मुझमें लना होया । मेरे पास दबा उबार न थी । समय की बकत क निवे एना किया । दबा भी पत्र मई रागना भी बट गया । (कायुन के तिर न बरल उतार लना है) ।

लंबोदर—इपा ती बहून बड़ी की घापने मैदिन दम बहू ने बड़ी ललय

बीमारी बता दी आपकी ।

आपुन—पेट में दर्द नहीं था फिर घोर क्या कहना था ?

लंबोहर—कहना था कि पेट से सूत गिरा है । बीच में बीमारी छिपाने से आपरा ?

बेचारी—एक ही बात है सेठजी ।

लंबोहर—एक ही बात नहीं वह बापु का मोला नहीं है ।

बेचारी—घड़ी बही है दूमरा हो नहीं सकता । मैं बहुत दिनों में इसे पहचानना हूँ । (आल से दबा निवाज उसकी घोसी बनाकर) सीजिज इस गोली को गरम पानी के साथ निपान सीजिज ।

लंबोहर—नहीं ! नहीं !

बेचारी—मैं कहना हूँ जरा ही रुकवी नहीं है । बड़ी स्वारिष्ट । बड़ी बड़ेदार । घबरा हो जाने पर भी आप इमे माना पसन्द करेंगे ।

लंबोहर—घड़ी बचारी मुझ गिरा है सूत घोर दबा देत है बापु के मोले की ।

बेचारी—कितनी बार सूत गिरा ?

लंबोहर—एक ही बार मैं निबू-निबोड़ में पड़ हुए निबू की तरह निबूड़कर रह गया हूँ घाव कहन है कितनी बार ?

बेचारी—जरा मारी लो दिगाइए । (माड़ी हाथ में लेकर) बात बही है सेठजी ! बड़ में बही बापु का मोला है । जरा पेट लो दिगारण । (हाथ से पेट को दबाकर) मोला कियर गया ? इधर ? 'इधर ? नहीं बहीं नहीं । (बुछ लोबकर) ठीक है ! एक तरफ में विन घोर दूमरी घोर में कफ की मारी के घारम में टकरा जाने के सबब बीच में पड़े बिचारे उन बापु के मोले में पंचर हो गया ।

आपुन—बिचारे बापु के मोले में ? लुबड़-लुबड़ उगना बदा तूरान पड़ा कर दिया उनन हमारे घर में घाव उमे बिचारा कहने है !

बेचारी—बीच में बही मोले । उमी बापु के मोले के पूने में लुहूँ वह तन गिरा है । यही दबा काब करेदी मकर गरम पानी के बरने डंटा पानी

संबोहर—घरे नहीं नहीं इन्डिटर को मत बुला ।

मालिनी—तो क्या फिर किसी हज्जार्ड को बलाऊँ ?

संबोहर—बरा भीरे से कुछ टोफ-ठीफ बोलो मालिनी जी बात ठीक हो बही करो ।

मालिनी—बताते क्या बही फिर ठीक बात क्या है ?

संबोहर—इसी यही की मोक पर तो बंछनी रहते हैं । वे हमारे पिताजी के समय से हमार मुन्-बुब के मानी हैं । (फिर पीड़ा चाहिर करता है) घोड़ ! दर्द ! दर्द ! घीर मालिनी बंछनी बड़ मने घाबरी है । पाल ही है—दिन में घाउ बकन भी बुलाघोनी तो भी कोई पीत नही लभे । हाँ क्या के काम ? उमे कीन छोड़ना है ?

मालिनी—सँद क्या हैस रहा है या फगन बसा सा ।

[फगुन जगता है मालिनी सेठजी को परिचर्या में लगती है]

[परवा फिरकर उठता है]

तीसरा दृश्य

[बही कमरा उसी दिन सुबह करे देर बाव । संबोहर उसी तरह बीमार पड़ा है । मालिनी उसके बर दबा रही है ।]

संबोहर—हे भगवान् बही महा गला घब ता बिनी तरह बादारत नही होगा मालिनी । यह दिन जनम क बना वा ध्यात्र बुचाना गवा ?

[फगन के गिर बर मरल एगएर दबा घोटते हुए बंछनी वा घाम]

फगुन—घा ९^{वा}वा मरदार ! घीर बबा भी घीर मालिनी बर घटती हुई बनी घा रही है । घब घामके बय होने से क्या तक है ?

बंछनी—हाँ इसन रह टि मगारत जी के पैट में दर्द है । मुझे ताड़ जाने में जरा भी देर नहीं मनी कि बही बुगना बाप वा घोला फिर मुजबदे लया होना । मेरे पाल दबा लभार न भी । समय भी बकत के निचे एका दिया । बबा भी घूट गई रागना घी बर मया । (फगुन के तिर मे मरल जतार सेता है) ।

संबोहर—हुवा तो बहून बरी की घामने मैजिन इन बड़ू मे बही बकन

सुनी लीस

बीमारी बना ही घातको ।

कामधु—वेद में दर्द नहीं था फिर बीर बना कहना था ?

संभोहर—बहुना था कि वेद में तू न दिया है । वेद के बन्नी जिने से कायरा ?

बीमारी—एक ही बात है मेठरा ।

संभोहर—एक ही बात नहीं बहू बाबु का मोना नहीं है ।

बीमारी—धमी बही है कुदरा ही नहीं कुदरा । मैं बाबु जिने से नू पहचानता है । (आत्म से रहा निरात्म उन्नी दोनी बन्नाहर) बन्नी एक मोनी को मरन पाती के साथ निदान भासित ।

संभोहर—नहीं ! नहीं !

बीमारी—मैं कहता है मरन ही बरकी नहीं है । बही मरनिय । बही बहारा । बाबु ही बाबु बर का बाबु इसे मरना बन्द करे ।

संभोहर—बीमारी बीमारी मुझ दिया है बाबु ही रहा का ? बाबु के बोले ही ।

बीमारी—बिजनी बार मृत दिया ?

संभोहर—एक ही बार में निहू-निर्बाह में दर का निहू का मुझ निहूदर रू दया है पार बहने है बिनी बार ?

बीमारी—मरन पाती का बिबाण । (भासि मरन में मेहर) मरन बही है मरनी ! मरन में मरन बाबु का दोना है । मरन मरन निबाण । (मरन में वेद की बन्नाहर) बीमारी बिबर दया ? दया ?...मरन ? नहीं बही नहीं । (मुझ मोचकर) धीक है । एक मरन में निहू बीर कुदरी मरन में बहू का मरनी के मरन में दकरा मरने के मरन बीमारी में मरु बिबाण मरन मरन के मरन में मरन ही दया ।

बाबु—बिबाणे बाबु के मरने में ? मुझ-मुझ मरन बहा मरन बहा बर दिया मरने मरने मरन में मरन मरने बिबाण बहने है ।

बीमारी—बीमारी में नहीं बीमारी । बीमारी बाबु के मरने के मरने में मुझ मरन दिया है । बही दया बाबु बीमारी मरन मरन मरनी के मरने मरन मरनी

सेना होया ।

कामल—घमी साठा हूँ । (बस्ता है) ।

संबोहर—बैद्यजी यह कड़-पत्ती हीन-नमक हूरें-सावले से कुछ न होया मेरे निये तो कोई बुराता रसायन निकालिए । (बर्द प्रकट कर) हाय ! यैमा रे !

नातिनी—बैद्यजी मेरी साज तुम्हारे हाथ है ।

बैद्यजी—पबराने की काई बात नहीं है घमी तबीयत ठीक हुई जाती है ।

संबोहर—कैसे बैद्यजी कैसे ?

बैद्यजी—विश्वास है विश्वास है घापका मरू पर तमी तो घापने मुझे बुलाया है विश्वास मेरी दवा पर भी होना चाहिए तमी तो काम बचाना । (पोली बनाना है) ।

कामल—(एक बिलास में बानी सेकर घाता है) सीजिए ।

बैद्यजी—(पोली बैठे हुए) सीजिए इमे निगलिए । दवा गळे के भीष छतरते ही घपना बिजली का घमर बियाएगी ।

संबोहर—(बोली सेकर पानी से नियसता है । दवा कड़वी होने के कारण मुँह बनाना है) घबक्क ! घाप तो बहते से बड़ी घापनेबार है । वह तो बड़ी कड़वी है ।

बैद्यजी—उपदेस धीर दवा कड़वी होने पर भी नियसने योग्य होते हैं । दैलिए घनी घापकी बीड़ा उन्नीस होती है ।

संबोहर—हूँ हूँ ! (बर्द से बिजलाता है) मरा । मरा । बैद्यजी यह ता इतकीस होने लगी । क्या शिमा दिया घापने ? कमानपोटा तो नहीं ?

बैद्यजी—मैठजी एभदब पबरा पाते हैं घाप तो बच्चों की तरह । बीमारी घापको कुछ नहीं है । (नबज हाथ में सेकर) सब निकल गई । घराब गून को वा बह बह गया सिर्फ कमजोरी बाकी है । बह भी घमी लूमन्तर होती है ।

संबोहर—कमजोरी नहीं ? घमी तो बट ही हो रहा है ।

बैद्यजी—यह घामूली गोपी नहीं है । नाक क रास्ते साईं घाप तो कंध के ऊपर के तमान रोबों का नाय कर है धीर घपरा मुँह के मार्ग से निगपी बाव

तो कंधे के नीचे की तमाम बीमारियाँ रफ़ा । धत्री घायको मुख समगी बड़ी घोर की । (मालिनी से) जाइए घाय तब तक बरूहा जलाना ।

संबोहर—जहाँ नहीं मालिनी वहीं न जाना । मेरी तबीयत ख़बरा रही है ।

बेछत्री—धत्री मेठत्री यह मामूनी गोभी नहीं है । तोप में भर दी जाय तो संका को फूँक दे । धत्री ठीक हो जायेंगे घाय । बार गोभी घौर दे जाटा हूँ । बंटे घट-भर में पहली घाघ के साथ दूबरी रही वे तीमरी दूध के घोर बीपी पी के साथ घाइए । मुझे बराबर खबर देते रहें । एक दूमरे बीमार का देखने जाना है धत्री इन्ही से जस्टी है । (मालिनी को पोलियाँ दे खरल ययल में खबाकर जाना) ।

आपुन—मामसा मड़बड बेगकर द ता निमक गल ।

संबोहर—(फिर हाथ-बर पटकता है) धरे मँया रे ! मरा रे ! धरे आपुन किसी घोर को बसा रे !

आपुन—किये बुलाऊ ?

संबोहर—किसी घच्छ को बुला जिसके साथ अपना मन निमता हो ।

[आपन का जाना । पोबी-बबा बयल में दबाए ज्योतिषीजी का घाना]

ज्योतिषीजी—जय हो ! जीन रहो जयमान ! (मेठत्री को देख खीचता है) हे ! यह क्या ? घायका बिहग तो साम भर क बामार का सा हो गया । क्या हुआ ? कम ही ता घायकी भता-बंवा देखा था मेन ।

संबोहर—बर्ब का पम ज्योतिषीजी । धरे मरा रे ! बडा बप्ट है ।

मालिनी—दुख पोबी गता खानिए, पटु-बंइमी ता बिचारिए, हमें बीन-ता तनीचन मन यया ?

ज्योतिषीजी—बग मानने की बात नहीं है मेठानी जी । मेन विपुल सुर्व-बहुल पर मेठत्री मे क्हा था कि पंच पन्धर लख पाय्य घोर नख रन्वों की एक गुना जरा खुच्छी हुई डरी मे उगार बा धरने धरीर की । न जाने क्या समये बे । मेने दुबारा फिर नहीं कहा एनमे । मुक तुम्हारे बीन का मोम नहीं । (बेठकर पोबी-बबा लोन बेनिल से दुख निपतता है) ।

मेता होना ।

कापून—घभी लाटा हूँ । (जाता है) ।

लंबोदर—बैद्यजी यह बड़-भती हीन-नमक हर्-भाषिसे से कुछ न होना मेरे लिये तो कोई पुराना रसायन निकालिए । (बर्त प्रकट कर) हाव ! मँबा रे !

मालिनी—बैद्यजी मेरी लाज तुम्हारे हाव है ।

बैद्यजी—बबराने की कोई बात नहीं है घभी तबीयत ठीक हुई जाती है ।

लंबोदर—कैसे बैद्यजी बँसे ?

बैद्यजी—बिश्वास से बिश्वास है घापका मऊ पर ठभी तो घापने मुझे बुलाया है बिश्वास मेरी दवा पर भी होता बाहिए ठभी तो काय बचेबा । (गोली बगस्ता है) ।

कापून—(एक गिलास में पानी लेकर आता है) लीजिए ।

बैद्यजी—(गोली देते हुए) लीजिए इमे निबलिए । दवा मले के नीचे छतरते ही घपना बिजली का असर बिसाएमी ।

लंबोदर—(गोली लेकर पानी से निपसता है । दवा कड़वी होने के कारण मुँह बगस्ता है) उबकक ! घाप तो कहते थे बड़ी जायनेदार है ! यह तो बड़ी कड़वी है ।

बैद्यजी—उपदेघ और दवा कड़वी होने पर भी निपसने योग्य होते हैं । बिखिए घभी घापकी पीड़ा घन्नीघ होती है ।

लंबोदर—हूँ हूँ ! (बर्त से बिस्लाता है) मरा ! मरा ! बैद्यजी यह तो हककीस होने लगी । क्या बिस्ता दिया घापने ? बमासपोटा तो नहीं ?

बैद्यजी—सेठजी एकदम बबरा बाठे हैं घाप तो बच्चों की तरह । बीमारी घापको कुछ नहीं है । (नबज हाव में लेकर) सब निकल गई । बराब कृत जो बा यह बह मया सिर्फ कजजोरी बाकी है । यह भी घभी घूनन्तर होती है ।

लंबोदर—कजजोरी नहीं ? घभी तो बर ही हो रहा है ।

बैद्यजी—यह मानूमी गोली नहीं है । नाक के रास्ते लाईं जाय तो कंधे के ऊपर के तमाम रोगों का नाघ कर दे घौर घपर मुँह के मार्ग से निबली जाव

तो कर्ष के नीचे की तयाम बीमारियाँ बढा ! धभी घापको मुक्त मयवी बड़ी बोर की । (मानिनो से) जाइए घाप तक तक बरहा जतागत ।

लंबोदर—नही नही मानिनो नही न जाना । मेरी लंबीयन गबरा रही है ।

बैठजी—धत्री सेठजी यह मामूली गोली नहीं है । तोप व भर दी जाय तो संका को फँक दे । धभी ठोक हो जायेंग घाप । बार गोपी धीर दे जाठा है । पटे बटे भर में पहुँची घाप के साथ दूमरी रही ने तीसरी घुप के धीर बोधी की के साथ छाड़ए । मरु बराबर छबर देते रहें । एक दूमरे बीमार का देताने जाना है धभी इनी से जल्दी है । (मानिनो को गोलीयाँ दे छारल वगल में बहाकर जाना) ।

आपुन—मामता गड़बड़ देगकर ये तो लिनक गए ।

लंबोदर—(किर हाप-नैर पटकता है) धरे मँया रे । मरा रे ! धरे आपुन किसी धीर को बसा रे !

आपुन—किये बुताऊँ ?

लंबोदर—किमो सच्छे को बुसा जिराके माय धपना मन भिमता हा ।

[आपन का जाना । पोबी-बजा बगल में बहाए ज्योतिषीजी का घागा]

ज्योतिषीजी—जय हो ! जीने रहो बजमान ! (सेठजी को देख खौटता है) है ! यह क्या ? घापका थहरा तो घाम भर के बीमार का हा हो गया । क्या हुआ ? कम ही ता घापकी भना-बँवा देखा का मन ।

लंबोदर—कर्म का कम ज्योतिषीजी । धरे मरा रे ! बडा बप्ट है ।

मानिनो—गुप पोको रता सोनिए, छह-बँडनी तो बिचारिए, हमें बीम-ता सनीयर लव मया ?

ज्योतिषीजी—बुरा मानन की बात नहीं है मेठानी जी । मैंन बिपके सुर्प बहए पर सेठजी ने कहा था कि पंच पत्मक सप्ट धाय्य धीर नव रत्नों की एक गुता बरत भुङ्गी हुई इंडी से उगार हो धपने मरीर की । न जाने क्या सभमे बे । मैंने दुबारा फिर नही कहा इनने । मुझे गुम्हारे बीमे का जोख नहीं । (बैठकर पोबी-बजा सोल बलिन से गुप लिसता है) ।

संबोहर—(रीने के स्वर में) ज्योतिषीजी घाय ली समझते हैं, न-बाने कौसी माया इसके घर में छिपी पड़ी है। नवरत्न कहां से जाता है ?

ज्योतिषीजी—ग्रहों को हाथ बाँध पत्ते बढा देते नवरत्नों की जगह एक-एक पैसा रख देते।

संबोहर—ऐसा हो सकता है क्या ?

ज्योतिषीजी—घादमी के घर उफने पर क्या नहीं हो सकता ?

संबोहर—तो सबसे सूरज-ग्रहण पर सब कुछ करेगा—लेकिन घणसा सूरज ग्रहण कब होगा ? वह मसीब में है भी या नहीं ? (छटपटाता है) घरे मार डाला रे !

भालिनी—ज्योतिषीजी बस्ती बठाए कुस्र।

ज्योतिषीजी—(सँभलियों पर जस्वी-जस्वी निगता है कमरे में बौकते हुए) गीन मेव मिसुन कर्क का सूरज धीरे सेठजी की बगराधि घाठ मते चार डूनी घाठ चार उसके ठीक है हासिस होगा एक। इतबार सोमवार, मंगल—मंगल की बह्र वार्ता तिरछी मजर है घायके ऊपर !

संबोहर—मैने क्या बिबाड़ा है उनका ? जो इतना खून ?

ज्योतिषीजी—सब बखत की बात है। खून न बहैना तो धीरे क्या होता ? मंसल का रंग माम है वे साल बीज ही पसन्द करत हैं।

संबोहर—मरा रे ! मरा रे !

भालिनी—क्या करें छिड ?

ज्योतिषीजी—उनकी पुजा कर उन्हें प्रसन्न करो। किसी बूढ़ भाचरव के ब्राह्मण से मंसल का सवा साख बप कराधो। पुजा में लाल ही लाल बीज रखो धीरे बसिरा में लाल ही लाल दो। (पोथी-पत्रा समेट लेता है)।

संबोहर—लाल किसके घर से लाऊँ ?

ज्योतिषीजी—पेठजी जरा ली रोली छपा देना रुपए या मोट में।

भालिनी—लेकिन घायने सख्खा ब्राह्मण हयें धीरे कौन मिभगा ?

ज्योतिषीजी—मैं किसके घर से फुरसत लाऊँ ? लाट साहब की जम्-कौसी घाई है उनके मिण, देर के टिकार को जाने का मुहूर्त ईदना है। वह

तो मैं इतनी देर तक तुम्हारी दूकान बन्द रहल मारे किन्तु के इधर जाता जाया ।
 मालिनी—(हाथ जोड़ती है) हमारी लाज तुम्हारे हाथ है महाराज । हम
 पर क्या करो ।

संबोहर—जो कहाम वही लाम बलिगा दूया हम मगस की मरे पर से
 निकास हो महाराज ।

उपोतिपीत्री—घबड़ी बात है । म किछी को मत्र दूया । (जान सपता है) ।
 संबोहर—घरे बे-चार पैम बयान के तो द ।

मालिनी—सुनारी तो कटी है ।

संबोहर—जय उवादे-उवादे दे दे ।

मालिनी—(चारबाई के नीचे पानदान में से कुछ सुपारी घोर चार पीते
 उपोतिपीत्री को देती है) यह सीजिए बरष ।

[उपोतिपीत्री वेल सेकर खाते हैं । कामुन चरों तक सटकता हुआ डीमी
 में का लबादा पहन गिर पर शोरतिया डोपी पहन एक हकीमजी को बाहर
 जाता है ।]

कामुन—(बाहर को) बगटके जले घाड़ण हकीम साहब ।

[मालिनी घुपट काड़ एक तरफ को हो जाती है]

संबोहर—घब बीम घाफन घाई ? (हकीमजी घाते हैं) बरता हूँ हकीम
 माहब बका बीजिए । नेन में बरें है सन गिरा ।

हकीमजी—जयज विनाएण । (बयज देसता है) डरारत तो बहुत है नहीं ।
 जीम बाहर निकालो । (संबोहर जीम बाहर निकालता है) ? ' कोई सल्ल
 बाबिज बीज तो नहीं गा मो पी ?

संबोहर—(रोते हुए) नहीं हकीमजी ।

हकीमजी—दूकान में कोई भारी बोझ तो नहीं उठायो का ?

संबोहर—बोझ ? (कुछ धार कर) हाँ उठायो पा । बहु ता पंचा ही
 टूटा । कभी नीहट नाम रहना है कभी नहीं ।

हकीमजी—किम भीज का बोझ पा ?

संबोहर—जयक ही बोरी ।

हकीमजी—सेठजी यही बात है। गई की बोरी होती तो कुछ न होता। वह गमकहरामी उसी ने की। जब घायल बोरी खिचकाई तब सारा बोझ उसी के खरिप घायलके दिम पर पड़ा वहाँ पर कोई खून की नाली टूट गई। इत हीमारी का नाम फिरोजुममिबोर है। सिकन्दर जब ईराज को प्यह कर हिन्दुस्तान में आया तब उसे रास्ते में यही बीमारी हो गई थी। बिलकी पुड़िया ने उन्हें पकड़ा कर दिया था वन्हीं की बीमार होने का इस नाबीज को प्यह क्यों न हो ?

लंबोदर—बिमा सो हकीम साहब बड़ी पुड़िया मुझे भी बख्य बो।

हकीमजी—घमी पुड़िया क्या बिलकुल भवसीर है। मरे को बिता ने घायलके तो घमी सभी भसामत छड़ी धीर कुच्छ हं।

लंबोदर—जब तक जिडेगा घायलका शरीर रहूँगा।

हकीमजी—जानते हो नृस्वा किसका था ?

लंबोदर—जिसका भी हो हकीम साहब मझे तो इस दर से छटकारा पाने से मठमठ है।

हकीमजी—आप लुकमान हकीम का। मूस से लबादे में वह बोबी के बहूँ बता गया। बाबी मेरे बूबुनों में मे किसी को बे गया। बड़ी जब मेरे पास है। मेरे घर जमें तो मैं बिता सफटा हूँ।

लंबोदर—मझ मरने की भी ताकत नहीं। पुड़िया निकालिए।

हकीमजी—उसे जेब में रखकर बीमारों को देखने जाता हूँ। सी बीमारियों की एक रजा है। सो ये चार पुड़िया है। दो दो घंटे में एक-एक फीक लेता। एक घमी सो। (पुड़िया देता है। लंबोदर एक जती बखत फीक लेता है) एक धीर मरीज को देखने जाता है। कुछ देर में फिर घाडेगा। (जाता है)।

बालिनी—(घुंघट दूर कर लंबोदर के पास आकर) क्यों कुछ पतर दिखाया रजा है ?

लंबोदर—क्या बघाई ? यह तो बघता ही जा रहा है।

बालिनी—क्या कर्क फिर ?

आमुन—डॉक्टर साहब को क्या लाई ?

लंबोदर—एक दूसरे डॉक्टर साहब है। उनकी बोली बहुत छोटी है धीर

बिम भी बरनी नहीं है । का पहन उन्हें बना सा । बड़ी मजबूत ही तो है वे ।

मासिनी—घोर इन डॉक्टर साहब को भी बुसा लागता ।

कामुन—शेनों की सीबिए, जान है ता बहान है । (जाता है) ।

मासिनी—बका तबीयत कैमी है ?

संबोदर—बस यही एर सवाल पूछ रही हा तुम ?

मासिनी—तुम भी तो दूसरा जबाब नहीं दे रहे हा ।

संबोदर—बका कसे मासिनी ?

मासिनी—इसकीम साहब की बया से कुछ खबर हा हुआ ?

संबोदर—हूँ हूँ ! नहीं ! बिमबुल नहीं ! बरा भी नहीं !

मासिनी—बट भर में दूसरी पुढ़िया घा मेने पर बकर खया हाबा ।

संबोदर—घरे मर रे ! बटे भर तक दूसरी पुढ़िया बाबने के लिए कैसे

जिया रहुगा ?

[बाहर कोई द्वार खटखटाता है]

प्राकृतिक चिकित्सक—(बाहर से) सेठनी ! सेठनी !

संबोदर—मा जाइए ।

प्राकृतिक चिकित्सक—(घाकर) घाय ही हूँ क्या बीमार ? क्या हा क्या ?

संबोदर—हाँ बीमार तो बकर मे ही हूँ लेकिन क्या घाय डॉक्टर है ?

प्राकृतिक चिकित्सक—हाँ घायका नीकर बुमाने घाय हा ।

संबोदर—लेकिन मुझ तक होना है । घाय कैसे डॉक्टर है ? घायके घने

को मनी वहाँ है बर्नाबीटर वहाँ है घोर वहाँ है बकाघो का बकल ?

प्राकृतिक चिकित्सक—मे सब बाहरी लड़क बड़क बियाने घोर इतिहास है । म घायालयन कर जोर देता हूँ । मे संबुरोर्नब हूँ—प्राकृतिक चिकित्सक । बकाघो को बोकारिबों को सगक समझता हूँ ।

संबोदर—फिर कैसे घण्टा करते हैं घाय बीमार को ?

प्राकृतिक चिकित्सक—प्राकृतिक विद्याके मे—बिट्टी कनी हुवा रोपनी घुन घोर दिवमो मे ।

संबोदर—बहुन घण्टा ! (मासिनी से) मासिनी जरा इनके बँडने के लिए

छोड़िए । भीतर की साँस में यह भावना भरिए कि घाप धरंत के प्रमूठ-बंदार में से प्रमूठ का सोपन कर रहे हैं । और बाहर की साँस में लिकास बालिए अपने शरीर का तमाम बहुर धीर मन का सारा वाप !

लंबोबर—एसा ही कस्तेगा मामिनी तुम याद बिसाठी जाना घणर धूल बाऊँ तो ।

प्राकृतिक चिकित्सक—नमस्ते । (जाता है) ।

मामिनी—क्यों कँधी तबीयत है ?

लंबोबर—(हाथ-पैर फटकते हुए) मर गया ! रे पैया ! मर गया ! तुममें तो घमी याद बिसा बी । ओ बाप रे !

[मामिनी डॉक्टर को घाले देख घूँघट कानू बैठी है]

डॉक्टर—(घाले हुए) बंज सेट, क्या बाट है ? बीमार हो गया ?

[फागुन डॉक्टर का बंज सिर पर लाने घाला है और स्तूज पर रख बैठा है ।]

लंबोबर—हाँ हजूर गविष में जँसा हूँ ।

डॉक्टर—तुम घमी टमारा मंडिघ को मया बया । मंह कोलो । (लंबोबर मुँह घोलता है । डॉक्टर घड़ी देखते हुए उसके मुँह में चर्ममीटर लपटा है । पैठ को हाथ से बचाता है) यह टो पका माकूम बेटा है ।

लंबोबर—(मुँह में चर्ममीटर बाले सिर हिमाता है) हूँ ! हूँ !

डॉक्टर—(घायुन से) टम बटाघो ।

फायुन—(घपना भी देखकर) हाँ हजूर, इस बक्त तो यह बहुत फूज गया ।

लंबोबर—(मामिनी की तरफ इशारा करता है) ठँ ३ !

मामिनी—(हाथ के इशारे से नहीं बतानी है) ।

[डॉक्टर उसके मुँह से चर्ममीटर निकालकर उसे बाँधता है]

लंबोबर—नहीं हजूर, फूसा नहीं है बाँध रबघा है ।

डॉक्टर—क्या बाँध रबघा है ?

लंबोबर—मिट्टी ।

डॉक्टर—हा ! हा ! हा ! मिट्टी बाँध कर क्या होया ? तो फिर इसकी

लबोबर—जैसी घापकी मर्जी हो ।

डॉक्टर—(उसको बिठाकर कागुन से उसकी बाँह पकड़वा इन्स्पेक्शन देता है) देखो अगर तबीयत ठीक नहीं हुई तो हमें फौरन खबर देना । पफ्फत करोमे ठो पान का सटरा है । यह बड़ी बीमारी है, इसमें घाटा या मिट्टी के प्लास्टर बाँध देने से काम नहीं चलेगा ।

लबोबर—नहीं डाक्टर साहब यह कागुन मानूम नहीं किसीको बुला लाया । अब से ऐसा काम हरमिष नहीं होगा घाप सात्तिरबमा रबिए ।

डॉक्टर—घब्रि बाट है अब हम बाटा है ! (बेग बन्द कर उसे उठा खला जाता है) ।

मानिमी—(बुझ्ट खोस जुझ हो लबोबर के पास आती है) धनवान् को बन्धबाव है बड़े मान से मिले डॉक्टर साहब ।

कागुन—जिनके बर्चन से ही बीमारी पर बमाकर उड़ गई ।

लबोबर—अरे कहाँ भागी ? वह तो घोर मी थिपक गई । उसने तो घोर मी वर कैला विए । (भिर वर छटपटाता है) मरता हूँ अब बकर मरता हूँ घोर बुलाघो रे किसी घन्ले को बुलाघो ।

मानिमी—तुमने तो अमी-अमी डॉक्टर से कहा था कि तबीयत बिलकुल ठीक हो गई ।

लबोबर—घोर क्या करता फिर ? उसने भी तो छुरी-झंभी तिकाब ली थी । (कराहता है) हाव रे ! घम्ना री ! बध्ना रे ! कहाँ हो ?

[घोम्भाची आते हैं]

घोम्भाची—बर्भो सेठजी अब हो । अमी गुना मीने बीमार पड़ गए अब से ?

लबोबर—अभी घाब ही अमी । शहर के सभी बीच डॉक्टर, इकोम इलाज कर हार गए ।

घोम्भाची—उन्हें घाटा ही क्या है सिफ वंसा खसोटमा जानते हैं । क्या थिकावत है ?

लबोबर—क्या बहूँ घापसे ? कहते-बहते हार गया । घोर फिर बहूँके भी तो बुझ नहीं हुआ । माप अपनी प्रकस से ही बाग मीविए ।

घोम्पाजी—घाँसो में तो कुछ भूगरा ही रय झलक रहा है ।
 घाँसिनी—घोम्पाजी इनके प्राण बचा बा । क्या करें कुछ समझ नहीं
 पड़ता । यहाँ खून गिर गया ।

घोम्पाजी—(सेठजी को देख-मानकर) घंजी यह राय होगा तो दबा के
 बल का होगा । यह तो छन मून या जादू इन लीनो में से एक है । मेठजी घाय
 डरे ली नहीं से कमी ?

संबोहर—हर बख्त डरता ही रहता हूँ भगवान् मे ।

घोम्पाजी—भगवान् की शान नहीं करता । (आगुन से) जा एक भाइ लो
 से भा । मैं घभी हमे मया हू बा ।

[आगुन जाता है]

घाँसिनी—हाँ घोम्पाजी बीमारी होनी लो मिर-बर्द होला बखार होगा ।
 बिस्तर मे लठ नहीं कि पस्त पड़ गए ।

[आगुन लाड़ लेकर जाता है]

घोम्पाजी—(आगुन के हाथ से भाइ लेकर लिर से पर तक मेठजी को
 भड़कते हुए) मनो विपत्तनामकारी निगी महादेव जी के पुनर घोर मेमनाप :
 पड़ बिमुनजी सग बजावे कमसासन में बिरमा सृष्टि रबावे देइ बहावे । घाय
 मून भाय बाब । घुरजी लो सहाई हनुमानजी लो पुहाईं मूज बबर लो
 पबाही । घों मम (भाइ लो कमीन बर पहरता है) घो क ! (भाइ में बँक
 बारकर एक कोने में बँक देता है ।) घों पट्ट ! (हाथ में बँक मारकर तातो
 है) क्या मेठजी परम लो साँघो बर सब बीनना पड़ना । घायी बीमारी यह
 या नहीं ?

संबोहर—घोम्पाजी, घभी लो—

घोम्पाजी—सा:ना-बर ?

संबोहर—(सीते हुए) घोम्पाजी—

घोम्पाजी—जी पर ?

संबोहर—(उनी लएह) घोम्पाजी—

धोम्यजी—तिल मर ? बाल-मर ? ठहरिए, धमी मयाटा हूँ इसे । यह मायाजी से नहीं जाएगा । (फामुन से) बा रे, एक लोट में पानी ला । (फामुन जाता है । मातिनी से) सात बाने साबुत चढ़के के ला दो । (मातिनी का जाना) बस धब बोड़ी बेर में मैं मया बुना इसे सेठजी यह जो भी है । (लंबोदर को झटका बचाकर खेब से एक रंग की पुड़िया निकालकर हचली में छिपाता है) सेठजी धाप करा चीब होकर बैठ जाइए । तकलीक तो होनी ही बोड़ी बेर ! (फामुन लौटा लाकर बसे बैठा है । धोम्य जसमें रंग की पुड़िया भिजा देता है । मातिनी लाकर दरब के बाने बैठी है । वह लंबोदर के तिर के चारों तरफ जस लोटे को बुमाता है) मूठ प्रत परी पिछाच यस बंबर्न राकस किमर, बैठास—धाकाध पाठाल—गानी-गर्बत मतर बाग सभ का घाघन कोले जो भी है धपने मर भाये—धी गुबनी महापाब का महा बचन बजरंम बली की घरन ! धो फिस्त धा फू धो फट्ट ! (लोटे को एक हाथ में पकड़ दूसरे हाथ से चारों तरफ चढ़के के बाने मारता है । फिर जमीन पर लोटे से पानी की बार पिराता है) ।

लंबोदर—है ! इस पानी का रंग लाल कैसे हो गया ? (फिर कराहता हुआ सेठ जाता है) ।

फामुन—मैं तो बिलकुल साफ पानी लाया था । धापने कुछ भिजा तो नहीं बिया ?

धोम्यजी—मैंने मंतर की ताकत से धापकी सारी बीमारी इस लोट में खींच ली इसी से पानी लाल हो गया ।

मातिनी—नहीं बी, इस लोटे में मैंने रात की गन्धेचाम तम लिखने के लिए—

फामुन—हूँ हूँ यह लोटा तो बही रक्वा है ।

लंबोदर—(कुछ याद कर उठ बैठता है) कहीं रक्वा है ?

फामुन—गुप्तलक्षाने में । (बीड़कर लोटा लाने जाता है) ।

धोम्यजी—जमों सेठजी धब कहिए तबीयत कैनी है ?

लंबोदर—लोटा तो देख लाने बीजिए, तबीयत भी धमी ठीक हुई जाती है ।

[कर्मस छोड़कर चारपाई पर कड़ा हो जाता है]

श्याम—(लोटा लेकर घाता है) ये है वो लोटा ।

मालिनी—(हुल्ल के साथ) मगर इसमें का पानी सब-का-सब किसी ने
देरा दिया ।

लंबोदर—(पगड़ी से उदलकर जमीन पर कब्रता है और हाथ कँटाकर
बीमारी का दूर हो जाना प्रकट करता है) धरो टडूर जा रो मत डगना
ही सीमा ठोस हुआ—येरी बीमारी जमी नइ ।

मालिनी—परमेश्वर को पापबाद है पाप प्रकट हो गए । धीर क्या
बाहिए मुझे ?

घोम्याजी—क्यों संटजी ? कैसा भाड़ा ? कर दिया न कुटबियो में प्रच्छा ?
है न मेरे लोटे में कणमात ?

लंबोदर—फरामाउ इस साटे में नहीं इस सोन में भी घोम्याजी ।
(श्याम के हाथ से लोटा ले लेता है) इमा की बरीबत में बीमार हुआ धीर
(सी ने मझे प्रच्छा कर दिया । (मालिनी से) बागो बम्हे को सकडिया
मेंमानी जन्नी से गाना लँबार करो । मेरे पेन में पूहे कर रहे है धीर फिर
धमी तक दुकाम नहीं सोमी नैकड़ों पाटक लोटे गए होंगे ।

[मालिनी बीच के द्वार से भीतर जाती है । श्याम भी घोम्या धीर
लंबोदर के हाथ के लोटे लेकर मालिनी के पीछ जाता है ।]

घोम्याजी—शाश्वत की बन्दिता उपारगात में मन रतिग मटजी ।

लंबोदर—है ! है ! है ! हम समय जाए । (घोम्या को रास्ता दिखाता
है । उपर से डाक्टर घाता है) ।

डाक्टर—चिट्टर जाए बिना धीररेगन के ही प्रच्छा कर दिया । लो में
है दबा के दाम धीर जोस दोनो का टोटम । (बच से बिन निदानकर लंबोदर
के घाये बड़ाता है) ।

[लंबोदर हुलसी तरह जायता है उपर से हुबोज हाथ पमारते घाता है]

हुबोज—बंने हो गए एक ही बुद्धिया में बिातर टोट जमीन पर कडरते
बने ! भाएए धब हुनारा मेहनताना बीजिए ।

संबोहर—(तीसरी तरफ भापता है) बाप रे ! (उपर से ज्योतिषीजी आते हैं) ।

ज्योतिषीजी—(कम-पत्तो बैठे हुए) जीजिए, यह धादिप धाप प्रच्छे हो गए होवे यह तो मने मंदिर में बाप करते ही जान लिया था । जाइए बलिबा ।

संबोहर—मरा रे ! (फिर दूसरी तरफ भापता है । प्राकृतिक विस्फोटक आता है) ।

प्राकृतिक विस्फोटक—क्यों सेठजी धब भागूम हुए न धापको मिट्टी के पुरा । मैं कोई फीस तो नहीं माँवठा धापस जो मन भावे यह बीजिए, देना ही चाहिए ।

संबोहर—मन फिरर जाऊँ ? (फिर दूसरी तरफ बीपता है उपर से बेंचजी आकर सेठ का हाप पकड़ते हैं) ।

बेंचजी—ठीक हो गए सेठजी । मैं समझना हूँ यह एक ही गोली का प्रसार है । धजी दूसरी का लोने तो काया-बना हो बायया काया-बात्म ! धब धुमायी पूजा में कोट-असर न हो ।

संबोहर—हा ! हा ! हा ! हा ! परे कौसी पूजा धीर कौसी बलिबा ? कौसी फीस धीर कौसा मेहनताना ? कौसा बिल धीर कौसा बीजक ? यह नरीब संबोहर कधी बोमार ही नहीं हुया ।

सब—(हाक उठाकर बिल्लाये हैं) बीन कहता है ? झूठी बात ।

संबोहर—मुनिप में कहता हूँ धजी सब बीनता हूँ । यह ता बल ऐसी हुई कि रात को मरी धीमती में बिल लोने में एक चोल बिबा या मुबह में उठे धीब को उठा के गया वहाँ जब मने मक को जमीन पर बहता पाया तो बुँबली रोयनी में मेने कसे धपना सन बनभा धीर में बीमार बर धया । धब अब मेब जुता तो बताइए फिर में कवी न धकल हो जाना ? मेकिन मैरी बीबल साक है में कोईमल नहीं हूँ । बुँबा—मैं धाप लार्बों की पूजा बलिबा मेहनताना बिल बीमत धाम का भी धाप कह रहे हैं धब कुछ बुँबा । धजी अरा मकबुयी है मुभ बड़ी कोर की मूख ममी है । धाप धपने धपने बर बचारें ; मैं धपने बीकर की चार्पंत सके पास चिजबा बुँबा । (सबको भेककर धमल में लुब बीब के पास से भीतर बला जाता है) ।

कापुन—(भीतर से) सेठजी रोगी तैयार है ।

[परबा गिरता है]

प्राज्ञ

हॉलैंडर

सरकस का मासिक

घण्डूर

सरकस का एक तिसाही

तेसा

वाँकर की बानी

कृपाल बनी

सरकस के दो बनावन

बीपल का राजकुमार

एक लड़का

—

देस—हॉलैंडर सरकस का कंसाउण्ड

बाल—एक राज

अपराध मेरा ही



“ वापस की चीज लयाकर बिना उक किए तुम्हारा साथ दूँगी ।”

पहला दृश्य

[स्थाव—होर्लेंकर सरकत के कम्पाउण्ड में होकर के तम्बू के भीतर ।
 समय—श्री ५५ रात । तम्बू के एक तरफ़ दो कम्प कोट बिधी हुई हैं । एक घोर
 एक छोटी-सी मेज जगी है उस पर बपल घोर थुङ्कार का सामान रखा हुआ
 है । एक किताब, बबल-कलम गौर बानी एक-ही काय लिखाऊ घोर एक लेडोव
 हंडबैग भी जगी बर है । कोम में बिजली का लप-स्टण्ड । प्रदी पर तीन फ्लोरोइड
 बुरतियां हैं । भपप्य में सरकत के काइक पर बजते हुए बेंड की प्यत्रि घोर
 एकत्र होते हुए सर्किलों का घोर । कमी-कमी घर घोर बुरते जानवरों की आवाजें
 भी सुनाई दे रही हैं । बपल की सहस्यता से बुरती में बेंटी सेता अपन नुङ्गे में
 फूल गाजा रूही है । घोबरकोट घोर डोच प्हम, निगार बोता टुछा होपस का
 राजकुमार तम्बू के भीतर धा जाता है । सेता उसकी तरफ़ देखन ही बामो की
 दि बह टोच उतार उसकी घोर हाप बढ़ाता है ।]

बीरन-नुमार—बेबा ! नुड नाइट !

सेता—(घोरन हो उठ जाती है । एक अचरित्त को देख सट्मरर बुर
 पड़ी हो जाती है) ।

बीरन-नुमार—हाप क्यों नहीं बढ़ानी ? हम एक-दुमरे में मिस जुबे ह ।
 हमारे परिचय क तिये बिमी तीगरे की अमरत घब नहीं रहा ।

सेता—(हाप जोड़कर) नमस्ते ! मैं नमस्ते बहून की घाड़ी हूँ ।

बीरन-नुमार—घपनी घपनी घाइत । सेबिन हाच मितान में हम एक-
 दुमरे के बटन नजदीक धा जागे हें । हमारी दोग्ती हमारे मामाबिब जोवन
 के बाते घह बटन पम्पनी बीज है । बुनिया घर में सबने ग्याह यही तरीका
 इगमात्र होना है । घोर हमबिनो भाग तो नाक से नाक रपड़ते ह—गुवन
 पड़ा होमा

बेबा—(अचरित्त घोर घुब रह जाती है) ।

लेखा—पहले कपड़े की डमी रखकर जम्होंने घम्यास किया था। मैं उस डमी का रोज देखती रहती। जब उनके हाथ से फँका हुआ प्रत्येक घूरा डमी से बास-बास बचा रह जाता तो मेरे विश्वास बढ़ गया और एक दिन मैं निर्मम होकर बोर्ड के भाग लड़ी हो गई।

बीपल-कुमार—विश्वास उसके ऊपर बढ़ा ? अपने ऊपर या उनके ?

लेखा—उन्हीं के ऊपर।

बीपल-कुमार—जगजुब है। हो भी सकता है। तुम्हारा-मेरा तो परिचय है। तुमने अपने हसबन्ड की ठारीछ की है। मैं सतते बोस्टी करता चाहता हूँ। किसी बहाने से कमी उनके साथ मेरा हाथ मिला दो न। या उन्हें भी नमस्ते करने की ही धावत है ?

लेखा—वे बहुत कम नई मित्रता पालते हैं।

बीपल-कुमार—ख़। तुम इतनी सोचल और वे बहुत कम नई मित्रता पालते हैं। मैं उनके हाथ के निघाने का काम हूँ। सोचता हूँ अगर वे किसी दिन उन छरा को लेकर हमारे साल क जंगल में बसते तो जकर बा-तीन छरों को घाटी पर सम्या कर देते। उनके-तम्हारे और छरों के साथ फोटो लिखाने का एक बहाना मुझे भी मिला जाता।

लेखा—राकिन उनका निघाना कहाँ है सही ? सरकस में वे रोज रात को मेरे ऊपर छरे फँकते हैं पर धाज एक कमी मेरे धंय के किसी तिल का भी स्पर्स नहीं कर सके हैं। यही क्या उनके निघाने का पक्का हला है ?

बीपल-कुमार—हाँ-हाँ बही था है। यह मेरे धरन समझने की बात है तुम्हारे समझने की नहीं। मैं उनसे धमी बात करूँगा कहाँ है वे ?

लेखा—सरकस के मानिक मिस्टर हॉर्निकर के साथ कोई बकरी मजदिरा कर रहूँ है जम्हीं क घाफिय में।

बीपल-कुमार—बिन में फुरयत रहती होगी ? फिय बत ?

लेखा—दो-तीन बजे पाइए। (उठ जाती है) अब तो मुझे—

बीपल-कुमार—मैं समझ बना। (उठ जाता है) बरा बाहर एक पहुँचा देने की तकलीफ तो कर दो। छरों के बहाकने की उठनी परवा नहीं है मुझे।

लेकिन लम्बू के बाहर जो कला बाँध रखा है तुमने वह धायक सब बाग उठा है। बसो उठी के साथ मेरी दोस्ती करा दो पात्र।

सेला—बाटता नहीं है वह सिर्फें मोड़कर डप देता है।

वीपन-कुमार—नहीं मैं एंगी पौराणिक बातों पर विश्वास नहीं करता। तुम्हारे पत्रि-देव के छुरे निकल बने हैं तम्हें बाटते नहीं—उसकी जड़ में उनकी मद्दगल है। तुम्हारा यह गोडगछोर कुला मैं इसके मोड़ने पीर फाटन के बीच में कोई फलक नहीं देगता।

[पहल सेला उसके पीछे-पीछ वीपन-कुमार का आना। उनके आने के कुछ देर बाद एक लिफाफा हाथ में लिए हुए धीरे-धीरे सगणित हाँकर आता है। कुछ पात्र आते ही वह बड़ी हीचिपारी से लिफाफे की चौमकर पढ़ता है, फिर बसो से इपर उपर देकर पौरदासो से लिफाफे की बत्ते ही बिपका देता है। लया आतो है।]

सेला—कब आए तुम ?

सकर—यहाँ मई थी ?

सेला—यही पर ता।

सकर—बो यह तुम्हारा एक पत्र आया है। (कुलों में बैठ जाता है)।

सेला—यहाँ से ? (बस सेती है)।

सकर—यि क्या जानू ? तम्हें ही मासूम हागा।

सेला—(बस खोलकर पढ़ने लगती है। पढ़ते-पढ़ते शक्ति होकर सकर की तरफ देगने लगती है और धीरे से एक करम बीच हट पत्र को कुछ दिया कर पढ़न लगती है। बस समाप्त कर सावधानी से अपने बटुए में रत बद्धा हाथ न ले लती है)।

सकर—बिन का पत्र है ? (बिन की उँगलियों से बज्रले हुए उनका प्रायुतः बो देरी में ताल देने लगता है। अब लया खुद ही पढ़ आती है तो फिर पूछता है) क्या बिनका है ?

सेला—बिनो का नहीं।

सकर—यह बहुत ताऊ है। होने में ही बिनो का होना और तुम बन्नी

हो किसी का नहीं है। ठाण्डुब है सिखा !

सिखा—अगर वह मुमनाम हुआ तो फिर किसका बता दूँ ?

दांकर—फिर भी क्या एक अनुमान हमारे पास नहीं ? देखूँ तो ।

सिखा—गहीं रहने दो ।

दांकर—रहने दूँ ? (मुठ्ठी बाँधकर मैस पर मारता है) ओऽऽऽ ! अपना घर-द्वार मुस्क धीर बोसी छोड़कर इस होमंकर सरकस में पीकरी की । सोचा था नए नए बेस धीर नए लोगो से भेंट होगी । मया जान धीर मया तजरबा जानिस होया और अपने ही घर के भीतर ऐसा तजरबा मिला ! (मिरासा की साँस ल कर तिबरेट मुलपाता है) ।

सिखा—तुम मूठे ही न-जाने क्या करना करने लगे ?

दांकर—देखो भला मैंने हमेशा तुम्हारे साथ सच्चा व्यवहार किया है तुम्हें भी मुझसे—

सिखा—तो क्या मैं तुमसे भूठ बोसा करती हूँ ?

दांकर—लेकिन कुछ छिपाती बकर हो । छिपाना क्या भूठ की ही एक शकस नहीं है ?

सिखा—क्या छिपाया मैंने ?

दांकर—इसी पत्र को देख ला यह एक बिमकस ठाड़ी मिगाल है ।

सिखा—यह पत्र ?—इस पर खोब जाने के निधान मौजूद हैं तुमने पकर इसे पढ लिया है ।

दांकर—जब ऐसा हो है तो तुम्हारा इसे छिपाना बजार है ।

सिखा—(पीरन ही बटए से पत्र निकालकर हाथ में ले लेती है) तुमने मेरे मया करन पर भी मझे सरकस की एमी पीकरी के लिए सम्मास कराया धीर मझे एमी जगह, कम से-जम कपड़ों में लड़ा कर दिया—जहाँ हर रात को हजारा बरी मसी मजदूरों मेरे ऊपर पड़ती है । उनमें से दो-चार कम बुद्धि के सोच अगर मेरे लिए पत्र भज देते हैं तो उन्हें जया दिया जा सकता है । मैंने क्या किसी को उत्तर दिया है ? उत्तर भी दिया हा तो जिना उस पड़े तुम्हारा मुझसे कस रहना क्या है क्या ?

संकर—कम्पनी का वह कामा क्या उम—दृष्टान्त वह अतिवृत्त का कामा बाहर है उसमें कई गुना भीतर भी है। मुझ उसकी परछाई से भी नञ्जरत ? संविन बर्क क्या मयोध है। एक ही बच-बक में स हम दोनों को तनया मिसली है पीट एक ही तने पर दोनों की शोटिया भी मिसली है। उनमें न-जाने तुम्हारे ऊपर क्या जादू डाला है ?

सेता—उनके नाम की हम समय क्या घापम्यवता भी ? सो मही है वह पत्र । (उत्ते पत्र दे देनी है) ।

संकर—(पत्र तोलते हुए) तुम उसके साथ मूमने क्यों जाती हो ?

सेता—तुमसे दिलाकर बच गई ?

संकर—(खोर-खोर से पत्र पढ़ता है) "प्यारी सेता"—है ! यह तो प्रेम पत्र है। किनारा है ? उमी का है।

सेता—तम उनके हस्ताक्षर नहीं पहचानते क्या ?

संकर—(फिर पत्र बड़ता है) "प्यारी सेता तुम्हारे पति के दिन में तुम्हारे लिए कुछ भी क्या-माया नहीं। वह हर रात का तुम्हें बोर्ड के लहारे गटा करता है किनकी सेतामी मे ? फिर दूर न तेज छरे फेंकना है। अगर कभी उनका या तुम्हारा प्यार एक क्षण के लिए बच पर भी हट जाय तो वह पीनारी छरं लम्हें बरमूरन करना तो एक किनारे की बात तुम्हारी जान मेरर ही खेद लेगा। मे तुम्हारा बना चाहने वाला हूँ। इनलिए तुम्हें छबरदार करना है। नबरदार ! छबरदार ! छबरदार ! तुम्हारा पुनारी—क" है ! "क" क्या म का मने ? क उमी तुम्हारा का घाबि पत्रर है। मुझे पीन देने के मिन बाएँ हाथ में यह बिट्टी मिंगी गर् है। (बिट्टी बाहर कर मेड पर खेक देना है) ।

[लम्ह के बाहर का बुला दिनी अर्परिचित के घाम पर खोर में भीनना एक करता है—उनके भोमने से बाहर एक लहरा भीनता है। संकर अोरन ही बाहर की बीड़ता है। सेता भी बाहर की बरी में लड़ी-लड़ी देलती है।]

संकर—(बाहर) दिबर ! गट घन ! (लड़के में) पबगापो नहीं बीड़ता-जन । बही बर गड गगे बगे नहीं कला र्बना हुआ है।

लड़का—(बाहर रोते हुए) है ! घभी दीन पड़ा दिवा का ।

संकर—(बाहर) किते कुड़ते हो ?

लड़का—(बाहर) मेखा भी को । कहीं रखती हैं वे ? यहीं तो बताया था ।

संकर—(बाहर) यहीं तो है । जैसे चापो मेरे पीछे । (तम्बू के भीतर घाकर) मेखा भी सीभिए, एक दूसरे पुजारी की बिट्ठी घाई है ।

लड़का—(संकर के पीछे-पीछे घाकर) भी नहीं बिट्ठी नहीं है यह खोकोसेट का बस भेबा है ।

संकर—(मेखा को रिखाकर) यही है मेखा भी ।

लड़का—(दोनों हाथ जोड़कर) नमस्ते मेखा भी सीभिए यह चाप के लिए भेबा है उन्होंने ।

संकर—किसने भजा है ? घालिर कुछ नाम भी तो होना उनका ?

लड़का—भी हाँ नाम जो कुछ भी होना उनका मैं नहीं जानता । सब उन्हें बीपस का राजकुमार कहते हैं । नाम से क्या हमें काम से मतलब होना चाहिए । कौन सेबा यह बस ? (लखा से) चाप ही को देने के लिए कहा है उन्होंने । (मेखा के सामने मेख पर बहु खोकोसेट का बस रखकर संकर से) जरा चाप उठ कस की खंवीर पकड़ सीभिए । (डरते डरते बाहर को जाने लपता है) ।

संकर—किस-किस की खंवीर पकड़ूँ मैं ? बहु लोहे की खंवीर में बंधा हुआ है भीर लखा तुम भी तो ?—क्या बिबाह की प्रतिज्ञा लोहे से कम मजबूत है ?

लड़का—(घबराकर फिर भीतर लौट घाता है) जग तकलीफ तो होगी ।

संकर—बहु बंधा हुआ है, चापे क्यों नहीं ?

लड़का—खंवीर टूट भी सकती है ।

संकर—(मेखा की तरफ देखकर) घोर दुग्हारी प्रतिज्ञा भी क्यों केबा ?

लखा—लड़के !

लड़का—क्या है ?

लखा—यह बस उन्हें वापस कर देना ।

सुकुका—बसों ?

लला—आपसे नहीं बता सकती । वह देना जगहों में नहीं लिया ।

सुकुका—नहीं मैं देना नहीं कर सकता । वे मरने पर आया हो पाएँगे । मैं कुल के लोग बर्तान कर सूया सेकिंग दीपन के राजकमार का गुस्ता ? बाप से । (बाप पकड़ना है और कर्तों की कोई परवा न कर जाता ही जाता है । बाहर जाता फिर आँकता है) ।

शंकर—(एक हाथ पर दूसरे हाथ की कोहली के उज हाथ पर अपनी छोड़ी रण छोड़ी ता ल जाता हुआ लम्ब में दहलता है) ।

सेना—अपेक्ष नतास के दरकों में होग वे जाओ तुम से जाकर इस बस को जगहें लौटा दो ।

शंकर—बाह ! खोली करने जाओ तम घोर बरा बनने के लिए मैं ?

सेना—जगहें सब मामल है मुझ कोकोलट का स्वाग जग भी पसंद नहीं है ।

शंकर—बस भी हो किसी के भय हुए अवहार को न तरह लीग देना उसका बार अपमान है । तुम्हें पहले ही बुद्धि से काम मना या घोर इतनी दोग्गी नहीं बढ़ानो बी ।

सेना—मैंने कहाँ कहाँ ?

शंकर—तो क्या कोई अपरिचित इन तरह किसी के लिए भिटाई भय बना है ?

लला—मैंने कभी उन्हें नहीं देया कम तक ।

शंकर—आज ना देगा होगा ।

सेना—मैं कभी उनके यहाँ नहीं गई ।

शंकर—वे यहाँ आए होंगे ।

लला—घबरी घार से से मरने नहीं बहूँगी । बस दिन के परिचित की मॉनि के मेरे ताप बाने करने लय । मैं क्या धरवा मारकर उन्हें बाहर निकाल देनी ?

शंकर—लला बंभे मँबलगी ? यह तुम्हारे पुगारियों की बमनन को हूट रोड मेरे लम्बु की बरिजमा करने लगी है ।

सेजा—तुम गाहक ही अपना प्रेम बढ़ाते जा रहे हो ? वे सब तुम्हारे पिन हैं और तुमने ही उनके साथ मेरा परिचय बढ़ाया है ।

शंकर—बहु बीपस का राजकुमार ? मे खूब उन्हें नहीं जानता तुम्हारा परिचय कहाँ से करा दिया ?

सेजा—म क्या जतर है ? प्रथम बर्सेन में हमारे बीच से जो प्रेम का बहु बहुत दिन तक बढ़ता गया था ।

शंकर—रहने को खूले को ये सब पुपगी बातें हैं और पुराने कपड़े की तरह इनकी पायबारी नहीं रही ।

सेजा—केवल एक ही बचा है मेरे पास ।

शंकर—कौन सी ?

सेजा—मुझे परदे के भीतर बन्द कर रख दो ।

शंकर—नहीं बहु एक बर्बरता है ।

सेजा—सम्प बनना है तो—हुमिया को भी सम्प समझे । अगर हम शकल में चाहती हूँ इस तरह स्लोव फिटिंग कपड़ों में मुझे पश्चिम के सामने बोर में क्या मत करो ।

शंकर—तो फिर बुजर कैसे होयी ? बोहरी तनबा को मिलती है ।

सेजा—जग में प्रेम हांगा तो हम प्रसन्न रहेंगे । बहु प्रसन्नता बोहरी तनबा में नहीं ठहरती है धाबे पैट में पकर स्थिर हो जायगी । मेरी बगइ पर कोई दूसरी स्त्री नियुक्त कर लो ।

शंकर—तुमरी स्त्री ? अगर कभी कोई एक्सीडेंट हो गया तो ?

सेजा—(बौरुकर) लेकिन मेरे एक्सीडेंट के लिए कभी क्यों तुमने इतनी परवा नहीं की ?

शंकर—तुम्हारे एक्सीडेंट पर न कोई मेरे ऊपर हरजाने का बाबा ठोक सकता है न लोग ही मुझे बुरा-बला कह सकते हैं ।

सेजा—तब तुम्हारे बरखों पर बलि की बकरी की भाँति पड़ी हुई हूँ मैं । ऐसी एक विवशा घबला से क्यों बिना बात ही मूना करते हो तुम ? अगर

कित्ती दिन घरने छरे की लोक से हमकी एक धाँव खींच दोये तो भी बड़ परबर की घाँस सपाकर बिना उफ किए तुम्हारा माप देयी । (घरर के देर पूती है) ।

लंकर—(बड़े प्रम से उत्तका हाथ बकककर ऊपर उठाता है) मेगा तुम्हारी यह सब भीमत जानता हूँ । मरिन कमी-कमी तुम—(प्रधानक उतकी उँगली पर एक खैनुठी बैजना है और यह फिर घानी पुरा की पुबं भावना में ही सौद जाता है) यह खैनुठी तुम्हें मिलर हाँकर से घेंट की है ।

मेगा—बया तुमम यह बात छिपी है ? तुम्हारे लिए उन्होंने पूरी नई पूट बनवाई मुझ बड़ भगठी बी । यह मेका का पुराकार है ।

लंकर—नही प्रम की माइगार है । और लंकर को भी कुछ टकर उनकी घाँसों में पुस खींच ही गई है । मेरिन मे क्या नहीं है ।

मेगा—बचापि नहीं है पर जो कुछ घाय देर रत है उनमें बुद्धि का यह बार नहीं मिले और उमे प्रम ही बना रहन देते हैं ।

लंकर—जब तुम भीतर कुछ घोर बाहर कुछ हो तो फिर कैन मेरा प्रम बन जा ?

मेगा—भीतर क्या हूँ मैं ? प्रमम्य कर मे तुम्हारी ही नहीं हूँ बना ? घोर बाहर बाहर भी क्या तुम्हारे ही मनेतों पर मेरा घाय बिदा हुआ नहीं है ? नय भी छिाकर नहीं रहना वह प्रमने-माय तुम जानना कित्ती-न कित्ती दिन ।

लंकर—तम क्या साबित कर सोयी ? तुम कित्त तरह साबित कर सोयी ?

मेगा—(बड़ी ध्ययापूर्वक कुछ लोचकर) -प्रिम तरह भी बटोये ।

लंकर—धीरत का यह राजकार ! कित्ती पत्ती तुम्हारी उतक माय उतकी बनिष्ठता ही गई और खैती घोट में ?

मेगा—यह एक बस की बनिष्ठता है । (कोकोतेड का रिम्मा उठाकर बाहर को जाने लगती है) ।

लंकर—(उत्ते रोकर) कहाँ जाती हो ?

मेगा—मेरी कोई बनिष्ठता नहीं है । मैं उनका यह उनहार उन्हें बाण दे जाती हूँ ।

शंकर—सरकस के कपड़ों में कहीं पम्पिक के बीच में बाठी हो ? में कहता हूँ तुम्हें हो क्या क्या ?

सेजा—नहीं में जाऊँगी । जकर जाऊँगी ।

शंकर—बेखो तुम्हें ठीक लीकरी के बसत मेरा मूड खराब न कर देना चाहिए । धीर मेरे खेन की कामयाबी बिलकुल मेरे मूड पर ही कायम है । धर हाप से छुटते हुए छुरा तिल भर भी जगह से हट जायया तो निघाने पर पहुँचकर एक इंच का छत्र भी भारी धनर्ष कर देना ।

सेजा—मुझे कोई परवा नहीं इसकी ।

शंकर—मुझे तो है । खेत के बसत हमारा घायस में सड़ जाना हमारी बकाई नहीं है धीर में धरना खेन कसल करा भी तो नहीं सकता ।

सेजा—(वीकोलेट के बसत को मेज पर रखकर धरने निरखय से हट जाती है) ।

[नेपथ्य में सरकस की गहली बंटी बजती है]
 शंकर—यह गहली बंटी बज गई । मुझे जाना है । (सेजा से सरकस क तरफ जाता जाता है) ।

[दूसरी तरफ से बीपल का राजकुमार आता है]
 बीपल-कुमार—सेजा तुम मुझ से क्यों ताराज हो गई ?

सेजा—नहीं तो ।

बीपल-कुमार—उमी तो मैंने कहा । उस सड़के से साबद तुमने पन्नी तरह करने लया मुझने । यह कुत्ता है किबका ?

सेजा—हमारी ही है । लेकिन यह धारके ऊपर तो नहीं भीका ।
 बीपल कुमार—तो क्या यह कुत्ता तुमने मैहमानों की टाँपें धीमने के लिए बाँध रक्का है ?

सेजा—यह प्रखेक अपरिचित पर भीकता है । इसी से हम इसे हर बसत भीमकर ही रखते हैं ।

बीपल-कुमार—मैं क्या अपरिचित हूँ तुम्हारा ? इसी से वह मुझ पर नहीं

अपराध वैरा ही

भीका । कुत्ते की बड़ी भारी समझ होती है । मेला में नहीं जानता तुमने मेरी बाह के भीतर क्यों इतनी बड़ी जगह बना ली है । यह तुम्हारा ही पुण्य है मेरी योग्यता कुछ भी नहीं तुम खोज छोड़ो की ठेक बाह से बचकर जिस पाने वाली एक मञ्जीब धीरज हो । मैं साफ कह देना जानता हूँ मन में कोई मैम नहीं रखता । (फुरसो पर बैठ जाता है) ।

सैला—प्राणको यहाँ ऐसे समय में पाना चाहिए, जब वे भी यहाँ मौजूद हों ।

बीबल-बुमार—वे कौन ? तुम्हारे पति ?

सैला—हाँ ।

बीबल-बुमार—तो क्या इज है ? अभी बुला जा न उगह । मैं क्या किसी से डरता हूँ ? मैं उसकी वीरहाजिरी में तुम से बोली करने के मन्म विग्राहक हूँ । लेकिन मजदूरी । मैं जब यहाँ घाटा हूँ तभी उनका पता नहीं रहता । बुलायो न यहाँ हैं वे ?

सैला—(पड़ो बैग कर) अब तो रात का समय हुआ मया ।

बीबल-बुमार—अभी बहुत देर है । पत्नी ही पटी तो हुई है दूसरी फिर तीसरी । धम लूक होमे पर भी-तो तुम्हारा मकर न जान नहीं पर हो । बसो अभी तो तुम्हारा इंतजार करते-करते इटरबन भी राफा हो जाता है ।

सैला—भीसरी में धाजार्थी हैसो ? हमें प्रबंध धीर मानिए की धाजा का मनूकरण करना पड़ता है ।

बीबल-बुमार—धीर जो शेष राबमे ग्यादा पमर किया जाता है उसे सब से धाजार्थ में राफ कर मानिक बरनिए को तरसाते ह—न जान क्यों ?

सैला—अब मैं मारी जाइगी हूँ । हमें दूसरी पटी पर मरबन में पड़ूब जाना होगा है ।

बीबल-बुमार—अभी दूसरी पटी हुई ही नहीं है ? तुम ग्यार हा ऐसे कान्ने-बाकून मजदूरी क निय होगे है ।

सैला—घर मुझे एक बिगोह की विरा दे रहे है । अब मक जाना ही चाहिए । अब मैं लव बुझकर संभू का करता हूँ हूँ तो फिर द्वारा यह

कुत्ता बहुत खूबमार हो जाता है ।

बीपल-कुमार—(हँसते-हँसते पठ जाता है और बिजली की बली बुझकर चँबेरा कर देता है) । क्यों ?

सेजा—(बिस्ताती है) कुमार साहब ! आपने यह क्या कर दिया ? वह तो बड़ी छोछी बात है । मैं गिर पड़ थी । स्थिच खोलिए ।

बीपल-कुमार—रूखा मैं तुम्हारी बात को गलत धारित कर रहा हूँ । देखा तुम्हारा कुत्ता बिलकुल कुत है । मैंने बिस्तामती बिस्टुटों का धापका मर कर इसके घोंड़ने की मधीन बर कर ली है ।

सेजा—स्थिच खोलिए, मेरे पति या भाईने तो न-बाने धपने दिन में क्या कहेंगे ?

बीपल-कुमार—बरा बेर धीर टहोते । मसला इस कुत्त का है । तुम इसे मेरे ऊपर भपटाओ तो मैं बानूँ ।

सेजा—कुमार साहब आपके हाथ जोड़ती हूँ मेरी इज्जत का सवाल है ।

बीपल-कुमार—वह मस पर नहीं भीड़ सकता । तुम कहती थी चँबेरे में यह कुत्ता बहुत खूबमार हो जाता है ।

सेजा—तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ स्थिच खोल दो ; न धाम बिना सब ही मुझ पर नायज होकर गए हैं ।

बीपल-कुमार—(स्थिच खोल देता है) हैं ! बिना सब ही नायज होकर गए हैं ! क्यों गए हैं ? इतनी सुन्दर तुम ! रोज उनके छरों के बीच से धपनी धाम बधा कर ले पाठी हो । धपर इस पर भी वे तुम पर बिना सब नाराज होते हैं ता इतना भी धाम के भीतर धनमें हीबान खोलता है ।

सेजा—मैं उनकी धर्मपत्नी हूँ । धपको मेरे धामने उनकी पीठ पीछे उनकी धाम के खिलाडू ऐसे मपख नहीं खोलने चाहिए ।

बीपल-कुमार—बहुत धपदा धमी तो जाता हूँ मैं । कल कब धाऊँ ? ऐसे बरत बुनाओ बर वे भी धर पर हों । मैं धनको देखना चाहता हूँ । मैं उनके धाम धाऊँ कर यह धामना चाहता हूँ, ऐसे धामिध धाममी के पास इतनी सुन्दर रबी धामिध बिन मुनों के कारण धटकी है ?

कुत्ता बहुत बूँस्कार हो जाता है ।

बीपल-कुमार—(हँसते-हँसते उठ जाता है और बिजली की बत्ती बुझकर घँबेरा कर देता है) । क्यों ?

मेधा—(बिस्मताती है) कुमार साहब ! आपने यह क्या कर दिया ? यह तो बड़ी घोरबी बात है । मैं गिर पड़ूँगी । स्विच खोलिए ।

बीपल-कुमार—मेधा मैं तुम्हारी बात को यत्न साबित कर रहा हूँ । देखा तुम्हारा कुत्ता बिलकुल चुप है । मैं बिलगायती बिस्फुटों का जापका मर कर इसके मौकने की मघीत बंध कर बी है ।

मेधा—स्विच खोलिए, मेरे पति या आईने तो न-जाने आपने बिल में क्या कहे ?

बीपल-कुमार—जरा डेर धीर टहरो । मसला इस कुत्ते का है । तुम इसे मेरे ऊपर भ्रमटापो तो मैं जानूँ ।

मेधा—कुमार साहब आपका हाथ खोड़ती हूँ मेरी इज्जत का सबाब है ।

बीपल कुमार—यह मुझ पर नहीं मीठ सकता । तुम कहती भी घँबेरे में यह तुम्हा बहुत बूँस्कार हो जाता है ।

मेधा—तुम्हारे हाथ खोड़ती हूँ स्विच खोल बा । वे धाज बिना सबब ही मुझ पर ताराज होकर गए ह ।

बीपल-कुमार—(स्विच खोल देता है) हैं ! बिना सबब ही ताराज होकर गए हैं ! क्यों गए हैं ? इतनी सुन्दर तुम ! रोज उनके धूरों के नीचे से धारणी जान बचा कर क धाठी हो । धरर इस पर भी वे तुम पर बिना सबब ताराज होने हैं ता इतान की लाल के भीतर उनमें हैबाब बोलता है ।

मेधा—मैं उनकी धर्मपत्नी हूँ । धापको मेरे सामने उनकी पीठ पीछे उनकी धान ब लिलाऊ ऐम मपड नहीं बोलते चाहिए ।

बीपल-कुमार—बहुत धररदा धरमी तो जाता हूँ मैं । कस कर धाऊँ ? ऐसे बरत बुलापो जब वे भी पर पर हों । मैं उनको दैलना चाहता हूँ । मैं उनके धाष धाई कर यह जानना चाहना हूँ एस धातिस धारणी के पाम इतनी सुंदर — कर्निकर बिल मुको के कारत धटकी है ?

सेखा—कल दिन में घाहए, चार बजे ।

बोपल-कुमार—बैक मू ! कैकिन चरा ठहरो मुझे डायरी में लिख देने दो ।
(डायरी में नोट कर) घण्टा मुठ बाइ ! (बला बला है) ।

घंकर—(दिलो-दिले बुपबाप आता है) यह कीन बा ? हूँ ! यही तो है यह ! सेखा मेरी घाँकों में न-जाने कब से एसी ही मिट्टी बारी बा रही है । यह कब से नहीं जाने लया ? टिकर मेरा यह स्वाभिभवत कुता यह भी मुझ से लरीर लिया गया ! हे मगवान् ! (माथे पर हाथ रखकर आकास की ओर देखता है) ।

सेखा—(घण्टर के सामने घुटने टक कर) लया-लया ! यह घाब ही पहली बार यही घाया ।

घंकर—झुड़ी बात ?

सेखा—मगवान् घासी है मैं घत्य ही कह रही हूँ ।

घंकर—दूर हट । मैं कहीं तक तेरे कलंक को टक चर्खूंगा ? (उसका हाथ घतप कर देता है) ।

सेखा—तुम्हें बोप-समझ कर कुछ कहना चाहिए । (घर जाती हो आती है) ।

घंकर—तू बिजली बुझकर यहाँ उसके साथ क्या कर रही थी ?

सेखा—क्या कर रही थी ? कुछ नहीं । बिजली आनाक बुझ गई थी ।

घंकर—तुम यह ! माझे सब मालूम है ! (तुसी से उसे बरका बिकर बला आता है) ।

सेखा—(आसीन पर सिर पड़ती है । पीरे-पीरे उठती है) हे प्रयो ! क्या कर्म मैं ? सोन शृंगार से डके हुए मेरे इस अविच्छिन्न जीवन पर दया नहीं करते धीरे मैं इन्हे किसी तरह विववास नहीं दिला सकती । (नेपथ्य में घुबरी बंटी बजती है) घुबरी बंटी बज गई ! घब तो यहाँ जाने का समय हो गया ।

[गुफ में रंग पीले हुए बलाज के बीच में उपवास आता है]

उपवास—सेखा घुबरी बंटी थी ही गई । तुम अभी तक किस अवयव पड़ी हो ?

सेखा—उपास तुम्हें पढ़ोनि सेबा है ?

कुत्ता बहुत बुराकार हो जाता है ।

बीपल-कुमार—(हँसते-हँसते घट जाता है और बिजली की बली बुझकर घबेरा कर देता है) । क्यों ?

मेधा—(बिल्लाती है) कुमार साहब ! आपने यह क्या कर दिया ? यह तो बड़ी भोली बात है । मैं गिर पड़ गी । स्विच खोलिए ।

बीपल-कुमार—सच्चा मैं तुम्हारी बात को यत्न धारित कर रहा हूँ । बेका तुम्हारा कुत्ता बिजलुम कुप है । मैंने बिसायली बिस्कुटों का बायका मर कर इसके भौंरने की मशीन बंद कर दी है ।

मेधा—स्विच खालिए, मेरे पति या चाएँये तो न-जाने आपने दिख में क्या कहिये ?

बीपल-कुमार—जग देर और ट्यूरो । मसला इस कुत्ते का है । तुम इसे मेरे ऊपर झपटाओ ता मैं जानूँ ।

मेधा—कुमार साहब आपके हाथ जोरती हूँ मेरी इज्जत का समाल है ।

बीपल कुमार—बह मम् पर नहीं पीक सकता । तुम कहती थी घबेरे में यह कुत्ता बहुत बुराकार हो जाता है ।

मेधा—तुम्हारे हाथ जोरती हूँ स्विच खोल दो । वे घाज बिना सबब ही मुम् पर नाटाज होकर गए ह ।

बीपल-कुमार—(स्विच खोल देता है) हूँ । बिना सबब ही नाटाज होकर गए हूँ । क्यों गए हूँ ? इनकी सुन्दर तुम ! रोज उनके छरों के नीचे से धनगी जान बचा कर ल पाती हो । धमर इस पर भी वे तुम पर बिना सबब नाटाज होने हे ता इसान की आल के भीतर उनमें हीबाज बोलता है ।

मेधा—मैं उनकी धर्मपत्नी हूँ । आपको मर सामने उनकी पीठ पीछे उनकी धान के लिलान ऐम सपत्र नहीं बोलन चाहिए ।

बीपल-कुमार—बहुत धक्का धमी ता जाता हूँ मैं । कम कब घाऊँ ? ऐसे बफत बुमाओ जब वे भी कर पर हों । मैं उनकी देखना चाहता हूँ । मैं उनके बाय बाटें कर यह जानना चाहता हूँ ऐसे खालिम धाधमी के पास इसमी सुन्दर -मे धासिर बिल मुओं के कारण घटकी है ?

लैला—कल रात मैं घाइए, चार बनें ।

दीपल-दुबार—वेक भू । लेकिन क्या ठहरो मुझे कायरी में लिख लेने दो ।
(कायरी में बीट कर) धरदास, मुठ बाद । (बल्ला बाता है) ।

धरदास—(घिपले-घिपले चुपचाप घाता है) वह कौन था ? हूँ । यही तो हे वह । क्या मरी घाँकों में न-जाने कब से ऐसी ही मिट्टी डाली जा रही है । वह कब से वहाँ जाने लगा ? टिकर मेरा वह स्वामिभक्त कुता वह भी मुझ से लीट लिया गया । हे मयवान् । (साथे पर हाए रखकर धरदास की ओर देघता है) ।

लैला—(धरदास के सामने मुड़ने दक कर) काया-सया । वह पाव ही पहवी बार वहाँ गया ।

धरदास—कूठी बात ?

लैला—मयवान् लाली है मैं साथ ही कह रही हूँ ।

धरदास—दूर हट । ये कहीं तक हेरे कलक को दक सक्या ? (बल्ला हाए प्रलय कर देता है) ।

लैला—तुम्हें लोक-समझ कर कुछ कहना चाहिए । (उठ खड़ी हो घाती है) ।

धरदास—तू बिजली बुझकर यहाँ उबके साम क्या कर रही थी ?

लैला—क्या कर रहा थी ? कुछ नहीं । बिजली धरालक बुझ गई थी ।

धरदास—तुप रह । मुझे सब माजूम है । (घुस्से से उसे बलका दिकर बल्ला बाता है) ।

लैला—(बमीन बर फिर पकती है । बीरे-बीरे जहती है) हे प्रयो । क्या करे मैं ? लीम मृगार से बके हुए मेरे इस घाँभण्य जीवन पर क्या नहीं करते घोर मैं इन्हें किसी तरह बिस्वास्त नहीं दिता सकती । (नेवण्य में कुलपी कडी बजती है) बूसरी बंटी बज गई । अब तो वहाँ जाने का समय हो गया ।

[कुछ में देव बीजे हुए कलाजम के बेज में ह्वल्ला घाता है]

कपाल—कैला हुसरी बंटी थी ही गई । तुव अभी तक किस जलमन पड़ी हो ?

लैला—कपाल तुम्हें उन्हेनि चेबा है ?

कृपाल—नहीं तो । मैं अपने मन से आया हूँ । क्यों बना बात है ? तुम कुछ धनमयी धोर खोई-सी क्यों हो ?

सेखा—क्या बताऊँ ? (ठण्डी साँत भैती है) ।

कृपाल—जब तुम दोनों साथ-साथ खेल में मही घाटे हो तो मध्य यह समझने में देर नहीं लगती कि उस दिन तुम्हारे बीच में बिचारी की एकता नहीं रहती । धोर उस दिन तुम दोनों का मन-मुटाव ठीक करा देना मेरा बड़ा जरूरी कर्तव्य हो जाता है ।

सेखा—लेकिन अब तक ? वह दरार बढ़ती जा रही है ।

कृपाल—दिन में तुम दोनों ठीक बे । धमी-धमी क्या कारण हो गया ?

सेखा—कारण ? कारण मैं भी हूँ कृपाल धोर तुम भी हो ।

कृपाल—सेखा ध्यान तक तुमने कभी ऐसा नहीं कहा था । मुझे मैं भर जाने के कारण धामय तुमने अपनी समझ खो दी है ।

सेखा—नहीं कृपाल नमस्त-धनिक धपराभिनी मैं ही हूँ ।

कृपाल—संकर तो कभी ऐसा नहीं कहते । वे हमेशा मुझे अपनी सच्चा बोस्ट समझते हैं ।

सेखा—यह उनकी कमजोरी है । वे सबके दोष मेरे ही माथ पर ठोक देते हैं ।

कृपाल—मन्दा जलो उन्हीं के सामने बातें हो जाएँगी । तुम्हारा खेल तो बैठे धाम इंटरवल के बाद ही है लेकिन समय पर हाबिर होना इंसान की बहुत बड़ी जामीर है ।

सेखा—तुम जाधो में घाटी हूँ कृपाल । मुझे पत्थर की जमी न समझा । मैं खुद जानती हूँ हमारे धापसी भण्डो से मानिक का फल न एक जाना बाहिर । उनसे कुछ देर की सुट्टी माँव देना मेरे लिये ।

कृपाल—मैं ठहर जाता हूँ साथ ही बसेंये ।

सेखा—नहीं कृपाल मुझे भीतरी कपड़े बदलने हूँ । तुम जलो मैं अभी घाटी हूँ ।

कृपाल—देर न लगाना । (बता जाता है) ।

सेखा—लेकिन उनके लिये बाब को कोई बखाल देना कर रख जाना उचित नहीं—यह मेरा बलिदान है करता नहीं। (कुर्सी पर बैठ कर एक कागज में तीन राख निकालती है। फिर उठकर हाथ में से उस पुर्खों को पड़ती है धीरे संभाल कर अपने बटुए में रख लेती है। फिर मेज पर से छत पत्र को उठाती है धीरे खोलकर पढ़ती है) इन पत्र के सिद्धांत माने तुम कौन हो ? मैं नहीं जानती तुम्हें यह पत्र भेज कर क्या मिला ? (पत्र बंद कर फिर मेज पर रख देती है)।

हार्नेकर—(घाकर) सेखा तूमने छुट्टी क्यों मानी है ? क्या कुछ तबीयत खराब है ?

सेखा—जरा देर की ही छुट्टी मानी है। कुछ काम था।

हार्नेकर—कितनी देर में बनोगी ?

सेखा—बनती ही हूँ। (हार्नेकर की बी हुई घोंगूठी अपनी से पतार कर उन्हें देती हुई) यह घोंगूठी मेरी रेंपची में बीनी ५।

हार्नेकर—किसी जगह के यहाँ से ठीक करा लो।

सेखा—मेरे कोई पहचान का नहीं कोई इसका पत्तर बदल देना। घापने यह यहाँ से खरीदी है नहीं ठीक करा बीजिए।

हार्नेकर—(उत्तके हाथ से घोंगूठी लेकर) लेकिन यह ठीक नहीं है।

सेखा—क्यों ?

हार्नेकर—मेरा मतलब यह घोंगूठी छ नहीं है। मेरा मतलब है तुम्हारा यह रात-दिन का मत में इससे तो नहीं अच्छा है—

सेखा—क्या अच्छा है ?

हार्नेकर—यहाँ पर नहीं बहूँया क्यादि बातें। बाहर बीकीबार परत लगाता होमा धीरे भी तो कई मोम ऐसी बातों के मुझे में बड़ी दिलचस्वी रखते हैं। संभूकों में ताले लगा दिए हैं ?

सेखा—हाँ।

हार्नेकर—नाइट कुम्भ को धीरे तक का बरवाजा बाँध कर जलो मेरे साथ। (सेखा जली कुम्भ देती है, तबू का बरवाजा बाँधकर दोनों का जाना)।

[अपनी परत विरता है]

दूसरा दृश्य

[स्वामि सरकस के पास ही एक एकांत लोहेरी सड़क । दूर पर सरकस का बड़ा मुनाई बंधा हुआ है । हार्लेकर और लैजा खड़े हैं ।]
 हार्लेकर—मैं कहता हूँ खंडर तुम्हारा पति है । तुम्हें उसकी किसी बात का भुला न मानना चाहिए ।

लैजा—लेकिन उनकी वे बातें उनके कदमों से भी कहीं लीजी हैं । उनके घूरे मेरे घंम की सीमा पर ही ठहर जाते हैं पर बातें हूबम और मस्तिष्क के पार जाती हैं ।

हार्लेकर—मैं इसे उसका बोध नहीं तुम्हारी ही बंधनता कहूँगा । घूरे के खेल में घमर तुम बरा भी घमनी जबह से उबर या उबर हो जाओगी तो क्या होगा जानती हो ?

लैजा—हाँ जानती हूँ ।

हार्लेकर—इसलिये तुम घमनी जगह न छोड़ो घमनी मर्बाबा कायम रखना क्या है वह ? वह है सहनशीलता और शान्ति का लौह कवच ।

लैजा—एसा भी किया है मैंने ।

हार्लेकर—बराबर ऐसा ही करती रहो ।

लैजा—यब नहीं हुआ करता ।

हार्लेकर—क्यों पाकिर वह कहता क्या है तुम से ?

लैजा—उम्होग घमने तमाम दोस्तों से मेरा परिचय कराया है और मैंने उनमें से किसी के साथ ईशती-बोलती हूँ तो वे सहन नहीं कर सकते ।

हार्लेकर—तुम्हें इतना हँसना-बोलना न चाहिए ।

लैजा—मैं बहुत बुराकर सबके सामने रोनी मूरत बना लेना वह मुझे हो सकता है । किसी की ही हुई बीज को देखकर भी वे नापसंद हो जाते हैं ।

हार्लेकर—मैं नमस्कार हूँ, तभी तुम्हें यह घंमूठी लौटा दी । घमनी है तब मे यह घंमूठी उसे ही भेंट दे देना और खबर यह लगी चें बीबी भो न हो जायगी ।

शंकर—(खेत्र के बाहर से आवाज देता है) हाँकर माहूब ! हाँकर साहूब !

हाँकर—कौन है ? (लेखा से) शंकर मुझे बुँडता हुआ यहीं था पहुँचा ।

शंकर—(आकर) यबनर साहूब सरकस देखन को आमेबाके हे भयी । उनके स्वायन क लिये घापका ही बसना बहरी है ।

हाँकर—हाँ मैं जाता हूँ । (जाता है) ।

शंकर—घोर कौन है यहाँ ?

लेखा—(घोरे-बीरे) मैं हूँ ।

शंकर—फिर तुम्हें प्रबण ही क्यों पसब है धाज ?

लेखा—हाँकर साहूब मुझे कुछ समझा रहे थे ।

शंकर—बदा समझा रहे थे कि शंकर को तमाक देकर छुड़ी पा बायो ।

लेखा—तुम उन्हें ऐसा क्यों समझते हो ?

शंकर—बसो, इन झगडे को यहाँ पर रख दें धाज । यबनर के एकाएक धा जाने से सायब प्रोधान में कुछ हेर फेर हा जाय । बहुत मुमकिन है हमारा खेन इन्करस के इबर ही खीच लिया जाय । (रोनों जाने हैं) ।

[परवा बठता है]

तीसरा दृश्य

[स्वाल—सरकस क रिय का एक भाग । बर्जक लघ के बाहर हैं, जहाँ से कभी-कभी उनकी तालियाँ बजती सुनाई देती हैं । सामन एक बोर्डे रक्बा हुआ है । कपाल घोर बली घापक में हँसी-मजाक कर रहे हैं । कपाल के हाव में एक फटा हुआ बेंत है उसकी भार के डर से बंधी जामता है हुपाल उसका हाव पकड़कर खीच लाता है ।]

हुपाल—अम बोला तुम बाटा किडर है ?

बंधी—अम धपने पर बाटा है ।

हुपाल—अम दुमाच टसबीर कीबिया ।

शंकर—नाक काटूँया ।

कृपाल—(बंदी को घागे कर) इसकी ।

[बंदी कृपाल के घब मारना चाहता है, वह तिर मोखे कर लेता है ।
बंदी फिर फिर पड़ता है । बरतक तामी बचते हैं ।]

शंकर—(बंदी को ले जाकर बोर्ड के घागे कड़ा करता है) यहाँ बमकर
आये होभो ।

बंदी—(विभक्तिभाकर) क्या दुम भी टसबीर खीयेगा ?

शंकर—नहीं मैं एक तमाधा दिखाऊँगा ।

बंदी—डिफामो फिर ।

कृपाल—मीट बडिबाबाला डिफामा ।

शंकर—(कुस दूर आकर ख्योंही जसके ऊपर फेंकने को घुरा तालता है,
ख्योंही) ।

बंदी—घरे बापरे ! मयारा घौरट—(घबरलकर माफता है) ।

कृपाल—(बौड़कर बसे पकड़ लेता है) दुम बोला मधी मयारा घावी मेई ।

बंदी—होने टो कफटा ।

कृपाल—(बंदी को घाले कपड़े से जस बोर्ड के घाले बाँध देता है) ।

शंकर—(ख्योंही घुरा खेंकना चाहता है बंदी बोर्ड को लेकर ही घूम
जाता है) ।

मेजा—(घाकर जसे जोस देती है । कृपाल बोर्ड सीधा कर देता है । मेजा
बोर्ड के घागे कुस कड़ी हो जाती है) ।

कृपाल—ये ड ड ! क्या दुम इहाँ पर कड़ा होने माँयटा है ?

मेजा—हाँ ।

कृपाल—बिम्बपी से बेजार है ?

मेजा—हाँ ।

कृपाल—क्यों किबा कोई प्यार मेई कफटा ?

मेजा—मधी ।

कृपाल—(बौड़कर घुरा ताले हुए शंकर के बास जाता है) दुम क्या

करना माँगता यह ? मर जायना यह घोर !

शाकर—क्या परवा है ?

[दोनों कलाठन इधर-उधर बौड़कर चिल्लाते हैं—“पुसिस ! पुसिस !
घंकर घुरा कँकता है बिबली एक लख के लिए कुम्हती है—उस धँपेरे में बड़ी
बीर से सेबा खोजती है—“हाय !” शीघ्र हो जमाता होता है । सेबा जमीन
पर गिरी दिखाई देती है । बौड़ता हुआ हॉलेंकर आकर खून से लथ मथ सेबा
को उठता है । दोनों कलाठन घोर शकर भी वहाँ पर घा करते हैं ।]

हॉलेंकर—घंकर ! क्या कर दिया तुमने ? घुरा इसके बिस्स में घुस गया ।

घंकर—मेरा कोई कसूर नहीं यह खुर अपनी बमह से हट गई ।

हॉलेंकर—(उसकी नाड़ी बैज) नाड़ी बन्ध हो गई ।

शोबल-कुमार—(बौड़कर घाता है) मुझे माजूम भी यह बात ! तुम
कूनी हो । (पुकारता है) पुसिस ! पुसिस !

घंकर—मैं कूनी नहीं हूँ ।

हॉलेंकर—इसके हाथ में यह कँठा पचा है ? (लखा के हाथ से एक पचा)
लेकर पढ़ता है—“अपराध मेरा ही—सेबा ।” नहीं घंकर कूनी नहीं है ।

शोबल-कुमार—(उस कायज को लेकर पढ़ता है) ।

घंकर—(माथे पर हाथ मारता है) हा भगवान् ।

[बहाकों में गड़बड़ी घोर शोर]

[परवा मिरता है]

पात्र

गिरिधर

ज्योतिषी का मूल

सरोजनी

पलटू

परशुराम

ब्रह्मासुर

पद्मी १

पद्मी २

पद्मी ३

पद्मी ४

सर बिलेकनी

सैठ जारसोनी

सैठ मूलनी

मोहर

सका उप्यंत

क्रॉसवर्ड वपर



“मैंने हमारों की माय्य घोर हाय की रैलाघों की इपर को वपर कर दिया है।”

पहला दृश्य

[गिरिवर के सोने का कमरा । कमरे में घोंघेरा । मेज पर बड़ी-बड़बड़ार एक बिजलीघानटी किसी सीलबंद का घूँस । सरोजनी उठ गई है वह भीतर के कमरे में बिजली बजाती है और बर्तनों की खटर-पटर करने लगती है । भीतर की बिजली की रोशनी से चारपाई पर पड़ा गिरिवर दिखाई देता है । उसका मुँह मिहाण के बका है । काँसबर्द का भूत—सिर से पैर तक काँसबर्द की चौखटों से अफिर चारर छोड़े भीतर से बोलता है ।]

काँसबर्द का भूत—गिरिवर । सभी घों मिस्टर गिरिवर ।

गिरिवर—(मिहाण के भीतर ही से) हाँ-हाँ अपना मतलब तो कहो ।

भूत—मैं कहता हूँ तुम्हारे घर का बरबाद का मुना ही है और रात का बसत ।

गिरिवर—तो भाई, इस बिजलिये गिरिवर के पास कौबसी सोन की ईंटें रबी है जो उन्हें बिजलिये के लिए कोई इस घर में पुसन की मेहनत करेगा ?

भूत—मेरे भोके-भाँस बोस्त । मनुष्य कुल परिधम की तभी तो ठकबीर की उसकी सहायता करती है । अगर कहीं ठकबीर और ठकबीर का एका हो जाय तो तुम कहते हो ईंटें—महाँ बड़े हो चामे सोने के पहाड़ । किसी की बपीठी है क्या ?

गिरिवर—तुम्हारे अपना मतलब अपनाते हैं ।

भूत—इतरे की बीमल को बोका-बड़ी से इबियाने का नाम घालन है । अपने परिधम के मोठे फल के लिए ऐसे बरनाम अपना का इस्तेमाल क्यों करते हो ?

गिरिवर—तुम्हारा क्या मतलब है बी ।

भूत—मतलब तो तुम्हारा ही है—मैं तो फिर्त एक बहाना हूँ ।

गिरिवर—अच्छा ? ऐसी बात है तो फिर मुक्ति का क्या है । अब बरबाद

कुमा ही है तो या क्यों नहीं जाते भीतर ? घरम क्यों लप रही है ? या जायो
 बोस्त बरा पुग्हागे घबस बेककर तो भरोसा हो ।
 [क्वॉसबड का भूत जोतर या जाता है]

भूत—ओ या यया मैं ।

विरियर—अकिस तुमने यह मुंह क्यों डक रखा है ?

भूत—मेरे राब को मेरा बनानेवाला भी नहीं जानता इसलिय ।

विरियर—समझ गया ! समझ गया ! मिस्टर क्वॉसबड ! तुम तो मेरे बड़े
 पुराने बोस्त हो ।

भूत—ओ मेरा विवबाध करते ह मैं उन सबका ही बोस्त हूँ । मैंने सैकड़ों
 श्लोपशिवों को रातों रात महसूस में बहल दिया ।

विरियर—यह तो सब मूक मामूम है मेकिन—

भूत—सेनिन तुम्हें यह भी जानना पकरी है तीर छोड़नेवाला ही कभी
 न-कभी निजाम को बेबता है याल पर हाब रखकर ममसूब करनेवाला नहीं ।

विरियर—मैं बोरे मनसूबे करलवाला हूँ तो यह हर डाक से पशैमियों के
 हल कोम भेजता है ?

भूत—मज जायो सब का फल बड़ा मीठा होता है ।

विरियर—तब जब बड में बला बाडैना गया तब ?

भूत—मजते रहो भेजते रहो । बड तबकीर का विताप कमक उटया तो
 मय सूद के सब बकूल हो जायया । (जाते लपता है) ।

विरियर—तुम तो जाने लगे ! जब याए हो तो काई तबकीर बताओ कि
 तबकीर जाय पक ।

[भीतर के कमरे से स्त्री के चलने की आवाज सुनाई देती है]

भूत—ना याद, न तो मुझे कुछ मामूम ही है घोर न मैं कुछ बता ही
 लपता हूँ । (फिर जाने लपता है) ।

विरियर—तुम्हारा ममक उटया है याम खोल जाययी घभी वी जायो नहीं
 तो धीमती जी माराज हो जावैयी ।

भूत—मही जी ! (कमरे में चक्कर में हँडता है) । चक्की-सी चलती है

भीतरी कमरे की रोशनी के बुझने से रात पर बिलकुल छपेरा हो जाता है, काँसबर्द का मूत पायब हो जाता है। भीतरी कमरे में फिर उबाला हो जाता है।

गिरिधर—(सोते-सोते) नहीं मैं नहीं जाने दूँगा। (दोनों बाहों में सिहाफ की बर सैठा है) नहीं घान बड़ी मफिकल से हाप घाने पर छोड़ बोन देगा दुम्हें ? (बाएपाई पर जोड़ता हुआ जमीन पर गिर पड़ता है। उसके जमीन पर बिरते ही स्टेज में बुरा उबाला हो जाता है। गिरिधर अपनी पकड़ में सिहाफ को पाकर भौंसा है घोर पुकारता है) घरी सरोबनी जी। सुननी नहीं हो करा ? घीमनी जी। बड़ा बड़िया सपना देखा है। सफरीर पकड़ में घाई है इन बार। फोरन् जमी घाघो मोड़े को लामी में ही पीगना होता है। (जब भोबर से कोई बचाव नहीं मिलता तो सिहाफ बाएपाई पर जाल मेज पर से घलार्म कर्ताइ उठाकर उसमें चाबी है घलार्म बजाता है—'डन् डन्-डन्-डन् !')

सरोबनी—(भीतर से लौलिये से हाप-मुँह पोंछते हुई घाती है) हैं। यह हो क्या रहा है ?

गिरिधर—जब बहुत पुकारा घीर बचाव नबारब तो यह घतरे की बंटी बजानी ही पड़ी। लेकिन मैं कहता हूँ तुम भी कहीं ?

सरोबनी—दुपसखाने में घीर कहीं होती ?

गिरिधर—लेकिन घानेघासी बटगाएँ क्या पहले ही नहीं बोल उठनीं। यह इस बात का इसाह है कि जब हमारे हर कमरे में बिजली की घंटियाँ लप चायेँगी घीर एक ही बटन दवाने पर वे सब की सब बोल उठेंगी। तब दुसल खाना क्या तुम डाकखाने में भी होगी तो तुरंत ही जमी घाघीगी।

सरोबनी—(गिरिधर के हाथ से घड़ी घीमकर) क्या बच्चों की घी घाते कर रहे हो। बड़ी टूट जायगी घी ?

गिरिधर—क्या बड़िया सपना। साक्षात् कुबेर भी घाए वे बर देने को। मैंने कह दिया बिना मेहनत किए मुझे कुछ भी क्यूस नहीं। (जाल रखा हुआ घजबार उठाता है घीर उसे बिसाला है) यह देखो बँपर—यहना इनाम

एक लाख रुपया !

सरोजनी—तुम वैसी जोसी-जाली मछलियों को फेंसाने का बात !

विरिधर—घीर बह जो फोटो घाटी है वहाँ की ठसबीरें घसपी हैं ।

सरोजनी—कैकिन तुम्हारी फोटो तो नहीं घाई कोई घभी तक ।

विरिधर—बह नी घा बायपी पहले इनाम तो घाने दो । घीर में तो फो
तुम्हारे साब बिचबाकर भेजूंघा—घारी दुनिया को मानूम हो बाय कि ।

भाम्यवान् बोझा कौमला है ?

सरोजनी—मैं इस छुए की बीठ में घपनी फोटो देकर बदनामी क्यों करूँ.

विरिधर—इरबतहुएक का बाबा कर देना कोई ?

सरोजनी—कौन ?

विरिधर—बाँसबाई की कंपनीवाले घीर कौम ?

सरोजनी—मैं कहती हूँ इस काले बाजारी को कोई नहीं रोकता । घबर
सबनुच मैं ये इतने भारी भारी इनाम बाँटते हैं तो इनके पास क्या छोटी बचत
होगी ?

विरिधर—बुपो बुपो—तुम्हारी हर बीज पर घक करने की घारत नहीं
जायपी क्या ? (घबबाघर पड़ते हुए) देखो क्या बड़िया सीबा है ! इस स्पए में
तीठ हल ! एक स्पए में तीठ—तबा नीच घाने में एक घीर बैसे घाठ स्पए
में तीठ । घरी पचास का घयबा तो ऐसे ही हो गया । तुम नहीं न कहना
इस बार जकटी भारी बिजिनैस है । घब के ऐला तीर छोड़ता हूँ कि कौंसबा
बगानेबाके की दोनों घाँकों में घुस बाय । (बड़ी नभता से दोनों हाय जो
कर) देखी जो पनीघाईर घीर रबिस्टी का लख भी सब मेरे जिन्मे ।

सरोजनी—नहीं मेरे पास कोई कानी कीड़ी नहीं । घनी पूरा महीना घूत
की ठरह मेरे सिर पर बड़ा है ।

विरिधर—तुम्हारे वीर पड़ता हूँ सिर्फ इस स्पए ।

सरोजनी—बस वैसे भी किसके पास है ?

विरिधर—जरा क्याल तो करो तीठ हल जेब सकेने । मैं ऐला हिताब सया
कर तीखों लाहनें भर्कया कि लही हल बकर घाकर जलमें बँस जायेया । मैं कर

कहता हूँ तुम्हारे पास हैं। पास-पड़ोस में नहीं है माँग साधो। एक के बटुए में न हो बो-बार सखियों से टोन्गल पूरा कर साधो। यह सहयोग का बमाना है पहले कौन काम पूरा होता है ?

सरोजनी—(सिर पर हाथ रख कुछ सोचने लगती है)।

गिरिधर—जीवन और मरण का प्रश्न है ! बँधी बहिया कोठी में रहते थे। बाठहठों ने बोका दिया कि वह बँधा-बँधाया बाँध टूट गया। हमारी साँकों में बुल भौंककर उन्होंने बीबार में कमबोर मसाला लगा दिया। बाहर की दीप और पतस्तर कब तक रहती ? सरकार का हरजाना भरने में ही हमारा बीबासा निकल गया। इस टूटे और टपकते हुए मकान में जीवन बिताने को राजी हो तो मुझे फिर क्या कहना है ?

सरोजनी—हम जाने-कपड़े में कमी कर सेने मकान तो तुम्हें कोई बँडना ही चाहिए। तुम्हारे उस बाई साख के बाँध की तरह इस मरी बरसात में न जाने कौन-सी बीबास किस समय हमारे ऊपर गिर जाय।

गिरिधर—यही तो बात है जो कर्जा लेकर भी मैंने अंतर्द्वार के कूपन भरने की प्रतिष्ठा की है। जाधो कोई धर्म नहीं है। मैं कहीं से माँग साठा लेकिन जिस रूँह स मैं साखों का बोवा करता था—उससे बस खए उधार माँवू ? नहीं। जाधो से जाधो फिर ठाठीक था रही है। सीमाप्य किसी की प्रतीक्षा नहीं करता उसे तो बीड़ कर पकड़ सेना होता है।

सरोजनी—लेकिन—

गिरिधर—सिर्फ बस खए ! जिससे कहोगी वह दे देगा एक साख का हनाम ! सोचो तो सही दिल की धोट में पहाड़ ! नहीं यह सुनहरा धक्कर जो देने की नहीं है।

सरोजनी—लेकिन थाब उबल रही है।

गिरिधर—उबलन हो उस। पतटू तो है।

सरोजनी—बैबती हूँ घायब—(बली जाती है)।

गिरिधर—(कुर्सी में बैठकर अंतर्द्वार के कूपन में कुछ लिखना चाहता है, टिपटिपती खोलता है। पुकारता है) पतटू !

पलटू—(आकर) जी डाकार ।

गिरिधर—बाल ठेक करने के लिए यह अकरी है । पलटू क्या है यह ?

पलटू—(सिर झुकाकर एक कबे पर के भ्रमण की कूतरे लंबे दर रखता है) क्या है आपका मसलम ? फिर पत्रम करने लय आप ? मे कहता हूँ यह सपत्तर पढ़-लिखों की खतरनाक बीमारी है ।

गिरिधर—कुछ इच्छे क्या ? तु सिर्फ यहूतता बाल ठेक करने को क्या चाहिए ?

पलटू—बाल ठेक करने को चाहिए नेट्रोस ।

गिरिधर—चोड़ा या कोड़ा ?

पलटू—दोनों । चोड़ा होया तमी लो कोड़ा कामयाब होगा ।

गिरिधर—बोडा नहीं तु मया है वा भाव क्या ।

पलटू—(गिरिधर को बला बाला है) ।

गिरिधर—(एक कथ्या निकाल कर उच्छ्रितता है) हेड फौर म्नु टेल फौर टू । हेड चोड़ा टेल कोड़ा ! (कथ्या कहीं दूर चला जाता है) है कहीं मया ? (आरवाइ के लोके बुझता है) ।

सरोजनी—(बाली है) ।

गिरिधर—क्या समाचार है ?

सरोजनी—कूकन मुरा मर निमा ?

गिरिधर—(उत्तके हाथ से बस रण्य का मोद छीन लेता है) कपन मा . क्या देर लमठी है ? सिर्फ एक ही लाइन बायी है । चोड़ा वा कोड़ा ? बोली बहरी से ।

सरोजनी—क्या बोली ?

गिरिधर—उस रण्य के हेड में है वा टेल में बुँदी लमे बड़ी कहीं है ।

सरोजनी—(हिरान होकर) बँधे रण्य ? रण्य लो मुम मे चुके हो ।

गिरिधर—(मोद पर लजर कर) बँक यू ! बँक यू ! बहली लारीक को यह बचार चुका बुँदा मौर एक महीमे बार लो पर ही मे टकलान कून ज मरी । बुँदी लो घही उन रण्य को बह अेक रण्य है, ममी मेने उतले विश-गड किया ।

उसके एक तरफ चौड़ा दूसरी तरफ कोड़ा । देखो जिसके सहारे पड़ा है । चित या पट ?

पलटू—(बाय की ड्रे साजर मुनता है । जल्दी से ड्रे को मैज पर रखकर चारपाई के भीतर बुसता है) जो सगकर मैने देख लिया । (चारपाई के भीचे से स्पया निकाल साता है) सो यह है ।

गिरिधर—(भारतज होकर) क्या बा इसमें ?

पलटू—बा क्या यही है ।

गिरिधर—घरे में कहता हूँ इसमें पोड़ा बा या कोड़ा ?

पलटू—हूँ ! पड़ लिखे होकर क्या बात काठे हूँ बाय ?

गिरिधर—मैने इसका हेइ-टेल किया बा कैसे पड़ा बा यह ?

पलटू—मै नहीं जानता फिर उछाज लीजिए ।

सरोजनी—(बाय बनाकर) सो बाय पी लो ।

गिरिधर—(कुछ सोच विचारकर) घण्टा, इन दोनों उँवमियों में से एक को घृ लो ।

सरोजनी—(दुश्चकिचाती है, फिर हँसकर एक पेंगली पकड़ लेती है) ।

गिरिधर—घा ड ड बा ड घ ! घाखिर में पोड़ा ही निकता । (कूपन में लिखता है । फिर कूपन में पढ़कर) बीमारी घबसर ऐहा कर देती है ।

पलटू—कंसा कर देती है ?

गिरिधर—बीमा या पीमा ? चित बीमा पट पीमा ! (स्पया उछामता है—धीनों स्पए की तरफ धौकते हैं) पट ! पट ! पट—पीमा ! (कूपन में लिखता है) बस घब साइन का घाखिरी कय्य—(सरोजनी से) नंबर एक बचन, नंबर दो बटन । सोनो क्या लिखूँ ? जो कहीयी नहीं लिख दूँगा ।

सरोजनी—संकेत क्या है ?

गिरिधर—इसका टूटना घण्टी बात नहीं ।

सरोजनी—बटन का टूटना घण्टी बात नहीं ।

गिरिधर—बटन टूटा तो फिर घग जायया बचन का टूटना घण्टी बात नहीं ।

गिरिधर—पक्का खुद खो पड़िगरी (घड़ी देखकर) मतीजा घाने ही वाला है। (खिन्न मुद्रा है। उसमें घर्ररर घर्ररर की भाषाओं घाठी है) यह क्या ही रहा है ?

परमुराम—कुछ मीसम की खराबी—या रेडियो में कोई कसर—

गिरिधर—इसकी पूजा नहीं कर सकते ? सरोजनी रेजी !

[आवाजक रेडियो बीतने लगता है— "कॉन्सर्ट नम्बर ए तीन ली आवन का रिजल्ट नोट कीजिए—एक-एक-एक एक, दो-दो-दो एक-दो एक-दो, एक-एक, दो-दो-दो।" दोनों पति-पत्नी कापजों में लिखते हैं। रेडियो बन्द हो जाता है।]

परमुराम—है भगवान् ! तेरी बय हो ! बाबूजी मैंने बड़ी सच्ची तयव से बय किया है।

गिरिधर—ठहरो पड़िगरी घन्ती कोई बात नहीं। (निष्प्रिय झोलकर) लो सरोजनी पहले तुम घपना हुन मिलाघो फिर मैं घपना बेक करूँगा। (कापज में से पढ़ना है) एक-एक-एक-एक दो-दो-दो एक-दो एक-दो—सरोजनी—ठहरो जल्दी मत करो।

गिरिधर—(बेसब्री से) इतना लो मिला न ?

परमुराम—मदराघो नहीं सब मिल आम्बया।

सरोजनी—(पढ़ती है) एक-एक-एक—

गिरिधर—तुम लीघो कहीं तक पढ़ोगी। मुझे पढ़ने दो। (पीरे-पीरे पढ़ता है)—एक—एक—एक—एक दो—दो—दो एक—दो एक—दो, एक—एक दो—दो—दो।

सरोजनी—(झुपी से उल्लसकर) मिल गया !

गिरिधर—सब बिन क्या ? घोल करेवट।

सरोजनी—घोल करेवट !

गिरिधर—हाथ मिलाघो ! (दोनों हाथ मिलाते हैं)।

[परमुराम भी हाथ बड़ाना है मिलाघे की]

गिरिधर—(घपना हाथ घींच सेता है) कूनन भाले में कितनी मेहनत

की संवे ?

सरोजनी—धीरे उनकी फीस बूटाने में वहाँ वहाँ मही जाता क्या मुझे ?
गिरिधर—(सरोजनी के मुँह पर हाथ रखता है) ।

परशुराम—धीरे जो मैंने इन पर दानीकर महाराज का यवा साख खप पड़ा है ?

गिरिधर—देखिए पंडितजी से बिचाता के लेख को मानता हूँ जिस तरह वह घटल है ऐसे ही यह मेरे सिखे कपन भी । म इनको साख महुर भगाकर एक लिपफ में रखता हूँ । क्या प्राय इनके ऊपर पाठ पढ़कर इनके किसी ख ने का कोई घबर बरल सकते हैं ?

परशुराम—(सोच बिचार में पड़ जाता है) ।

गिरिधर—ठहरो—इनाम तो या जाने दो तुम्हारी पूजा भी कर बी बायगी । सरोजनी अब तुम बोनो से मिलता हूँ ।

सरोजनी—(फड़ती है) एक—एक—एक—एक दो—दो—दो एक—दो एक—दो एक—एक दो—दो—दो (बसों से घाबिरी प्रबू को सही कर) नहीं एक ।

गिरिधर—ठीक—ठीक बोनो घाबिरी संक क्या है, दो या एक ?

सरोजनी—दो । दो ही है ।

गिरिधर—(उसका कागज लेकर लम्बुष्ट होता है) प्रोह ! तुमने तो धमी बिल तोड़कर रख दिया था । (फिर एक बार सब कायजों को मिलाकर खुश होता है उद्वलने लपता है) धान करेकट सॉस्पुशन । (नाचने लपता है) एक—एक—एक—एक दो—दो—दो एक—दो एक—दो एक—एक दो—दो—दो । प्रोह ! मेरा भयबाग जानता है—मैंने फिटने बमीन-बासमान एक किए ससके लिए । या ही क्या घम में एक साख बनया ।

सरोजनी—धीरे भी तो किसी का सही होगा ।

गिरिधर—नहीं होगा ? बिलकुल सही किसी बिरसे ही का होता है । मान लो एक का ही भी क्या तो पचास हजार क्या कम है । समाम बिरही घर पीर लैनाकर बाएँ-पिऐमे धीरे भीज उड़ाएमे ।

करो ये मिस्टर बबालकर घाय है हमारे यहाँ घोर दुःख मारता भी तो—
 बबालकर—बेक यू बह तकलीफ न कीजिए घाय में तो जाना बाकर
 घाय है। (संभरा ठीक करते हुए) रेडो ! बन्दू !
 गिरिधर—नहीं नहीं घबो जम्बी क्या है ? घबो घरोजनी घाय एहने
 बो—तुम घा बाघो ।

बबालकर—पूरा सही हम कौले मेर दिया घायने ?
 गिरिधर—मेरे बिभाग की टारीफ ।

बबालकर—(नोट-बुक में लिखते हुए) चार-पाँच सवाल घोर कर्बना
 बस । घाय क्या समझते हैं किसी घोर का भी पूरा सही हम होया ?
 गिरिधर—इरयिज नहीं होगा ।

बबालकर—बवो ?

गिरिधर—मैने मंत्र की ताकत से इस हम को पाया ।

बबालकर—घाये को फिर पा सकोवे ?

गिरिधर—ग्वावे लामब नहीं करना ।

बबालकर—एक लाख रुपया बबालकर पा लेने की खुशी तुम्हारा बिल घोर
 बिभाग सहन कर सेगा ?

गिरिधर—एक लाख के बाटे की चोट भी सह सका हूँ । नोटिया बाँच के
 टेके का तकमान मैने मकेसे मरा घा ।

बबालकर—(नोट-बुक में लिखता है) ।

गिरिधर—घरोजनी ।

घरोजनी—(डूसरी लाड़ी पहनकर घायो है) क्या है ?

गिरिधर—बड़ी डेर लगा बी तुमने । मे फोटो खींचने को घाय है । (बबाल-
 कर से) कुछ घोर प्रथमा है ?

बबालकर—बेक यू घब कछ नहीं । (जाने लयता है) ।

गिरिधर—(जैसे रोकर) फोटो तो उतारो ।

बबालकर—मौठी ।

गिरिधर—सही हम पैरा करने में हम दोनों की मेहनत है ।

बबालकर—काई डर नहीं । (कैमरे का कोकस ठीक करता है) रेडी !
बम् टू !

[गिरिधर कुर्तों पर बैठकर सरोजनी को अपनी बगल में बाँधा करता है]

गिरिधर—(प्रधानक बीच ही में उठकर) ठहरो मिस्टर, घन्टी बज एक
कसर रह गई है । (सरोजनी को कुर्तों में बिठाकर स्वयं उसकी बगल में बाँधा
हो जाता है) ।

बबालकर—(कोकस ठीक कर कैमरा खटकाता है) वेक यू ! (सिर
का टौप उतारकर सिर झुका जाता है) बाइ-बाइ !

गिरिधर—घरे मिस्टर यह तो बताओ कब छप जायगी यह तस्वीर !

बबालकर—(नेपथ्य से) घन्टी रात ही रात में ।

गिरिधर—(सरोजनी का हाथ पकड़ खबरिस्तो उसे धी मचाते हुए—) बम्
बम्-बम् बम् टू-टू-टू बम्-टू बम्-टू बम्-बम् टू-टू-टू । एक साख का बंपर
मारा ! !

[परबा गिरकर पड़ता है और एक रात का व्यतीत प्रकट करता है ।
दूसरे दिन सुबह उड़ी कमरे में गिरिधर सोया हुआ है । उसकी पत्नी दूसरे कमरे
में है । बाहर से अकबालवाला बिस्मताता है । "बाबू गिरिधर क बंपर मारा—
एक साख टपक का इबाम !" गिरिधर धीरे धीरे मरते हुए उठ जाता है । फिर
अकबालवाले को बुलाता है ।]

गिरिधर—सरोजनी ! सरोजनी ! मैं समझ रहा था मैंने फिर सपना
देखा—यह तो ठीक सचार्ई है ।

[बाहर से कोई दरवाजा खटकाता है]

कई पड़ोसी—(बाहर से) बचार्ई है ! गिरिधरजी बचार्ई है ! दरवाजा
तो खोलो ।

[गिरिधर दरवाजा खोलता है । कई पड़ोसी हाथ में एक-एक अकबाल लिए
आते हैं और गिरिधर को घेर लेते हैं ।]

सब—बचार्ई है बचार्ई है !

पड़ोसी १—(गिरिधर की पीठ ठीककर) बाहू दोस्त ! पूरा एक साख !

केते ही धकेले ! साबाब !

पड़ोसी २—कब मूर्ख कब मरत और कब भेबा किसी को पता भी नहीं दिया ।

पड़ोसी ३—हमें तो बहुत खुशी है—हमारे मुहल्ले में तो धाया एक साब का इनाम । तार धाया या नहीं ?

पड़ोसी ४—तार धाने में क्या रखा है धर ? साधात प्रखवार में नाम निकल गया फोटो खप गई ।

[प्रखवार खोलकर सब उसे फोटो दिखाते हैं]
गिरिधर—हाँ भाई सब धाप लोगों की मनमगताइत है भयवान की कृपा है ।

पड़ोसी १—मेरी समझ में तुम्हें पूरे का पूरा पैसा किसी विभिन्न में जमा देना चाहिए कि उसकी डिफाबत और बूढ़ि हो ।

पड़ोसी २—और हम परीब पड़ोसियों को काम मिल जाय ।

गिरिधर—मैं तो भाई फार्म लोनने का निचार कर रहा हूँ तैयार हो तो एक-एक कुदाली के बूना सबके हाथों में ।

पड़ोसी ३—हम तो पड़े-निकल हैं ।

गिरिधर—तो कुदाल से हकक ही निकलना परती पर, मतलब जमीन के खुद जाने से है । लेकिन पहले रुपया तो धाने दो ।

पड़ोसी ४—क्यात रखना हमारा ।

गिरिधर—बहर ।

[चारों पड़ोसी जाते हैं । घर बिलेकड़ी, सैठ बुरसेठजी, सेठ नूतजी का धाना—हर एक के हाथ में एक-एक प्रखवार है ।]

लोगों—मुबारिक हो गिरिधरजी ।

गिरिधर—इतने बड़े लोन को बहर की लड़क से मुजरना भी पाप समझते थे धान मेरे बर पचाटे हैं बग्यमाय । इत नम्बी पत्नी के टूटे हुए मकान में जमीन पर बिछाने को जहाँ कोई बोट भी नहीं क्या स्वागत करके में धानका, धान लेकिन मनवान् ने मेरी मुन ली ।

सर बिलिङ्गजी—घनी जिरगी में ब बड़ा-बड़ा तो सने ही हुए हैं। बिलिङ्ग खाफे खाफे आदमी का काँच की बोतल की तरह जैसा भीतर जैसा बाहर।

सेठ कुरसेठजी—बाह सर बिलिङ्गजी ने क्या बात कही। गिरिधर जी अब घापकी मरिचकों पार हो गईं। वह जो काले रबिस्टर में घापका नाम बड़ गया था सर बिलिङ्गजी उसे बहूँ से खारिज करा देंगे और फिर घापकी ठेकेदारों को पड़ेगी।

गिरिधर—सेठजी—

सेठ कुरसेठजी—घनी ये घापको तनाम परमिट भी दिला देंगे।

सेठ मूलजी—धीर जो सेबा मुझसे हो मैं भी तैयार हूँ।

गिरिधर—सब घापकी क्या है। क्या खातिर कहें मैं घापकी? कहीं घापके बरजे के लामक महीं घापको बिठाने की भी तो बगह नहीं। राबसाहब बंगला घनी किराए पर उख या नहीं?

सेठ मूलजी—उसमें तो मैं खुद भी जाने की सोच रहा हूँ। क्यों घापकी क्या मंछा है?

गिरिधर—जब तक मैं अपनी कोठी नहीं बनवा बैठा मुझे किराए पर क्यों न दे दें घाप उसे। किराया क्या है उसका?

सेठ मूलजी—बड़ी खुशी से घाप घाब ही बने बायें। किराया भी होगा देखा कामका।

सेठ कुरसेठजी—धीर एक राब मैं भी बूंगा जब तक घाप कोई ठीक-ठीक बिलिङ्ग घोब-समझ नहीं है। तब तक घाप अपना तनाम क्या हमारे बैंक में रख दें। बहुत मुनासिब सूब हम घापको देते रहेंगे।

गिरिधर—सेठजी घनी कहीं से रख हूँ, स्पष्ट के धाते-धाते एक-घाब नहींना तो सब ही कामका।

सेठ कुरसेठजी—धरे तो बिठना बाहो बस पाँच हजार हम से के लो। हमारा धीर काम ही क्या है—खुदा देना या केना।

गिरिधर—(हाथ जोड़कर) घनेक बग्यबाब हूँ घापकी। (धर-धर बौड़ता है) क्या खातिर कहें मैं घापकी? खरीबनी! सरीबनी! कहीं छिप

पईं तुम ? एक-एक मिलास कोरा चाय का ही खाती ।

सर बिलेकजी—कोई परवा नहीं धब नए बंगले में ही खातिर हो चायनी ।

गिरिधर—घयसाहब तो मैं ठी घाब ही भापके बंगले में जाने की तैयार हूँ ।

सेठ मूलजी—बड़ी खुशी से ।

गिरिधर—घीर (बंकचाला की तरफ हाथ जोड़ता है) ।

सेठ कुरघोठजी—हाँ-हाँ मैं अपने एजेंट को लिख दूँगा भापको जिसना दरया चाहिए लिखा-पढ़ी कर मैं लीजिए । जब भापका दरया घा रहा है तो उसके साथक भापको अपना रहम-सहन बल्की-से-बल्की बना ही सेना चाहिए ।

सर बिलेकजी—बेक यू ।

[तीनों जाते हैं, गिरिधर बड़ी नज्जता से हाथ जोड़ता हुआ उन्हें बरखाने तक पहुँचाता है ।]

गिरिधर—(फिर भाबता है) बन्-बन्-बन् बन् ! दू-दू-दू ! बन्-दू, बन् दू बन्-बन् दू दू-दू ।

सरोजनो—ज कहती हूँ पाब-पड़ीसी क्या कहेंगे ?

गिरिधर—धब कोई कुछ नहीं कह सकता बँके की कमी सब कुछ कहलवा लेती है घीर जब पैसा हो जाता है तो इंसान के समान धबपुण भी बरि के बरबों की तरह से खूबसूरत जान पड़ते हैं । देखो तीर के निघाने में बँछे ही कैसा जाटा नकसा बबन नवा । ये पहर के बड़े-बड़े बोग इनकी मोटर कमी इबर से घाती थी नवा ? घाब पैटी सम्पर्वना करने जाए है । असो राब साहब अपना बँगला दे देने को कह नए हैं । साधान पैक करो । पैक धप । पैक धप ।

सरोजनो—कैकिन कुनियों की मजदूरी ।

गिरिधर—सब बेक से मिल चायनी ।

सरोजनो—कैकिन पड़से मैरे खेबर । मैरे कपड़े । तमी में बर से बँद बाहर निकालूनी ।

गिरिधर—सप्या बड़से तुम्हारा ही नंबर ।

[बरदा गिरता है]

तीसरा दृश्य

[बंगले में विरिधर की बैठक । अथ-दू डेढ़ लखी हुई बेंचक, पेज-कुर्ती, घोड़ा पैर, बरबानों और छिड़कियों में बरबे । कोनों में ऊँची तिपाइयों पर फूल बाग और स्वप्नपूर्व रेडियो अंगीठी की कानल में तट्ट-तट्ट की लजावट की चीन्नें । दीवारों पर बड़िया चित्र । एक कोने में पियानो, वहीं पर बड़िया रैसनी फातरदार घोंडवाला बिजली की बत्ती का ऊँचा स्टेण्ड । खंयान में पूरी मेम बनी पियानो पर सरोजनी बँटी जँवनिमाँ बना रही है पात ही डाइ बेंच में बड़ा हाथ में पाइप का घुर्पा झौड़ता हुआ विरिधर उसे सुन रहा है । बरसुराम झले है ।]

परसुराम—अम हा बाता की अम ही ।

[सरोजनी धरमाकर हाथ रोक गिती है]

परसुराम—बाह ! बहुत बड़िया ! बिलायती बाजे में यह हिम्मुस्तामी मँरनी क्या अलम बना रही हो । मैं बिलाक हूँ हिम्मुस्तामी बाजे में मँरनेकी मँरनी बनाने के बेकिम तुमने हाथ रोक क्यों लिया ?

विरिधर—अभी तो सीखना शुरू किया है ।

सरोजनी—(पियानो पर से घट जाती है) ।

बरसुराम—बड़ा बड़िया बंगला है क्या आपने खरीद लिया ?

विरिधर—जहाँ अभी तो किटाए पर लिया है ।

बरसुराम—आपको तो इसे मोल ले लेना चाहिए था किटाए बर सेना आपकी सोभा के बिच्छ है ।

विरिधर—होते-होते यह भी हो जायदा महारथक ।

परसुराम—हाँ आपने कहा था । आप बड़ बमरिना है लकी तो इतनी बाया आपके पात अपने-आप आकर जमा हो गई ।

विरिधर—मैंने क्या कहा था बँवित बी ?

परसुराम—(सरोजनी से) आप भी कुछ मरई क्या ?

[सरोजनी भी कुछ मार करने लगती है]

बरसुराम—अभी आपने बीघाला और अनावातक के लिए कुछ बग्य देने

को कहा था।

विरिपर—लेकिन घमी जरा साचारी है।

परधुराम—हूँ! साचारी कैसी? आपकी सारी कामापकट हो गई। बाय-बमीचा बंधन-ठरनीपर मौकर चाकर छपी-कटि सूट-बूट मोटर पैडियो कमब-सिनैमा—घमी कुसु तो आपके मौजूब है—फिर साचारी कैसी? मेरी समझ के बाहर की बात।

विरिपर—घमी पंडितजी बहु सब उचार ऋडिट लोन प्रोनोट इमस्यास मेंट बाबे घौर विरधात का मामला है। बाबा है मेरा। आप बिस्वात कौबिए, हुँगा।

परधुराम—लेकिन घमी क्यों नहीं?

सरोजनी—घमी रुपया नहीं आया है।

परधुराम—इस-बारह बिज तो हो गए।

विरिपर—बस सब घाटा ही होगा।

परधुराम—तार भी नहीं आया? तार को तो फौरन ही धा बना चाहिए था।

विरिपर—तार भी घाटा ही होगा कहीं कुछ पते में गड़बड़ हो गई होगी।

परधुराम—हाँ बी सहर के सबवार में तुम्हारा नाम भी छप गया फोटो भी छप गई फिर छक करने की क्या आवश्यकता है? बस घाटा ही होगा तार भी घौर रुपया भी। आ तार में ही रुपया धा बाय। पसदू कहाँ है?

विरिपर—मैंने बता ती दिया था आपको हम उसे निकाल चुके।

परधुराम—उसके भाग में कहाँ होती मह कौटी? अण्डा बीज ही घाटेना—बूब बड़ा नेक काटकर रख देता मेरे लिए। (बला जाता है)।

विरिपर—(बड़ी गम्भीरता से आपा पकड़ सोचे में बैठ जाता है, पाइप सेब बर रख देता है) बंदिठ परधुराम ने पसदू का नाम लेकर मन में भापी घंका का रासब खड़ा कर दिया।

सरोजनी—दिल तो मेरा भी गड़बने लया है आपकी कैसी घंका हो गई?

विरिपर—गहले तुम बताओ।

सरोजनी—बसटू ने कोई भूल तो नहीं की ?

विरिचर—लेकिन हुमेदा नहीं तो हुनारे कूपन घीर मनीघाईर मेबता बा ।

सरोजनी—घीर तुम्हारे हसों में दर्जनों भूमें हो जाती थी उसके मेबने में कमी कोई भूल नहीं हुई ।

विरिचर—कोई उत्साह बढ़ाईबासी बल करो सरोजनी । पियानो बजाओ जसमें ध्यान बँट जायेगा ।

[सरोजनी पियानो पर बैठकर उलकी आँसुओं के ऊपर जँबलियाँ बीजाग लपटी है ।]

विरिचर—(सरोजनी के पास जाकर खड़ा होता है) कोई थक्का पीठ बजाओ । मड़कड़ा रही है तुम्हारी जँबलियाँ इन परतों पर !

[एक मौकर बड़ धक्का से प्रखवार जाता है]

मौकर—सरकार बड़ धक्का घाया है ।

विरिचर—(उसके हाथ से प्रखवार निकर सीधे पर बैठ जाता है घीर प्रखवार पढ़ने लगता है) ।

मौकर—(जाता है) ।

विरिचर—(प्रखवार पढ़ते-पढ़ते चीक बढ़ता है) सरोजनी !

सरोजनी—(पियानो छोड़ विरिचर के पास जाती है) क्या हो गया ?

विरिचर—(दोनों हाथों में प्रखवार पकड़ हुए कमरे में हजर-अपर बीड़ता है) मार जाया ! मार जाया !

सरोजनी—क्या हो गया ?

विरिचर—इनाम नहीं मिला ! (प्रखवार खेंक देता है) ।

सरोजनी—दुम तो कइते ने एक भी मलती नहीं है ।

विरिचर—इस विमकुल ही सही है । पियानो । (प्रखवार उठाकर पढ़ता है) ।

सरोजनी—(हल की मकल उठाकर उलते मिलाने लगती है) ।

विरिचर—(रोने के स्वर में) बम्-बम्-बम्-बम् ! टू-टू-टू ! बम्-टू ! बम्-बम् ! टू-टू-टू !

सरोजनी—इस तो बिलकुल सही है। फिर बात क्या हो गई ?

गिरिधर—बलदू ने बटला बलट दिया !

सरोजनी—कैसे ?

गिरिधर—बहु बस एवए घोर जलका मनीषार्डर कभीसम दोनों का गया।

सरोजनी—उसने रसीद तो बी बी।

गिरिधर—बहु विरु रजिस्ट्री की बी।

सरोजनी—मनीषार्डर की रसीद तो वही को भेज देनी पकड़ी है न ?

गिरिधर—लेकिन उसने नहीं भेजी।

सरोजनी—तो घब क्या होया ?

गिरिधर—वही मेरा भी सवाल है घब क्या होया ?

सरोजनी—धीर घब हम उस गरी मनी के पकान में भी नहीं का सवत
सबमें कोई दूसरा किचएदार था गया है।

गिरिधर—बहुं जाकर भी तो इन कर्मचारों से पीछा नहीं छूट सकता।

सरोजनी—मैं पूछती हूँ फिर कहीं जायेंगे ?

गिरिधर—नाब में खेती करने अधिक धन उपजायेंगे।

सरोजनी—धीर मही ?

गिरिधर—दिवानिए की बरखास्त।

सरोजनी—मैं पहले ही धापस कहती थी। तुम्हा न बड़ाइए। म्पेवही ही
मैं बने रहिये, बंगलों के टपने न देखिए।

गिरिधर—तो मेरा क्या कसूर। इन लोगों ने मुझे उधार क्यों दे दिया ?

सरोजनी—उधार देनेवाले का नहीं कसूर नाबनेवाले का है। धीर कसूर
मुहार ही है, मैं बराबर तुमसे कहती रही।

गिरिधर—कसूर सब कुछो तो मिस्टर बवालकर का है, उजने क्यों मेरी
दोटा धीर मेरे इनाम की खबर खबरारों में छपा थी ? इसी से तो मे तनाम
तीन बोले में पड़ एए धीर मुझे उधार मिल गया।

सरोजनी—मैं नहीं मानती यह बात।

गिरिधर—तो फिर यह गीसामा धीर धनाबालय के बंदिब थी हूँ किगुने

मिस्टर बवालकर को बोले में बात दिया ।

सरोजनी—में कइती हूँ तुम अपना कसूर क्यों नहीं समझते ?

गिरिधर—मेरी एक भी पलटी नहीं पूरे सोलहों लपक मेरे सही से मलती है पबटू की जो मनीघाईर का खयाल था पया धीर बिना मनीघाईर की रसीद के मेरी पंढी इन्वेसिड हो गई । (माथे पर हाथ मारकर फिर लोके पर गिर जाता है । नीकर को घाता हुमा देख कैहरे पर बलाबली खुशी प्युनकर खड़ा ही जाता है) ।

नीकर—(घाकर) सरकार । बेरा खानसामा माली डाइबर, अपराधी धाया—समी लोम अपनी-अपनी तनखा के लिए कह रहे हैं ।

गिरिधर—घोह वस । प्रकाशेईष्ट साहब प्राए वा नहीं ? ये-सीट बमाकर जाने को कह दो जगसे ।

नीकर—बो हुकम । (जाता है) ।

सरोजनी—लेकिन तुम उनकी तनखा कहाँ से दे सोमे ?

गिरिधर—बैकबालों को जब तक पया नहीं चल जाता—वै मेरे बैक का पालर करेबे ही ।

[एक मोठी फाइल बगल में दबाए प्रकाशेईष्ट का धाया]

प्रकाशेईष्ट—ये-सीट सीमार हूँ सरकार ।

गिरिधर—यह मोठी फाइल किसकी है ?

प्रकाशेईष्ट—दर्री ज़ेपर, बाशिब फँसली करनीचर मार्ट धंवेवाला रोटीवाला फलवाला ब्येबर, हमबाई, बनिबा बयैरह-बगीरह के बिल हूँ ये सब ।

गिरिधर—मौल राइट कुम टोटल कियता है ?

प्रकाशेईष्ट—तीन हजार पाँच सौ बहतर स्पए घाठ घाने । यह बैक बुक है । (बैक बुक देता है) ।

गिरिधर—(बैक निकालकर प्रकाशेईष्ट को देता है) लो धबका क्या दे दो ।

[प्रकाशेईष्ट खामबाल बैकर जाता है]

सरोजनी—बेक सीट थावा तो ?

विरिचर—स्पष्ट मिल भी गए तो कितने दिन तक यह मेरा बिना रह सकेगा ? इसलिए जलो सरोजनी बस रहे धमी ।

सरोजनी—कहाँ ?

विरिचर—आकाशा आका बकर्यो बनावट धीर बिलास की इस दुनिया के कहीं दूर ! जाओ कोई साथी साथी पहन आओ । (सरोजनी जाती है ।
विरिचर एक बरबा लौकिक बदन में लपेट लेता है । कोट-वेस्ट बतारकर केंक देता है) ।

[बाहर से द्वार बहकवाने की आवाजें]

पहली आवाज—मोटर की फिस्ट बीचिए ।

दूसरी आवाज—बीमे की फिस्ट बीचिए ।

तीसरी आवाज—टेबिलो की फिस्ट बीचिए ।

चौथी आवाज—विवानो की फिस्ट बीचिए ।

विरिचर—(हफ्त-उधर खरेदान होकर बीकता है । फिर ज्यो आवाजें सुनवाई जाती हैं) सरोजनी जाती करो ।

सरोजनी—(एक साथी साथी पहनकर जाती है) ।

विरिचर—(उत्तका हाथ पकड़कर) जलो पुनसकाने की राह जाय जसे । कामनाओं को बड़ा देने का मही महीजा है ।

[दोनों जाती हैं । दर बिलेकजी, सेठ कुरसेठजी और सेठ मुलजी जाती हैं ।]

सेठ कुरसेठजी—विरिचरजी ! जलो विरिचरजी कहीं गए ?

दर बिलेकजी—रोज बालते ही आ रहे हैं न बंजले का एबीमेंट करते हैं, न कुछ पेशमी ही बेटे हैं ।

सेठ मुलजी—किकर क्या है ? इनाम का क्या करते ही बेटे हैं । (प्रसन्न-धर नजर पकड़ती है) रिजस्ट थावा तो जाल पकड़ा है इतने । (प्रसन्न-धर बड़कट) एक नाम का बंपर ! जाल करेस्ट कोई नहीं हो यकतियों पर बार आवनियों में बंट गया इनाम । लेकिन इनने भी विरिचर का कहीं नाम नहीं ।

सर बिलेकजी—लोकल अखबार में किसी ने इन्हे एप्रिल फूस बना दिया ।
 कोटो छापकर ।

सेठ सुलजी—लेकिन मूरख तो हम बने ।

सेठ बुराहोजी—गिरिधर जी ! मजी गिरिधरजी ।

[कोई जबाब नहीं मिलता । परबा गिरता है]

प्राप्त

प्रद्योत

प्रबन्धी के महाराज

बातबरता

प्रबन्धी की राजकुमारी

श्रवण

वत्सराज

कुम्हरी

प्रबन्धी की एक शांती

प्रहरी बाग्यी मुत्तबद, हूत और संबिक

द्वेष—प्रबन्धी का राजभवन और धिया का तट

काल—एक मास

बन्दी—घापके मतलब की सच्चाई बता चुका ।

प्रद्योत—इसकी नंवा म्पेरी लो ।

गुप्तचर—(उसके ग्रंथ और बरतों में खोलकर) कुछ नहीं महाराज केवल हमारे ही राज के दो-चार कार्यालय है इसकी घंटी में ।

प्रद्योत—इसे ले जाकर घनी बन्दी-गृह में डाल दो कि यह सोच-विचारकर कम प्रभाव समय तक सच्चाई प्रकट करे । अगर यह घपनी ही हठ पर जमा रहा तो कम की इसे ठक ठक कोड़े लगाए जायें जब तक यह घपने स्वामी का नाम न खोल दे । इसकी इस बीबा को राब-मंडार में जमा कर दो ।

[गुप्तचर बन्दी को लेकर जाता है एक डूठ जाता है]

डूठ—महाराज की जय हो । बस्तराम उदयन बन्दी कर लिए गए ।

प्रद्योत—वह कठिन सामना कैसे इस छत्र समाचार में सिद्ध हो गई ?

डूठ—महाराज घाप इसे हमारा कोशल कहिए या उसकी दुर्बलता ।

प्रद्योत—दोनों बातें बताओ ।

डूठ—घाप जाबतै ही है उदयन को सिकार खेलने का बहुत बड़ा व्यक्त है । हमने एक बनावटी हाथी बनाकर संख्या समय उसके घिबिर के पास बंयस में छोड़ दिया । हाथी के भीतर हमने घपनी सेना के चुने हुए भीर खिया दिए । दूर से जब हाथी ने धमक किए तो उदयन एक-दो साधियों का लेकर उसके पीछे धर-बंधान कर चल पड़ा ।

प्रद्योत—इतनी सरलता से कैसे गया वह तुम्हारे खान में ?

डूठ—अनुप्य के पीरों से चलकर वह हाथी जंगल में बहुत दूर घंय गया । रात के बढ़ते हुए घंयरे में बस्तराम को हमारी अनुपाई नहीं दिखाई दी । जब वह घपनी छबनी से बहुत दूर निकल गया तो उस हाथी का घंय-धर्म्यन टूट-टूट कर हमारे सैनिकों में बरझ गया । हमें उस घमिमानी को बन्दी बनाते कुछ भी डरल लगी ।

प्रद्योत—कहाँ है वह ?

डूठ—हमारे लाल । घाडा ही तो वही कल्पित करे ।

प्रद्योत—प्रबन्ध ।

[हुत आकर एक सैनिक के हाथों में शर्ही बल्लराम को लेकर जाता है]

उद्यम—(बड़ी मर्चाली दृष्टि से प्रद्योत को देखता है) ।

प्रद्योत—इन बीजे हाथों पर तुम्हारी दृष्टि नीची नहीं है धरमी ?

उद्यम—कारण ही क्या है ? बोल से बाध लिया गया है क्या यही तुम्हारी बीरता और राजनीति है ? क्यों मेरी दृष्टि नीची हूँ ?

प्रद्योत—धीरे तुम्हारी बीरता तथा राजनीति यही है कि तुम बिना प्रयोजन ही मेरे राज्य की सीमा बढ़ाने बह पाए ?

उद्यम—कौन बड़वा है ? मैं धामेट के लिए धार्या हूँ और वे विरिपर्वत किले के अधिकार में नहीं है । किसी बिगड़ी ने झूठा समाचार दे दिया होगा ।

[एक सैनिक बड़ी बीला लेकर जाता है]

सैनिक—महाराज यह बीला यही राज मंदार में जमा होकर धाई थी । मंदारी ने इसे स्वाय से देखा तो इसमें महाराज उद्यम का नाम बहा गया । उन्होंने इस सूचना के साथ बह धारकी सेवा में भेजी है ।

प्रद्योत—(बीला में नाम पढ़कर) हाँ, यह तो स्पष्ट ही है । इसके स्वामी भी प्रयत्न करें हैं । (उद्यम से) यह बीला तुम्हारी है ?

उद्यम—धीरे कितकी हो सकती है ?

प्रद्योत—तब तुम्हारी बीरता की बह दूसरी समी है ।

उद्यम—इसमें कोई संशय क्यों हो ? धकेले धान का कोयल ही क्या बीरता है ? धारण की क्या कोई बस्तु ही नहीं ?

प्रद्योत—रात को चोर की प्रीति बीला बनाना यही तुम्हारा धान्य है क्या ?

उद्यम—क्या मैं दृष्टिके में या का धीने तुम्हारे सेवकों को पुन दे रही थी ?

प्रद्योत—क्या क्या बन्दी नहीं हो ?

उद्यम—कैकिल तुम्हारी प्रत्येक धनीति से विभ्रंय हूँ ।

प्रद्योत—क्या धनीति है मेरी ? किसी के प्राचार में पुसकर रात को बीला बनाना ही क्या नीतिकता है ? क्यों नहीं तुम्हारा स्वाय ही ?

उदयन—मैं कब तुम्हारे प्रासाद में आया ?

प्रद्योत—मेरे उपवन में बजाई होनी ।

उदयन—राज की सुख्यता में भीत बहुत निकट आल पड़ता है ।

प्रद्योत—तो मेरे दुःख के किमी परकोटे पर चढ़कर ?

उदयन—महीं राजन वहाँ भी नहीं ।

प्रद्योत—मैं मान लेता हूँ वहाँ भी नहीं । मेरे दुर्ग से दूर ही सही । मेरे राज्य की सीमा के भीतर तो होगी वह जगह ?

उदयन—क्यापि नहीं ।

प्रद्योत—क्यों यही तुम्हारी चारित्र्यता है ? यही स्पष्ट झूठ बोलने पर कर्मर कस की तपने ? उस स्वान का नाम दो बताओ ।

उदयन—महाकाल का मखिर । राजन् क्या उस पर तुम्हारा अधिकार है ? क्या वह तुम्हारी सीमा के भीतर है ?

प्रद्योत—यह दूधरी झूठ है । वह हमारे भूमि पर है, मेरे पूर्वजों ने उस मंदिर को बनवाया है ।

उदयन—भूमि की छाती पर से जो सबके शिला-सेला को खील देता है ऐसा वह महाकाल ! सबके पुत्रों का बिछने मिटा दिया उसके मंदिर को बनाने का अभिमान क्या मारी बिडबना नहीं है ?

[प्रद्योत पाल पर हाथ रखकर सोचता ही रह जाता है]

उदयन—किस सोच-बिचार में पड़ गए महाराज । क्या बलि प्रश्न है क्या वह ? वह कभी भी तो सिंहासन में बैठकर म्याब करन का सम्भाषी है । बंड घोर दाल बैन वाली मरी में भजारें तुम्हारे सोह-बंजन पहले तक पई हैं । निर्णय का भी है पीछ क्यों नहीं देते ?

प्रद्योत—एक घंटे पर लम्हें मुचन कर देना मानने को ठीकार हो ? तुमने जन प्राचीराज के संगीत से मेरे दुर्ग के भीतर बड़ी आकुलता जो दी है ।

उदयन—तो मैं क्या करूँ ? मेरा यह क्यापि सत्य नहीं था । मैंने तो केवल महाकाल के भीत में ठाम ही ।

प्रद्योत—वर तुम्हारा वह पीत मंदिर के भरी-खोरी घोर दवालों से झलकर

मेरे प्रासाद के बातावरण में व्याप्त हो उठा। बहुतों को इससे जो पीड़ा पहुँची है, उसका अन्तरदायित्व किस पर है ?

उदयन—उनकी दुर्बलता पर।

प्रद्योत—बुप रहो तुम अपराधी हो तुम्हें दंड दिया जायगा। मन्त्रिक महाराज के बचन खोल दो।

[प्रहरी उदयन के बचन खोल देता है]

उदयन—बचन पल गए तो फिर क्या कैसा ?

प्रद्योत—तोह बचन से मन्त्रिक भी तो कुछ बचन हैं तुम नहीं जानते ?

उदयन—जानता हूँ।

प्रद्योत—बड़ी सख्तों के बचन तुम्हें पहना हुआ प्रतिज्ञा करोम ?

उदयन—कैसी प्रतिज्ञा ?

प्रद्योत—यही कि तुम मुझे अपनी यह मंगीत की कमा सिखा दोम।

उदयन—सिखा दूँगा।

प्रद्योत—इतनी सरलता से तुम मान गए ?

उदयन—मानना ही पड़ता है। कला के विस्तार का सहायक होने पर ही नशाकार की कमा बढ़ती है।

प्रद्योत—बस तक नहीं सिखा सकोये अब तक तुम्हें अज्ञातबाध करना होया। प्रस्तुत हो ?

उदयन—हूँ।

प्रद्योत—कितने दिन में सिखा सकोये ?

उदयन—तुम्हाड़ी धातुक पिपासा अल्ट इच्छा और अक्षयित बर्न पर यह निर्भर है।

प्रद्योत—सोच कहते हैं कला मनुष्य के जन्मजात होती है।

उदयन—मनुष्य के ज्ञान और कर्म का योग क्या नहीं कर सकता ? वह छोटे हुए संस्कारों को ही नहीं जगा सकता मए की सृष्टि भी कर सकता है। लेकिन इसमें एक बड़ी आवश्यकता है, उसके न होने पर कुछ भी हो कुछ नहीं हो सकता।

प्रद्योत—बहु क्या है ?

उदयन—धड़कार का स्वाग ।

प्रद्योत—वह कैसे छूट सकता है जीवित रहते ?

उदयन—बुध की कृपा में ।

प्रद्योत—गुरु कौन है ?

उदयन—जिससे तुम बिधा सीखोगे ।

प्रद्योत—तुम ? गुरु ?

उदयन—हाँ बिना मुझे गुरु माने मझते दीक्षा लिए तुम्हें इस बिधा का रहस्य ज्ञात न हो सकेगा ।

प्रद्योत—मैं क्यों इस अधविश्वास का पालन करूँ ?

उदयन—बिना गुरु की स्थापना के मानस को बिनय धीरे धीमे की उपमावना में मिलनी बिना बिनय के भावना में समता धीरे स्थिरता में धारिणी बिना इनके बिधा नहीं पायी यह एक घटल धीरे प्रकाश्य शरय है ।

प्रद्योत—हम दोनों के बीच में राजनीतिक स्पर्धा है । तुम्हें युध बना देने का प्रर्थ मेरे राजस्व का पणन है ।

उदयन—राजन् स्वर की मृमि इस मिट्टी के बरतस से बहुत ऊपर की सरत है । वहाँ बस्त धीरे अवग्धी पी सीमाएँ नहीं मिली हैं न कोई वहाँ से राजस्व ही बसूल कर सकता है ।

प्रद्योत—कृष्ण भी हा यह मुझे स्वीकार नहीं ।

उदयन—उस तर्हें इस कसा का सामन छोड़ देना होमा ।

प्रद्योत—वह भी नहीं छोड़ सकता । बुद्धि द्वारा हम प्रत्येक कठिनाई के भीतर से मार्ग विकास सनते हैं । मने एक उपाय सोच सिधा है । हमारे राज बचन में एक कुबड़ी बासी है । उसके बड़ी बबल संवीत की बारना है । वह एक को बार ही सुनकर किसी भी भीत को कंठप्र कर सैती है । वह तुम्हारे सारे नीत के कोप को सोख लेगी । हो उस विधाने को तैयार ?

उदयन—अगर वह मुझे बुध बनाने को प्रस्तुत हो तो ।

प्रद्योत—वह प्रस्तुत होगी ।

उत्तर—तो मुझे कोई भी धारणा नहीं ।

प्रद्योत—ईशिक बाघो बाघी कुबड़ी को मुना साधो मत-पुर से । (सैनिक जाता है) हा-हा ! (विजय का घट्टहात करता है) धीर जब वह तुम्हारी विद्या के बारे पढ़सब खीन लेपी तभी मैं बड़े विरवास धीर प्रकाश के उनके नाम्यम ठारय अपनी कला प्रकाशित कर जूंगा । क्यों महाराज ?

उत्तर—इससे मेरा कुछ नहीं बियबटा ।

प्रद्योत—यह राजवंस उतारकर तुम्हें एक शीतदास का नामा पहनना होगा । ये बरनामूषण राज-वंश में सुरमित रहेंगे धीर तुम्हारी विद्या के विम तुम्हें साबरपूर्वक भेंट दिय जायेंगे ।

उत्तर—मुझे स्वीकार है ।

प्रद्योत—तुम्हारी मुविद्या का ध्यान रखा जायगा । तुम किठी के साथ अतन के बाहर की बाठपीठ न कर सकोगे । दिन-रात तुम्हारे ऊपर प्रहरियों की कृष्टि का बंधन रहेगा । जितनी बस्ती तुम उस कुबड़ी को अपनी कला विद्या बकोने उतने धीम तुम्हें मुक्त कर दिया जायगा ।

उत्तर—इस प्रकार मेरे बंधन की प्रबधि मेरे प्रवास पर ठहर गई ।

प्रद्योत—धीर प्रयर तुमने कमी किसी संकेत से अपनी सेवा प्रजा का लेबकों को यह भेद दिया तो फिर तुम्हें धाजस्य कारवास में बाँध दिया जायगा । (सैनिक के साथ घुँघरु काड़े कुबड़ी जाती है) यही है वह कुम्मा । (कुबड़ी से) इन्हें गुब बनाकर तुम्हें बन के इनसे लंवीत सीखना होगा ।

[कुबड़ी अपना तिर हिलाती है]

प्रद्योत—ईशिक इन्हें धमी कुब देर बिना बंधन के कारागार में रख दो । फिर इनके योग्य उचित प्रबंध करा दिया जायगा ।

[सैनिक उत्तर को लेकर जाता है]

कुबड़ी—(बुँदट हुआकर) महाराज मैं अंत पुर क बूँटे बरतन उठानेवाली मुझे सगीत विद्याकर क्या नाम होगा ?

नामबधना—(जाती है) महाराज लंवीत तो मैं सीखना चाहती हूँ ।

प्रद्योत—तुम्हारे ही लिये तो यह बाहरी विद्याका करना बड़ रहा है ।

कुबड़ी—लेकिन बरे दिनों के फेर से बड़-बड़े बनी-मानी बीर-बीर, पुरी विद्वान पाठों की हूट में बिक जाते हैं। क्या अपनी स्वतंत्रता अपना बैध और अपने स्वजन को देने पर उनका सर्वस्व लेव नहीं हो जाता? उनकी आत्मा उस क्षीनता के ऊपर फिर उठ ही नहीं सकती। लोगों के प्रपञ्च-भरे मुखों और मुचा-भरी वृष्टियों के घागे के माया उठा ही नहीं सकते।

बासबबसा—हाँ लोगों के इसी आत्माचार की प्रतिहिंसा के लिये प्रवृत्ती की राजकुमारी अपने हाथों से उनका सारा कर्मक बो देने को तैयार है। फिर उनसे क्षीतवास कहन का किसी को साहस न रहेगा? इतना भेष्ट कसाकार, जिसके स्वर के जादू से प्राणी ही नहीं ठक-बिसाएँ भी नाच उठती है उसे ऐसा हीन संबोधन देना क्या हमारे पतन की पराकाष्ठा नहीं है?

कुबड़ी—काना में जो धक्क गए बही होठों से निकल गए।

बासबबसा—तुम्हें मुसाकर कुछ नहीं बूझ रही हैं। वू बचपन ही से प्रंत-पुर की बड़-बेटियों के बीच में रही है। वू ने उनके संसर्ग में बाणी और व्यवहार की प्रवृत्ती संस्कृति पाई है। मुन राजाघों की रीति को कौन समझ सकता है? जिस तरह दासी की भाव कैफ़र घाजा बीठी है परदे के हजर छती तरह परदे के उस पार क्या गुरु के घागे क्षीतवास की कल्पना नहीं रक बी गई?

कुबड़ी—यह क्यों?

बासबबसा—कि एक-दूसरे पर आकर्षित न हो। लेकिन राय आकर्षण का ही घपर माम है। जिना अनुराग क कोई किसी की राग नहीं है सफ़टा।

[मेवप्य में भेरी बब्रती है और धरु होते हैं—“सावधान। प्रवृत्ती के महाराज पकारते हैं। मार्य से हट जाओ। उनके आवर के लिये माया कितल कर हाथ छोड़ पड़ हो जाओ। कुबड़ी और बासबबसा दोनों इत पर ही बली जाती है।]

[परदा उठता है]

तीसरा दृश्य

[अगस्त्यी के अश्वपुर का एक प्रकोष्ठ । सामने द्वार पर एक परवा पड़ा है । प्रद्योत और वासुदेवता बसते कर रहे हैं ।]

प्रद्योत—क्यों वासुदेवता बहुत कीर्तनास बिना किसी अन्त के तुम्हें संबोधित की प्रिया है रहा है न ?

वासुदेवता—हाँ महाराज ।

प्रद्योत—कैकिलि पहरों पर के राजकर्मचारी कुछ विच्यव बसते बहते हैं । माग्न्य में ही यह निश्चय कर लिया गया था कि तुम्हारे बीच में गद्य में कोई बात नहीं की जाएगी ।

वासुदेवता—पर वे कहते हैं बिना गद्य की सहायता के पद्य तक नहीं पहुँचा जा सकता और बिना गद्य की सहायता के संगीत तक । गद्य में से ही तो पद्य धारिर्भूत हुआ है फिर महाराज ने क्यों उसे निषिद्ध किया है ?

प्रद्योत—पद्य मनुष्य की सहज अभिव्यक्ति है इसलिये उसमें उसकी विचार-बुद्धि भावनाएँ बड़ी सरलता से स्थान बदल लेती हैं ।

वासुदेवता—क्यों पद्य में ऐसी बात नहीं है ?

प्रद्योत—पद्य में काल की भावनाएँ समावेशित होती हैं । काल मनुष्य को जीवन की क्षणिकता का संशय देता है इसलिये उसकी कुछ भावनाएँ नहीं साम्यता । गद्य बिना सोचे-विचारते ही प्रकट हो जाता है इसीलिये पद्य के मामले उसकी गुच्छता है ।

वासुदेवता—महाराज के अन्वेषित्व का मुझे अपना विश्वास बचाना पड़ा बहुत दिन तक । पर अब यह नितास्त प्रकृत है । मैं अपनी शिकायतों को किसी प्रकार काय्यबद्ध नहीं कर सकती ।

प्रद्योत—अंका भावना की सुदृढ़ता है उसे अंका शिकायतों को वह अंका न पड़े साम्यता । प्रार्थनों में अंका के स्थान प्रकट करने का उपयोग ही नहीं वह मन का मूल है ।

वासुदेवता—मैं मनुष्य की इतनी दुर्बलता नहीं है जितना उसका अहं

उद्यम—(बीसा में स्वर डेकर) जिस पर प्राण ठहर जाय वही स्वर है। स्वर के छिड़ हो जाने पर सप्तक अपने को स्वयं ही बेर सेठा है। सप्तक स्वर का ही विस्तार है। सा SSS, इमे सा धातकर हो तो प SS—यह वचन है। बिना सा को स्मर किए सप्तक के किसी दूसरे स्वर का ध्यात्व नहीं है। तुम मुन रही हो न ? (भीतर से कुछ उत्तर नहीं मिलता उद्यम कुछ बेर बीसा बजाता ही पटा है)।

[फिर कई भरियाँ बज उठती हैं। एक दूसरा मजिक धाता है]

दूसरा सैनिक—(पहले सैनिक से) य भरियाँ बज रही हैं मुनते हो न ? दुर्ग के धामुख पर तारी सेना के एकत्र होने की धाजा है। तुम भी वही धायो। तुम्हारे कर्त्तव्य को सम्भालनी ये धाया है यहाँ।

[पहला सैनिक शोककर बला जाता है। दूसरा उसकी बजह धाकर बड़ा हो जाता है।]

उद्यम—(बीसा बजाते हुए उस परिवर्तन को लक्ष करता है)।

दूसरा प्रहरी—क्यों भी तम सिखाए ही जा रहे हो वा कीई चीज भी पटा है ?

उद्यम—(आश्चर्य से उसकी धोर देखकर) तुम्हारे स्वर में—

दूसरा प्रहरी—बलराम उद्यम की सेना ने बड़ाई कर दी है धपती के दुर्ग पर।

उद्यम—एसा क्यों ?

दूसरा प्रहरी—बलराम को इत दुर्ग के भीतर बसी बनाकर रखा है न धपती के महाराज ने।

उद्यम—कौन बहता है ?

दूसरा प्रहरी—बलराम के धठिरित धोर नहीं बहते हैं। कमल बचन बज होने के कारण वे ही नहीं बहते।

उद्यम—कहाँ है वे ?

दूसरा प्रहरी—जय भेंट करना चाहते हो उनके नाच ?

उद्यम—हाँ।

दूतरा प्रहरी—जग की खबर नहीं करते । घपना काम करो ।

उदयन—(परदे की छीर मुह कर बीला में स्वर डैते हुए) सा SSSS मुन
एही हो न तुम ? स्वर मिलाघो ता SSSS

दूतरा प्रहरी—(उदयन के पीठ पीछे से स्वर मिलाता है) सा SSSS—स्वर
मिल गया ?

उदयन—(बौंकर उठ बढ़ा हो उसकी तरफ देखता है) है । परदे के
उपर जो स्वर था वह इपर कैसे था गया ?

दूतरा प्रहरी—आँखों की एकटा ही स्वर है वह कहीं घाता-जाता है ?

उदयन—प्रहरी ! तुम्हारा यह धरप क्यों रंकिग्य जान पड़ा ?

दूतरा प्रहरी—धीर धरप तुम महाराज उदयन से मिसना चाहते हो तो
मेरे साथ चलो । कुम्हे मुरंग का गुप्त द्वार ज्ञात है धीर मेरे पाद राज बिहू
है । (घपने हाथ की चोंगुली से चोंपूठी दिखाता है) ।

उदयन—(उसकी हाथ पकड़ लेता है । प्रहरी उसके कंधे में जाता है) ।

[घपना बरबा विरता है]

चौथा दृश्य

[घिघ्रा मही के निकट एक बग । घागे-घाये हाथ में एक बठरी लिए बही
प्रहरी जाता है । उसके पीछे बीला सेजाले उदयन ।]

उदयन—घिघ्रा मही के निकट बग में भी था गए घब हूग । बहाँ है ने ?

प्रहरी—इसी मठरी में है । बुलाया हूँ धमी । (मठरी खोलकर उसमें से
उदयन का मुकुट बरत्रामुबण निकालकर उन्हें पशुना देता है) क्यों ह न यही
महाराज ?

उदयन—(घ्यानपूर्वक उसे देखता है) धीर तुम कौन हा ?

प्रहरी—गुम कुछ पहनने से घपने प्रकृत रूप में घाए हो ता मैं कुछ उतारने

से। (घपने बाहर के प्रहरी के कपड़े उतार देने से उसके भीतर वास्तवता प्रकट हो जाती है)।

उदयन—कौन हो तुम ? क्या भाषण है तुम्हारा ? कहाँ से आ रही हो मुझे

वासवदत्ता—मैं कहीं नहीं से आ रही हूँ तुम्हें। स्वर के बाल में फँसकर राजन् तम्ही म-माने मुझे नहीं के आ रहे हो। जहाँ भी कहीं मैं प्रस्तुत हूँ। मेरे मन और प्राण सभी कुछ तुम्हारे चरणों में विसर्जित हो गए।

उदयन—बड़ी प्रभावशालिनी जान पड़ती हो तुम।

वासवदत्ता—मेरे जीवन-मरण के सूत्रदान मैं घपना स्वामी बना चुकी हूँ।

उदयन—लेकिन हमारे बीच में कोई बूझरा सम्बन्ध स्थिर हुआ है। उसके विपरीत जो-कुछ तुम सोच रही हो यह सर्वथा हम दोनों के सिय घसोपन है।

वासवदत्ता—धीरे कीज-सा सम्बन्ध ?

उदयन—मुझ पीर सिप्या का। हम दोनों के बीच में पूजा का बन्धन है, प्रेम का नहीं।

वासवदत्ता—पूजा का बन्धन कैसे ? तम्हारी सिप्या का वह कबड़ी है।

उदयन—मैं तो समझना था तुम ही मेरे सामने खँड बड़ा घपनी कमर टेढ़ा कर कम्पा बन जाती थीं क्योंकि स्वर बहो है तुम्हारा।

वासवदत्ता—नहीं तुम्हें मुझ बनाने वाली वह कम्पा बूझरी है धीरे तुम से बिधा सीखन वाली मैं बूझरी। तब मेरा पाणि प्रह्वन कर लेने में तुम्हें क्या भाषित है ?

उदयन—तमने जो बिधा मुझस प्राप्त की है उसे तम इस प्रकार घस के घर्जन करन के कारण संभाल कर न रख सकोगी।

वासवदत्ता—कोई बिधा नहीं यदि गायक प्राप्त हो जाय तो फिर नीठ के जो जान की मुझे कोई बिधा नहीं है।

उदयन—जब यह राजा एक नीठशास के बेज में छिपा था तब क्या तुम्हारी एसी ही प्रीति की ?

बासबदला—घोर नहीं तो क्या ?

उदयन—मेरे राजा होने का मेरा कितना दिया ?

बासबदला—संघर्ष पहले ही था फिर एक दिन जब राजमन्धार में तुम्हारे इन बन्धामुपनों को देखा, इसमें तुम्हारे नाम से प्रकृत इस प्रंगुठी ने तो सारे शत्रुओं का निराकरण कर दिया । (उत्ते प्रंगुठी दिखाकर) यही है न तुम्हारी प्रंगुठी ?

उदयन—हाँ मेरी ही है । लेकिन बिना अनुमति के किसी की प्रंगुठी को पहन लेना क्या घस्याकार नहीं है ?

बासबदला—प्यार में कुछ भी घस्याकार नहीं है ।

उदयन—यह तुम्हारे स्वाम की चेतना है । एक राजा होम के कारण उदयन के अनेक उत्तरदायित्व हैं । वह चाहे जिससे धन नहीं कर सकता और न चाहे वो कोई उसको प्रणय के बन्धन में बाँध सकती है ।

बासबदला—मैं तुम्हें कीर्तिदासत्व के रूप से बाहर निकाल आई हूँ राजन् ।

उदयन—मेरी बासबा कल्पित की सिद्धि तुम्हारा यह बाधीत्व ?

बासबदला—(स्त्रि से पैर तक काँप उठती है) मेरा कैसे बाधीत्व ?

उदयन—जिस तरह एक बाघ के बस्त्र पहनकर उदयन ने दुर्ग के भीतर बहनों को बोला दिया वही प्रकार कोई भी बासी राजसी बस्त्र पहन कर उसे बोला दे सकती है ।

बासबदला—मैं प्रपन्थी की राजकुमारी बासबदला हूँ । इतने संघर्षों के बीच से तुम्हें बाहर निकाल लाने का साहस किसे बासी को हो सकता है ? वह है कि मेरे नाम की प्रकृत मूर्तिका मेरी प्रसूती में ।

उदयन—मूर्तिका कोई ताक्षी नहीं । मेरी प्रंगुठी पहनकर ही तो तुम किसी के सामने उदयन बन सकती हो ।

बासबदला—तुम्हें घासी बूंगी । यहाँ घनी हम दोनों के पकड़े बाने का मय है । घिया के उर बार बसो राजन् ।

उदयन—बसो । (दोनों जाते हैं) ।

[परजा उठता है]

पात्र

रामनाथ
एक किराएदार
रुमिखली
ससकी पत्नी
बुन्नी
उतकी सड़की
रामदेई
मकान-मालकिन
जितैग्र
ससका सड़का
मिखपमा
ससकी बहू
बरोमा
घंसे मिखापी के देघ में

स्नान—रामनाथ के सोने का कमरा

काल—दो छतों के बीच में एक पल्लवाप

भूत-लीला



“हूँ ! वे तो निरुपमा थी हैं !”

पहसा दृश्य

[रामनाथ के सोने का कमरा । रामनाथ धीरे-धीरे उनकी मकान-मालकिन पड़-पड़ें बातें कर रहे हैं । वो बीमारों के सहारे वो चारपाइयाँ बिछी हैं । वो कुर्चियाँ, एक छोटी चाय की मेज भी है । फटा पर बरी बिछी है, उस पर एक सूती पत्तीचा । उस पर बँठी बकिमणी खुली की ओड़ी गूँप रही है ।]

रामनाथ—पिछले छठ सालों से मे घापके इस मकान में रहता हूँ । पहले कभी ऐसा नहीं हुआ ।

बकिमणी—रात को भीतर-बाहर जाना हमारे निचे भारी मुश्किल हो गया । रठोईबर में जाते हुए प्राण-काँपने लगते हैं । कभी-कभी वो ऐसा भी हुआ है, डर के मारे हम लोग बिना जाए-पिए ही सो गए ।

रामदेई—ऐसा होना तो नहीं चाहिए । बड़ प्राणियों को उपवास रखने की भी मारत होती है । यह बिचारी छोटी-सी खुली इसे मूखे पेट कैसे घाई होयी भीर ?

बकिमणी—घर पर किसी बिल चिमटा जाने की घार न रही तो घंघुनियाँ पस जाती हैं । नमक भूल घाए तो फीकी तरकारी खानी पड़ती है, पानी कम पड़ गया तो प्यासे ही रहकर धीरे-धीरे हाव कमाल में पोंछकर रह जाना होता है । क्या करें ? कुछ बुद्धि काम नहीं करती ।

रामदेई—मरे भी कुछ समझ में नहीं आया सच्ची तो बात यही है ।

रामनाथ—रात को इसी कमरे में रठोईबर भी बनाना पड़ गया घब तो घाप सभन्ध पड़े होंगी ।

रामदेई—क्या सभन्ध में ? मेरे मकान की बीमारें बुरे के कामी पड़ जाएँगी तो मैं एक-दो घस्तर खुले के फेला हूँगी इनमें । तुम्हारे कपड़े बिस्तर, बरी बसीने में कोयला-बिजगायी पड़ जायगी तो वह घेर कैसे जरेगा ?

बकिमणी—बैठ भी घरेना देखा जायगा । बाब बोड़े बेनी है ।

रामनाथ—बैठे तो मैं पड़ा लिखा हूँ। मैंने साईब भी देखी है घोर मैं नीला-रामायण का भी भगत हूँ। एक बात आपसे पूछता हूँ। इस भगत में किसी का जून तो नहीं हुआ कभी? वहाँ किसी ने धारमबाध तो नहीं किया?

रामदेई—नहीं जी पहले हम ही सीप रहते थे इसमें। तो देवर ने मरे, वो देवराजिया। उन सबके बाल-बच्चे बरा-पूरा परिवार बहल-पहल मथी रहती थी। बाब को देवर स्वामीठर में बसे गए। उन लोगों की बखली हो गई। इसके बाद मेरी तकरीर पूट गई।

रामनाथ—हाँ यही पूछना चाहता था मैं। क्या हुआ अब?

रामदेई—(घाँसल से घाँसु पोंदती हुई) क्या बठाऊँ मेरे एकबीठे बेटे बितेन्द्र के पिता का देहान्त हो गया।

रामनाथ—ठीक! धर साई समझ में बात। उनका देहान्त हो गया बाने कैसे?

रामदेई—इसमें शक करने की क्या ज़रूरत है? जैसे सबकी मृत्यु होती है, ऐसे ही उनकी भी हुई। विमकुल स्वामाधिक रीति से। बगली के बाबू, मेरी यह उमर होने का साई ऐसी घनीब बात मुझसे किसी ने नहीं कही।

रामनाथ—बब तिर पर घा पड़ती है तो पूछना ही पड़ता है। परन्तु तबब उनको एकाएक कोई मानसिक चोट तो नहीं पहुँची? घोर उनकी घबूरी इच्छायें क्या-क्या रह गई थीं?

रामदेई—घारे संसार को स्त्री-पुन बन्धु-बाँधनों के बियोग का जैसा दुख सहना पड़ता है, जैसे ही उनको भी सहना पड़ा घोर इच्छायें किसकी पूरी हो जाती है वो उनकी हो जायें?

रामनाथ—उप ही है। उनकी मृत्यु के बाद क्या हुआ?

रामदेई—मेरा लड़का पढ़ने को इलाहाबाद जाता गया। यहाँ मैं धकेती ही रह गई। इतने बड़े बकान में क्या करती? फिर उनके स्वर्धबाध से कुछ हाव की तंबी घोर लड़के की पढ़ाई का गया बर्ष भी तिर पर घा गया। देवर लोगों के धपने परिवार में ही कासी ब्रिग्मेदारी थी। म पासबाले धपने छोटे से घर में बनी गई घोर इते किराए पर उठ दिया?

रामनाथ—किराएदारों में से तो किसी के पड़वड़ नहीं हुई ?

रामदेई—मह तुम खुद जानो मुझसे क्यों पूछते हो ?

रामनाथ—क्यों मैं क्या जानूँ ?

रामदेई—तुम्हीं तो वह किराएदार हो ।

बबिमली—(बुझी से) रिबम कहाँ है ?

बुझी—रसोईघर की बिकड़ी में ।

बबिमली—आ ले प्रा ।

बुझी—हूँ हूँ । मैं नहीं जाती ।

बबिमली—दिन-रहाड़े क्या हो गया तुम्हें ? क्यों नहीं जाती ?

बुझी—ऊँ ऽ ऊँ ऽ मुझे डर सबती है ।

रामनाथ—एसी डर पैठ नई इसके मन में रात को सोए में भी बड़बड़ाती है । क्या कर्के काई राह नहीं सुझनी किसी को घबर मुछ हो गया तो ?

रामदेई—देखिए बुझी के बाबू जब उनके स्वर्गवास हो जाने पर मरे ऊपर भारी विपत्ति पड़ी थी तभी मुझे कोई सालाब नहीं था । प्रभु की कृपा से जब तो मेरा लड़का पच्छा बीकर हो गया है । किसी को कष्ट देकर मुझे बन की एक पाई भी नहीं चाहिए । तुम्हारा जहाँ मन हो तुम जब चाहो इस मकान को खाली कर चले जाओ । मुझे साल के बाकी किराए की भी कोई परवा नहीं है ।

रामनाथ—घातके स्वभाव की इस सदागता को मैं पिछले कई बरसों से पहचानता हूँ । घाप उन प्राणियों में से है जो अपने मुक के सिमे धनु को रंज मात्र तकलीफ देने को तैयार नहीं । घापका ऐसा ज्वलंत उदाहरण पाकर क्यों मुझे उसका अनुकरण नहीं करना चाहिए ? इसलिये मुझे भी सोचना पड़ता है, जो विचारत हुआ इस मकान में घाएया उसे भी तो यही घापत योगनी पड़ेगी । जब किसी को कष्ट न देनेवाली मकान-आलकिन मुझे मिली है तो मैं भी किसी दुसरे को यहाँ तकलीफ में फँसा देनेवाला किराएदार क्यों बनूँ ?

रामदेई—(रामनाथ से मुँह ठिठारकर मुँह बनाती है) ।

रामनाथ—यों घाप मठ बोरिया-बिस्तर बड़क बर केंक मुझे बिकाम

तो घा मए होये ।

रामनाथ—जो सब कर तक घायको जनकी फिर हो ? पात-पोस पढ़ा-लिखा छावी-भ्याह करा दिया । सब इनको घायकी बिठा होनी चाहिए । नहीं तो घाबाब होकर बैठने के कुछ दिन हैं कि उस प्रभु का नाम लिया जा सके । ऐसी भटनापों को देखकर तो धीर भी ग्यारे भववान के चरणों में मन लज थाता है ।

[दोनों हाथों में एक छोटी-सी परात, परात में कोपलों से भरी सिपड़ी, सिपड़ी पर पतीली पतीली के भीतर धालू धीर ऊपर तथा तले में मसालों के डिब्बे लिए खिमली जाती है । दोनों तरफ की बुद्धियों में रिजग बाने एक भासी में घाटा अरुता-बेलन चानू कलछुन कटोरी में तेल लिए चुम्नी घाती है । कमरे में धीरे धीरे संभेरा होने लगता है ।]

रामदेई—(दोनों को घाता देख ताउमुख से) यह क्या मामला है ?

रामनाथ—(बरी धीर गलीचे का एक कोना उलटते हुए) में कह नहीं चुका हूँ घापसे ? खिमासी से ठिर बचाने के बिबे देठ-गुका यहीं करठे है ।

खिमली—(काली किये गए फर्ज के एक कोने पर सामान रखती है) ।

रामदेई—(बेबेनी दिखाकर) बेटा धीर बहु भिरी राह देख रहे होये । (उठने लगती है) ।

खिमली—(उसका हाथ पकड़कर फिर बिठा देती है) नहीं इसीनिये तो घापको बुनाया है । पात्र तो घापको यह पीला देखकर ही आना होगा ।

रामदेई—उनसे कुछ कहकर भी नहीं पाई । दोनों सोचते होये बुद्धिया कहीं नापात्र होकर तो नहीं बसी गई ।

रामनाथ—सब क्या देर है ? सूर्य बृह चुका । संभेरा होने सया ।

खिमली—बिजली जला दो ।

रामनाथ—(बिजली का बटन दबा उजासा कर एक घसवार उठा पढ़ने लगता है) ।

खिमली—(कर्ज पर सब चीजें कायदे से जपाती है । एक तरफ सिपड़ी सरकाती हुई) चुम्नी से इस सिपड़ी में दो चार रही कायब बलाकर पस्वी

सुमगा है। माँ बी को पराठा सेंककर घाब मही खिला दूंगी।

रामदेई—नहीं नहीं मेरे सिये क्या तकलीफ़ करनी है।

रश्मिली—आ बेटो जरूरी से एक कटोरी में भी निवास ला जरा-सा।

जुम्मी—(सिगड़ी में कुछ कामज डालकर बियासलाई से धलाती है, फिर घस पर पंखा चलती हुई) उख कटोरी में भाई तो हूँ।

रश्मिली—बह भी नहीं है, बह तो ठेल है।

जुम्मी—नकली भी से घसली ठेल क्या बुरा है ?

रश्मिली—न-जाने क्या बक देती है तू बिना सोचे-समझे ? घरी कमी न कमी घाब मह दिन धामा जा। पहले-महल में माँ बी को घपने हाब से ठेल के पराठे खिलाई ? राम ! राम ! मूइस्केवाले मुनकर क्या कहेंग ?

जुम्मी—संपेरा हो गया। घब तो तुम्हें भी पचर जाने का साहस न होया।

रामदेई—नहीं न कुछ न खाईंगी।

रश्मिली—नहीं में मुझे पेट न जाने दूंगी। कुछ-न-कुछ मुह झूठा करना ही पड़गा। क्या बेर भगती है सिगड़ी सुनपते ? रसेदार घाब सबह के रसे है, सूख घभी बना लूंगी घाम का घचार घोर सेब का घाम वस्ते कमरे में रस हूँ। जरा-सा भी ला दे बेटो।

जुम्मी—(सिगड़ी में पंखा चस्ते हुए) माँ में कैसे बाळें ?

रामनाथ—(घसबाद घसप रसकर) क्या-क्या सागा है ?

रश्मिली—एक कटोरी में भी हूँ पानी की बास्टी गिसाव छोटे वाली घौर कटोरियाँ।

रामनाथ—घौर कुछ पण्डी तरह याद कर लो। नमक ? चिमटा ?

रश्मिली—नमक तो ले घाई हूँ चिमटे की फिर याद नहीं रही।

रामनाथ—बस बेटो घभी कोई डर नहीं। एक-दो छोटी-छोटी चीजें तू से घामभी राभी बिटिया बड़ी बहादुर है।

[रामनाथ घौर जुम्मी रसोईघर की घोर जाते हैं]

रामदेई—घबमुच में तबसीक तो हो गई है तुम्हें बहुत मारी। पर में क्या

कहाँ जब तुम यहाँ से जाने को तैयार हो नहीं हो तो बड़ी माफ़ारी है। घोर यह सब मुझे दिखाकर ही क्या हो जायगा ?

बकिमली—लेकिन हम बायें भी तो कहीं ? उस मकान में रहते घात-घात बरस हो गए। इसके साथ एक तरह की पाड़ी प्रीति हो गई हमारी। इसे छोड़ कर कहीं जाने को भी नहीं करता। इसका मकान घोर कोन रखा है। यह मैं हमारी ? (सिद्धी झलती है)।

रामदेई—इसने से भयबानू भी घिस जाते हैं घोर घातखिनों के हाथ-पैर भी क्या को नहीं जाते ?

[इसी समय मकान की डींग की छत में परतब के बिरने का शब्द होता है घोर ज़ही समय बुन्नी बड़ी घोर से रोती है।]

बुन्नी—(नेपथ्य में) मीया ! मीया ! मर गई मैं तो।

बकिमली—(पंखा झलते-झलते पठ पड़ो होती है, दरवाजे पर जाकर जना आहूती थी कि उसको ठोकर से धपकली सिद्धी पर्य पर बिबर जाती है। बकिमली घबराकर बड़बड़कती हुई कोपसे पछाती है) है मयबानू, किसका क्या बियाड़ा है हमने ? हाथ जल गया। बिमटा भी न-जाने कहीं ? बपर मङ्की के न-जाने क्या हो गया ?

रामदेई—टीन की छत पर क्या पिटा यह ?

बकिमली—क्या बताऊँगी सारा रौना तो इसी का है।

[एक हाथ में पानी की जरी बाँधी घोर इससे हाथ में रोती हुई बुन्नी का हाथ पकड़े रामनाथ धाता है।]

बुन्नी—बड़ी घोर से सब पई ? (एक हाथ से उसने धपना सिर पकड़ रखा है)।

बकिमली—कहाँ पर मयी ? (उसके इतीतती है)।

बुन्नी—सिर में।

रामनाथ—(पानी की जाली एक तरह रखता है फिर दरवाजा बन्द कर लौकन बड़ा बैठा है)।

३—इसके ही घृन ही घृन हो गया सिर में। यह मैं क्या कर्क ?

कहाँ जाऊँ ?

रामदेई—(उठकर उसके भाव को देखती है) कहीं रखा है सिग्नूर मर
 दो पाव में । एक पट्टी बाँध दो ।

रामनाथ—डॉक्टर के पास के बाता हूँ । (सड़की को धोब में पछाना
 बाहूटा है) ।

बुन्नी—(खोर से रोती है) नहीं डॉक्टर के पास न जाऊँगी मैं ।

रविमल्ली—(फिर डीम वर एक परपर धीर पिरता है) यह बुन्नी फिर
 एक परवर धीर पिरा ! नहीं न बाघो बाहर । एक के नहीं तुम्हारे फिर में
 बाव हो बायेना तो फिर क्या करेमे हम ? (इक झोलकर बसमें सिग्नूर
 हूँ इती है) ।

रामदेई—सयी कैसे ?

रामनाथ—छा में पिरकर परपर अपनी तावत रँबाकर फिर धाँग में इसके
 फिर पर पड़ा तक से हात है । धपर धीना ही इसके ऊपर पड़ता तो फिर राम
 ही मालिक मे ।

रामदेई—यह धामा कहीं से ?

रविमल्ली—(सिग्नूर बिकालकर) माँ की इची का तो रोता है । क्या
 बसाएँ कहीं से धामा है ।

बुन्नी—(फिर रोती है) ।

रविमल्ली—डूब रहूँ बेटो ।

रामनाथ—बस रोज धबेरा होने पर यही रंग नुक हो जाता है । कभी-
 कभी तो सपाठार परवर बरसने लप जाते हैं । कभी दो-दो बार-बार मिग्रा
 के धबकाप पर ।

रामदेई—कितने बजे तक ?

रामनाथ—कोई ठीक नहीं । कभी दस कभी प्यारह-बारह बजे तक ।

रामदेई—तड़क वर कोई बरमाध होगा जिसे धले पानकों को छेड़ने में

पानक पाया हुआ ।

रामनाथ—एक-दो दिन की ऐसी हँसी-मजाक कोई कर सकता है । रोज

रोज ऐसा करने वाला घब तक कमी का पकड़ लिया जाता ।

बबिमबी—(बुन्नी के पाब में तिमूर भरती है) ।

बुन्नी—मर गई । मर गई ।

रामदेई—रो मत बेटी बस घब ठीक ही जाबया । पट्टी बाँध दो घब ।

बबिमबी—(एक बुरानी बोली में से लम्बी चगड़ी काढ़कर बुन्नी का तिर बाँध देती है) बोठी बाँधनी ही पड़ी रिजल नहीं तो पट्टी के रूप में ।

रामदेई—घब सुला दो इसे ।

[रामनाथ उसे चारपाई पर सुला देता है]

बबिमली—बेटी । मूज लगी है ?

बुन्नी—(रोते-रोते) हाँ मम्मा ।

बबिमली—घामे को क्या रें इसे ?

रामदेई—ओ बी जाहे यह दो । म पाटी हूँ घब । (बाहुर को जाने लपती है) ।

बबिमली—(उतका हाथ बम्बुकर) माँ । ऐसे में कहीं जाती हो ।

रामनाथ सोय कसक का टीका हमारे तिर पर रख बने ।

रामदेई—इस बबत तो घब बम्ब हो गया ।

रामनाथ—कोई मरोसा नहीं ।

[फिर लगातार एक के बाद दूसरा कई प्यपर पल पर बरसते हैं]

बबिमली—देखा माँ ओ कितने भारी भारी बापर हैं । घबर कित्ती के एक बी लय जाय तो पानी न जाने । यह टील की छत बब तक लहून कर सकेयी । बब तक छपनी न होयी ? फिर क्या होना ? मैं तो छत बिल इती किकर में मुन गई ।

रामदेई—घरे राम । यहाँ तो यह नामला है । मुझे क्या मामूम ? ये लमम्बी बी दो-चार छोटे-मोटे ककर बिरते होने नहीं से । बास-मजूस के कित्ती लकड़े की घटाएल होयी । ये एक-एक पंखी के बापर । रहँ तो कोई बहलबान ही इत तरह हवा में उड़ा सकया है ।

बबिमबी—मों क्या बिचार है घाबका ? (सिपड़ी मुनमाना मुब करती है) ।

रामदेई—यहाँ कैसे रह सकती हूँ मैं ? घबरे कर जाऊँगी ।

बहिमली—नहीं मेरा मतलब है ये पत्थर कहीं से घाते हैं ?

रामदेई—यह बकर मूठों की ही नीला है ।

बहिमली—कभी घोर मी नहीं घापने ऐसा होते देखा ना सुना है ?

रामदेई—ना भाई घोर कहीं नहीं देखा-सुना एवा जुलम ।

[फिर कई पत्थर लगातार छत पर बरसते हैं]

रामदेई—घब कैसे कर जाऊँ मैं ?

रामनाथ—घापकी घपन कर जाने की मुझेकल पड़ी है, हम कैसे रहें इसमें ?

रामदेई—मैं तो कह चुकी हूँ न जब भी जाहे छोड़ दो ।

रामनाथ—न कहो ऐसा न कहो फिर इस मूठों के बरे में रहने घोर घापको फिराया बेन कीन प्राणना ?

बहिमली—(तिगड़ी सुलपाते-सुलपाते) पापी पेठ नहीं मानता । (बुली से) क्यों बटी, कैसा है बर ?

बुली—घब तो बरा ठीक है ।

रामनाथ—मो जाघो बोड़ी बैर ।

बुली—नीब नही घा रही है ।

रामनाथ—बघों ?

बुली—मूब लगी है ।

बहिमली—छार ना बेटा घमी ठेरे निबे पतली चुकी बना देती हूँ घोर माँ जी के निबे हो पराठे खेंक—

रामदेई—नहीं नहीं मेरे निबे कोई तकलीफ करने की बकरत नहीं है । घब तो एक कई पत्थरों की बरसात ।

बहिमली—नहीं कभी-न-कभी घाब संजोम पड़ा है, घापको खाकर ही जाना पड़ेगा । मैं घभी घाटा घूँबती हूँ । (पति से) भी कहीं रख दिया ?

रामनाथ—बुली भाई भी कटोरी । बटी भी कहीं रख दिया ?

बुली—(रोते-रोते) जब मेरे घिर पर पत्थर लपा तो कटोरी मेरे हाथ

हे नीचे फिर नहीं घायम में ।

बन्धिमाली—(पति से) ना हो न कटोरी ।

रामनाथ—मेरा सिर फूट गया तो ?

बन्धिमाली—फिर माँ जी के लिये पराठे ?

रामदेई—मेरी क्या चिंता कर रही हो मैं बन्धी जाती हूँ घर ।

बन्धिमाली—नहीं नहीं धाय घकेमो कैसे जाएँगी ? किन दूजे बाद फिर घंघेरे में धायको कुछ सुम्हता भी तो नहीं !

रामदेई—टटोल-टटोलकर बन्धी जाऊँगी ।

बन्धिमाली—तुम पहुँचा घायो न ?

रामनाथ—पत्थर बरस रहे हैं । ठहरते में भी की कटोरी ही ईद जाता हूँ ।

बन्धिमाली—माँ जी तो जाने को कह रही हैं ।

रामनाथ—बुन्धी के लिये पतली सूजी के लिये तो पसकी बकरत बढ़ेगी ही ।

रामदेई—तुम ही घायस में ही लडने लम मेरे लिये । मे बड़ गई । (बन्धी जाती है) ।

बन्धिमाली—(चिंता के स्वर में) माँ जी ! माँ जी ! ठहरिए, ठहरिए ! ऐसी घंघेरी रात घौर पत्थरों की बरसात में ?

रामनाथ—(इधर उधर कुछ बूँडते हुए) ठहरिए ठहरिए, खोपड़ी के बचाव को मे बरा घपना टोप घौर छाता भी तो बूँड लूँ । (बाहर से कोई बचाव न मिलने से द्वार तक जाता है) बन्धी गई क्या ? (भीतर लौटकर पत्थरी से) बन्धी गई । बाहर का बरबाजा बुना लोड़ नहीं होंगी । (भीतर का द्वार बन्द कर देता है) ।

बन्धिमाली—तो आकर बन्द कर घायो न । भी की कटोरी भी लेंते घायो ।

रामनाथ—(तिर बुजाकर) तन्हीं बघायो में जाऊँ तो कैसे ?

बन्धिमाली—बुडिया स्त्री उनके इतना साहन ! तुम मरत होकर बन्दमें लोड़ रहे हो ?

रामनाथ—बुन्नी की माँ यने घँपरेबी पड़ी साइँउ पड़ी । डरने का कभी नाम नहीं किया । भूत प्रती की इस्ती में हुमेंया धबिरबाउ किया । वो कभी नहीं सीखा बहु घाब देखने में घाया । वो कभी नहीं पडा हमको घाब समझ । है ! बकर है ! भूत प्रेठ समी कुछ है इछ बरती पर ।

बकिमली—बुन्नी बेटी । (सिपड़ी में पंजा कमत-कलते) नीर धा रही है ?

बुन्नी—नहीं माँ पहले भक लग रही है ।

रामनाथ—मैं घभी भाता हूँ बेटी की की बगारी । (बरबाजा कोलने को हाव बढ़ाता है । सहसा कुछ घाब घाते डी पीछ को झींटा है और एक-दो बैठक और एक-दो बण्ड करता है एक कोने में । फिर साँकल तक हाव बढ़ा कर झोट घाता है) ।

बकिमली—तुम जाघोने नहीं ? बहु बिचारी बड़िका घपने पर तक कभी बहु घोर तुम्हें यहीं घाँगन तक जाने बुन्नी बिनिया मुलब गई मिंगडी । मैं घभी जाकर—

रामनाथ—(जोर-जोर से पड़ता है) अब इनमान ज्ञान-यसुमान । अब कपीथ (बरबाजा कोल झौंकर जला जाता है) ।

बुन्नी—घम्या इन भूतों को कोई पकड़ क्यों नहीं सजता ?

रामनाथ—(झौंकर घाता है । बरबाजे में साँकल बढ़ा कटोरी बकिमली के घाने एक देता है) नी यह है कटोरी ।

बकिमली—इसमें का भी कहां गया ?

रामनाथ—जें बया जानूँ ? बिस्नी भाट गई हुनी ।

बकिमली—उठना तो बए डी जे । वो कबम और जाकर रबो-बर से कै घाते ।

रामनाथ—साता कैसे ? जाबी तो तुम्हारी कबर में लटक रही है । घीर घब पत्तर तो नहीं फिर रहे हैं । जान पडता है घब घाब की लीला कठम हो गई । मेरी समझ में हो घापो तुम्हीं सिपड़ी में मुकबा देता हूँ । एक कलती में सूखी घीर एक कटोरी में बीनी नी से घाना । घीर हाँ बहु बाहर के बकबाजे

में भी सौकल बढ़ाती घाना ।

बहिमली—(घबड़ाकर खडोरी उठाती है और द्वार का लालिख खोल जाती घाती है) ।

रामनाथ—(लिंगड़ी के पाठ बढ पंजा अजता हुआ) हाँ बरा भी परबों के गिरन का इशाव मिल ठो कीरन ही मुझे घामाब के देना ।

बुग्गी—पिठात्री इन भूमों को कोई पकड़ क्यों नहीं सकता ?

रामनाथ—य हाव ही नहीं घाते ।

बुग्गी—क्यों ?

रामनाथ—मेे हमारी तरह हाड़-मास के बने नहीं होते । मेे छाया के बने होते हैं छाया को कोई कैसे पकड़ सकता है ?

बुग्गी—सिकिन छाया परबरो को उठाकर कैसे हमारी छव पर कंक सरुनी है ?

रामनाथ—सवाल तुम्हारा बड़ा बाजिब है । सिकिन भूत-मेठ ऐठा करटे है । कैसे करटे है सि नहीं बठा सकता । (बाहर जितो का बोल्ना सुनकर) के कोन बीन रहे है ?

[एक तरफरी में सूत्री बीनी और एक खडोरी में बी लिए बहिमली घाती है । उसके पीछे ताहबी ठाठ में जितेगद और धाँउख असब र, बग्गी में निरयना घाते है । उनको देखते ही रामनाथ अर से पंजा कंक घवबार हाव में ले लेता है ।]

जितेगद—इम सभमते के यह बिसकुल घपड़ों की वप्प है । लबूत अब बिब मया तो फिर—

बहिमली—मों बी क लड़के पड़ी है और यह इनकी बहू है ।

रामनाथ—धोही ! ममस्ते-जमग्ते । हमारी मासकिन के बिरंजीब है घाय ? के बुधमपूर्वक बर ता बहूँब कई है न ?

जितेगद—धोहू बेत बनी बी । उन्हीने ही तो इमते बहू है इन मदान की छव पर भूत परबर फेंकता है । इमें कभी निरबाध नहीं हाता सिकिन के यहाँ घपनी घाँवीं छ देव गई है ।

रामनाथ—उन्होंने रोका भी नहीं थापको ? कहीं कोई पत्थर थापके लप थाव तो ?

ब्रिजेन्द्र—हम तो मृत को मानते ही नहीं फिर उसका फेंका पत्थर कैसे लपेना ?

रामनाथ—इसको भी नहीं रोका ।

ब्रिजेन्द्र—मृत के बर्तन की उठावली इन्हें मुझसे अधिक है ।

निस्पृमा—(बनिमली से) विज्ञातए न कहां है मृत ?

बनिमली—(छा पर चूहे का फंसाव दिखाकर) देखिए, यह मम मृत-ही-मृत तो है । वह चारपाई के कमरे में चूहा ि घामा है ।

ब्रिजेन्द्र—वह पत्थर कहां पर फेंका है ?

रामनाथ—यह देखिए । (चुली का पट्टी बेंधा तिर दिखाकर) यह फूटा है तिर ।

ब्रिजेन्द्र—घ्राप यह मजाक तो नहीं कर रहे हैं ?

रामनाथ—घ्राप से इमें मजाक करने की क्या जरूरत है ? इस बरत तो मैं घ्रापको हरबिज राप न बूना । मुबह होते ही घ्राप हमारी छन पर सैकड़ों पत्थर बैक सफैते हैं ।

ब्रिजेन्द्र—लेकिन पत्थर नहीं हम तो मृत देखने घ्राए हैं ।

रामनाथ—कुछ बेर ठहरिए, फिर सायब यह मा जाम ।

निस्पृमा—(बनिमली से) बहन घ्रापने भी देखा ससे ? कैसा है ?

बनिमली—देखा तो नहीं लेकिन यह टीन की छत बजती तो सुनी है ।

ब्रिजेन्द्र—गर्न बेंस । हम तो बिमकुस मृत से मूकावता करने घ्राए बे । यह तो बही निरी बप निकसी ।

रामनाथ—ठहर जाइए न फिर कह तो रहा हूँ ।

ब्रिजेन्द्र—जाना नहीं साया घमी ।

बनिमली—बही सा नीबिए दो बनी-मुची ।

रामनाथ—घब ली भी घा गया पचठे सिक् बाप्ये ।

ब्रिजेन्द्र—बयों निस्पृमा ?

निष्पत्ता—धब ठो मां जी न भी घाटा पूर निमा होया ।

त्रितोत्र —घोंस राइट बी बिल कम टुमोंग ।

रामनाथ—बैक यू ।

त्रितोत्र—बुड बाड

रामनाथ—बुड बाड । लेकिन जरा होसियारी से घायब रास्टे में हो जाय जससे मुठमेड ।

[त्रितोत्र घोर निष्पत्ता बाले हैं । रामनाथ उन्हें पतुबाकर घाता है घोर भीतर का द्वार बन्द करता है ।]

रविमली—(सिपड़ी के पास बैठती हुई) धब ठो मारे मुहल्ल में बाघ पैसती जा रही है । सब तमासा देखने क चौकीन है । उत भूत का मबा देन का उपाय बता देन का कोई तैयार नहीं ।

जुल्मी—मां भूत लम गई ।

रविमली—बटी धब कुछ डेर नहीं है । घसी सबसे पहले सुजी ही बनाती है । यह पलीनी रख बी मने घोष पर । (सिपड़ी पर पलीनी रखती है) ।

[ध्वजानक फिर छत पर एक बत्पर पड़ता है]

रामनाथ—हे ! यह ता फिर बोला ।

[फिर एक के बाद दूसरा कई बत्पर गिरते हैं ।]

रविमली—धब ठो बरनन लधे । जब बत्परत भी तब एक भी नहीं ।

रामनाथ—बी बाहता है उन दोनों का हाथ पकड़कर यहाँ बसीट जाऊँ घोर बिधा हूँ यह साधातू भूत । बहुत देखे ऐसे भूत देखने बाल ।

रविमली—बाहर का दरवाजा तो बन्द कर घाय न ?

रामनाथ—घसी भीतर-बाहर बानों ।

[फिर कई बत्पर बरसते हैं । उनके गिरने की आवाज के साथ बरबा गिरता है घोर बज्रह बिग का धतीस बिधाकर फिर परबा जती दुग्म पर चळता है । जुल्मी के तिर का घाब धब धज्या ही मया है । वह सिपड़ी सुनमा रख है । घाने-धीने का सामान घोर बर्तन एक तरफ रखे हैं । रामदेई घाती है । रविमली उतका स्वागत करती है ।]

बनिमली—नमस्ते । घाब तो घाब पूरे एक बख्तवारे बाद आई ।

रामदेई—क्या हाल है ?

बनिमली—बजले पल में तो कुछ नहीं हुआ । सब बह फिर काला पल धक हुआ है । सब देखा आज क्या होता है ।

रामदेई—हाँ कहते तो हैं बजले पल में मूठ-बेटों की ठाकठ मर जाती है और कृष्ण पल में वे फिर तेज हो जाते हैं । तुम्ही का भाव कैसा है ?

बनिमली—दो तीन दिन से धस्पताल नहीं जाती । भाव पुरा हो गया ।

रामदेई—मपवान् का बन्दबाद है । मूठ की राखि के लिये कुछ पूजा पाठ तो कराना ही ना ।

बनिमली—इन्हें मजा तो है घाब मैंने बिचड़िया बाबा के पास । घुना है, बीज घा परई तो वे एक-एक बात ही नहीं कह बैठे उसका रामनाम इलाख भी बता देते हैं ।

रामदेई—हाँ जरूर बत्ती से कुछ करो या छोड़ दो इस मकान को । मेरा बेटा कहता है मैं इसे बिल्कुल बिराकर फिर नए सिरे से बनवाऊँगा ।

बनिमली—मकान तो हम अभी छोड़ेंगे ना तो घाल हमारा सम्मान उठाकर बाहर रख ब या बर मूठ ही हमारा हाल पकड़कर हवें बाहर निकाल दे ।

रामदेई—राम ! राब ! यह भी कोई कहने की बात है ? हम क्यों तुम्हें निकालने लय ? लेकिन मूठ के मन में क्या है, इसे कौन जान सकता है ? धप्या है तो कभी सब फिर धँबेरा हो जायगा ।

[रामदेई जाती है । बनिमली उसे पहुँचाने बाहर तक जाती है । फिर धीमे ही रामनाम के साथ लौटकर घाती है ।]

रामनाम—मूठ के चेंके हुए पत्थर मेंने ईते ही बिचड़िया बाबा के सामने एक तो कहने लगे—वे पत्थर मूठ में केंके हैं ।

बनिमली—तुमने कुछ बताया नहीं होता ।

रामनाम—एक लपक भी नहीं । घपने थाप जान लिया-जम्होंने । यही तो बगकी ठापीक है । मेरे पुछा—नहाराब, यह कौन मूठ है ? बोले—बह पुछने इतिहास का मूठ है ।

बन्दिमल्ली—पुराना इन्डिस्तान ? पुराना इन्डिस्तान कौन है ?

रामनाथ—पुराने इन्डिस्तान दो हैं । एक धोपैरों का एक मुठलघानों का ।

बन्दिमल्ली—मान गए वे कभी किसी में ?

रामनाथ—मझे क्या मतलब ?

[रात हो जाती है । घंटेरा बड़ जाता है । रामनाथ बिजली जलाता है ।

बन्दिमल्ली बरबरा बन्ध कर उस पर लौकल चढ़ा देती है ।]

बुन्नी—पिताजी मुझे डर लग रहा है ।

रामनाथ—पगली कहीं की ! हलूमान जानीसा पड़ । मेने बाबा से पूछा—

यह मूल क्या चाहता है ? उन्होंने कहाक बिया—बहु बदला चाहता है ।

बन्दिमल्ली—कैसा बदला ?

रामनाथ—मेने पूछा—मेने क्या बिबाड़ा है ? बोसे—तूने पछकी हकिमाई लयी कर थी ।

बुन्नी—पिताजी !

रामनाथ—मत डर बेटी ! मेने कहीं किसी के कुछ नहीं किया । मैं बाप को पूछा भी नहीं फिर किसी की हड्डी क्यों खोर्नुंगा । उन्हें थोसा हो गया है ।

बन्दिमल्ली—घापने पूछा नहीं यह पत्थर क्यों बरसाता है ?

रामनाथ—बोसे—बहु दीवार बनाना चाहता है ।

बन्दिमल्ली—पत्थर बरसने बंद कैसे होंगे ?

रामनाथ—दीवार बन जाय तो पत्थर नहीं बरसेगे ।

बन्दिमल्ली—दीवार कहाँ पर बन जाय ?

रामनाथ—उसी पुराने इन्डिस्तान में ।

बन्दिमल्ली—कौन-सा इन्डिस्तान ?

रामनाथ—मसी जलाई जब मे डबर गया ही नहीं तो क्यों पूछना ?

बन्दिमल्ली—फिर क्या होगा ?

रामनाथ—देखा जायगा जो तकरीर में होगा ।

बन्दिमल्ली—ये पत्थर कहाँ है ?

रामनाथ—एक दूसरे बाबा को रं धामा है ।

रविमखी—कौन बाबा ?

रामनाथ—देखो मामूम हो जायमा एराब दिन में । रात हो गई । कोई बीब सूटी तो नहीं ?

रविमखी—धपनी प्रकम से तो सभी कुछ भ आई हैं । देखा जायमा फिर ।

रामनाथ—(ध्यान से बाहर सुनकर) कोई बाहर का दरवाजा बटखटा रहा है । जाना ही पड़गा । (भीतर का द्वार खोलकर बाहर जाता है) ।

रविमखी—बस्वी घा जाना । फिर दीपेरी रातें शुरू हो गईं । (बुन्नी से) शियड़ी मुमय गइ बेटी ?

बुन्नी—हां कमी की ।

रविमखी—तरकारी छोक मूं ।

[ध्यानक बाहर से रोता-बिस्तास्ता रामनाथ आता है । भीतर आकर एकदम दरवाजा बन्द कर फल पर साँकल बड़ाता है ।]

रामनाथ—धरे बाप रे ! प्रक तो नहीं रहूँ आता इस पकाल में । धरर माब रात जिबा रह गए तो कम सुबह होते ही मार्ने महीं से ।

रविमखी—कुछ कहो तो सही क्या हो गया ? पत्थर की तो कीईं माबाब महीं सुनी हमने ।

रामनाथ—देखे ! देखे ! सासात् देखे कामे-कामे ! एक नहीं दो-दो । कहने सबे मकमन छोड़ो महीं तो जिन्दा ही सबको बचा बाएँगे ।

बुन्नी—पिताजी पिताजी घाप यह क्या कह रहे हैं ?

रामनाथ—इर मत बेटी घाय की रात काट जो प्रम सबह होठ ही बिस्तर मोल कर बस बेंये बहीं से ।

[भीतर के द्वार की कोई बटखटाता है]

रविमखी—हे मयबाबू कहीं हो ?

माबाब—(बाहर से) रामनाथजी । दरवाजा खोलो इरो मत ।

रामनाथ—(माबाब पछुत्ताकर) इरोमाजी घाप है ?

माबाब—हां में हूं । भूठों को पकड़ आया हूं ।

बुन्नी—पिताजी घाप कहते थे भूठों को कोई नहीं पकड़ सकता ।

[रामनाथ द्वार खोलता है । एक जिखारी दो सिर से बर तक काले कपड़ों में बड़े 'भूतों' को निकार घाता है और फौरन ही बरबाबा डक देता है ।]

शबिमल्ली—ये कौन हैं ?

बरौया—मैं ची० घाह० बी० का बरोगा हूँ । कई हफ्तों से यंथा भिखार बनकर उबर यली में बैठ खड़ा था । जो घाब बल्बर घापने मुझे दिए उबां भरे बस्तबत ये । मेरा घग्बाज घायब ठीक ही है । ये है साक्षात भूत ।

रामनाथ—ये कौन हैं ?

बरोगा—(एक का मुँह खोलता है) ।

रामनाथ—हूँ ! यह तो हमारी मकान-मालकिन के मुपुन बितेनक हैं ।

शबिमल्ली—(दूतरे का मुँह खोलकर) यह ता निग्पमा पी है ।

[बरबा गिरता है]

पात्र

नारायण

परदा-तोड़क क्लब का मैम्बर बनने का उद्दीष्ट्य

कमेटी

उसकी स्त्री

बोला

उसका अपराधी

एक चाटवाला एक साहित्य सभार परदा-तोड़क क्लब के प्रधान और

उसकी पत्नी क्लब के दूसरे स्त्री और मुख्य मैम्बर

द्वेष—नारायण की बैठक सभार का एक याद और

परदा-तोड़क क्लब की मीटिंग

काल—एक शाम

परदा-तोड़क क्लब



‘घर के भीतर बात के सामने परदा, तुम्हें धरम नहीं घाती ?’

पहला दृश्य

[मेघ-कुरसियों से सजा नारायण का कमरा । वह एक कुरसी पर बैठा परदा-तोड़क कसब के नियम पढ़ रहा है । बाईं तरफ घम्बर जाने का द्वार है उस पर एक परदा पड़ा है । जमेली घुँघट काढ़ हुए भीतर से घांती है और चाय-मिठाई मेज पर रखती है ।]

नारायण—(किताब मेघ पर पटककर) घण्टसोल ! ईश्वर के इस ग्यान पर बलिहारी जाओ । मैं इतना घप-टू-डेट मीटसमैन और परदे का जामी बुद्धमन मगर मेरी भीमती इतनी रेंवार और परदे की पुजारिन । (जमेली का घुँघट उलटता है और उलकी काली सूरत दिखाई देती है । वह घम्बर भापने को कोसिख करती है लेकिन नारायण उसकी ताकी खींच सैता है) घर के भीतर पति के सामने परदा कैसा ? तुम्हें घरम नहीं घांती ?

जमेली—घण्टा साड़ी छोड़िए, घुँघट नहीं निकारूँगी । लेकिन घापके साथ उन नकटों के कसब से जाने को हटगिन राखी गही हूँ ।

नारायण—बुप रहो । जवान परलपाम हो । वे नकट क्यों हैं वो हिम्नुस्ताव भी इस सचियों की संवपी को इस गुलामी को दूर कर रहे हैं । नकटी तुम हो वो इस कामी नाक पर भी तीन हाथ का घुँघट काढ़े रहती हो । (बुचकारकर) धरी मान का जम्मो ! तू भी मेम्बर बनेगी और मे भी मेम्बर बनूँगा । घण्टी सोसावटी में घुँगे बड़े-बड़ा से जान पहचान होनी । जूसी हवा में टडलोनी हाण्टरी का बिम कम हो जावना । मन चाहा सीवा बाजार से सरीब लाघोपी, नौकर चाकरों की बक-बक मक-भक से छट्टी पा जाघोपी ।

जमेली—हूँ हूँ ! म न बनूँगी मेम्बर । घुँघटे के चक्कर और चक्की के फरों में मे बहुत भी हूँ घण्टी हूँ । घाप जाइए और मेम्बर बलिए, मैंने कब घापको मना किया ?

नारायण—लजिन पैच ली यही है । मैं तुम्हारे मेम्बर बने बिना मेम्बर नहीं हो सकता ।

जयेली—क्यों नहीं हो सकते ?

नरायण—कलब की विछप शर्त ही यही है । (किसान खोलकर बढ़ता है) किसी भी बहना को परदा-तोड़क बसब का मेम्बर बनने के लिये यह बकरी है कि वह अपने घर की कम-से-कम एक परदे वाली का परदा हूर करके कलब का मेम्बर बनाए ।" इसीलिये तुम्हारी खुशामद करनी पड़ी है । असो ।

जयेली—कभी नहीं । बूढ़ सहेगा घोर घोड़नी पहनकर बले बाइए घोर वहाँ जाकर कहिए मेरे घर में नाक बटाने के लिये कोई सुर्पगच्छा नहीं है ।

नरायण—तुम्हें होंसी घुमी है घोर मैं कलबवासों से बादा कर चुका हूँ कि दाब काम की मीटिंग में अपनी भीमती का परदा तोड़कर मेम्बर बनूँगा ।

जयेली—घापका बाबा पत्थर की लकीर नहीं है । फिर जाकर कह बीमिंग मेरी भीमती परदा तोड़ने से साधार है ।

नरायण—बाह ! कोई बात हुई ? कहेन कँता बचकूठ है । पहले क्यों चाया किया । घरे बादे को पूरा करता बेंडलमन की पहनी विसेपता है ।

जयेली—घाप मेरे लिये हार ताडी घोर खंपर माने के लिये कितनी बार कह चुके हैं क्या वे बादे नहीं वे ?

नरायण—(मुँह बनाकर तिर खलसाता है) हा सकते हैं । यच्छा बसब में बनो घयली तनक्वाह में सबसे पहले तुम्हारी ही फरमायदा पूरी की जायगी ।

जयेली—ये लाग गँवाकर जम डार के पहनन मे बाब घाई ।

नरायण—बेखो मुँधे घुरता बड़ जायया नहीं तो ज्वादा बड़-बक नन नरो । बूँपट हटाकर बाहर जाने में तुम्हारी कीनती दग्गत का नीलाम हुआ जा रहा है ? बुनिबा का बेखो घुठरी घोगतें किस तरह नई रोघनी घोर घाडाब हुआ में बल-किरकर जीने का सुख उठाती है । बड़ से बड़ घर की घोरतें बूँपट का जाम फाटकर तितलियों की तरह उड़ती फिरती है ।

जयेली—वे मोटरों में घमती हैं तुम्हारे पाठ तो एक छत्रा भी नहीं है ।

नरायण—घरी घारत की घबला तुम्ह सखियों से मरों ने घर की चार बीचारी के भीतर घुँपनी रोगनी घोर वाली हवा में ऊँद कर रखा है । तेरे

दिमाग से दुमायी के अयाग आगली से दूर नहीं हो सकते । (कुछ देर तिर पर हाथ रखकर सोचता है) लेकिन नहीं मैं तुम्हें अबबस्ती बलीटकर परद के बाहर ल जाऊँगा और पड़ोसियों को बता दूँगा कि मैं और औरत दोनों के अधिकार दगावर हूँ ।

अमेली—अमेली को घसीट के जाता जैसे है क्या ? अमेली परा छाड़कर उठ गये बसक मैं ! नहीं नहीं मैं इस बात को जवान पर रख ली नहीं सकती । लीलाची और सलीजी के समय से जो रीत बनी था रही है, जो लीला किनपों का धामूपन है जो नाब उनकी मर्बादा है—उसे छाड़कर फिर कहीं रह सकती ? नहीं नहीं मैं बात-बिरादरी में अपनी हँसी नहीं करा सकती मैं उस लोनों के बीच में रहना है ।

नरामन—(लंबी लीला सेकर) धो s s फूक । पिताजी ने इस बेबारिन को बुटिया मेरी टाड से बाँधकर बड़ी मस की । (एकाएक मुस्से में आकर उठका हाथ पकड़ लेता है) तू नहीं अमेली ?

अमेली—नहीं ।

नरामन—तुम्हें बचना पड़ेगा । (तिर पर से उठकी लाड़ी पीठ लेता है) ।

अमेली—जीते ली नहीं जाऊँगी । (बाड़ी सुझाकर फिर तिर डीब लेती है) ।

नरामन—कैसे नहीं अमेली ? (फिर उठकी बाड़ी पकड़कर जोधने लपता है) ।

अमेली—(बीनों हाथों और धुबनों से लाड़ी बजा मँहु डककर अमीन पर बैठ जाती है) मैं अपनी जाति के बर्ष को नहीं छोड़ सकती ।

नरामन—बहु बर्ष नहीं है, अयाग का बनावा तुम्हा एक निबब है जो पुण्या बड़ जाने से लड़ गया । मस अकरत है कि लड़े बदल दिया जाय ।

अमेली—(मुँह सिपाए कुछ कड़ी पकती है) ।

नरामन—तू नहीं अमेली ?

अमेली—कह लो दिवा नहीं ।

नरामन—(बरबकर) नहीं ?

अमेली—नहीं ! नहीं ! नहीं !

नरायण—ठा जा पर ! (लता मारकर घले परदे के भीतर बसेल बैठा है) तू मेरी कोई नहीं थीर मेरा तुम्हने कुछ वास्ता नहीं । नहीं पिउंया तेरे हाथ की बनी बाय । (बाय का प्याला धीरे मिठाई की तबखरी भी उठाकर भीतर खेंक बैठा है) ।

[कंचे पर बाल बड़ाए तरकारी की उलिया लिए बीगा घाता है । यह सब कुछ देखकर वह भीचकका कड़ा रहु जाता है ।]

बीना—बाप रे ! बहू क्या मामला है ? (नरायण बोकठर उतकी तरह बसता है) मीत्रिए बाबूजी (सम्झो की टोकरी बबोन पर रखकर पंते बपत करते हुए) ठेरु घाने मिन मीत्रिए । छ पेंके के घानु धीर छ पेंके की मिठी नाया हूँ । (शोनों हाथों से कान पच्छकर जवान कारता है) बरा बला ।

नरायण—कहाँ बला ?

बीना—घपने पर को हुजूर ।

नरायण—बजह ?

बीना—मेरे बाप ने मुम्हठे कहू रखा है कि जिस बर में मिया-बीवी लड़ते हो उठ बर का नमक पठ जाना ।

नरायण—(उतका हाथ पकड़कर खींचते हुए) ठहर-ठहर मुरल में फिर भी तरे मिय यहाँ रहन को जवहू बनाए देना हूँ । तेरे मिय बिना नमक की घम्झो घलय निकालकर रख दी जायमी । तू घपनी पाँठ का नमक मिलाकर कां लमा ।

बीना—(सुन होकर) बाहू ! क्या बात है बाबूजी बिनाम हसी को बहने है ।

नरायण—(घड़ी देखकर) कनक का बपठ हो जला बीना ।

बीना—हो गया बीना ।

नरायण—तुमिया के लयाम घुम्को की घोरठें मगदों के कचे स कंचा मिठाकर घाबिक नाबाजिक धीरे राष्ट्रीय उन्नति में बोड़ मया रही हूँ दिवित हिम्पुताव को कुछ घोरठों के दिमाव में देना दोबर मरा हुया है कि बात ही नहीं समझ पातो । जो बबड़ा निर डारने को मिला या घतमें मई

खिराने लयी ।

बीना—माजी तबे से कहाँ का काम लिया जाने लया ।

बरायत—बीना परदे में क्या कुछ भी कायदा बिबाह होता है तबे ?

बीना—कुछ नहीं सरकार परदा धाँक का इलाका है । इसके लिये ईश्वर ने ऊपर धीर नीचे दो पलकों के पगड़े दे ही रखे हैं । फिर यह एक रूपाट धीर ! मूढ़ पर मूढ़ ! मर्दे काटनेवाले ज़ुले की तरह कर्मता है ।

बरायत—तो क्या किया जाय ? जब बूँटवाली परदा छोड़ने पर राजामंड न हो तो फिर क्या किया जाय ?

बीना—मह खूद साही पहन धिर मया कर बूमने निवत जाय ।

बरायत—(ताली बजाकर) बाईडिमा ! क्या बात है ! धयरबे तुने मेरे मतलब की बात कही नहीं थी । लेकिन मेरा मतलब निकल धाया उसके भीतर से । मेरा मकाम इम हो क्या बायी मिल गई । बीना साड़ी पहनकर धीरव का बेम बना धीर मेरे साथ बन ।

बीना—कहाँ ठेकर में मरकार ?

बरायत—हाँ तूने ती हिम्मी निखिल पास किया है न ?

बीना—लेकिन मरा सारटीफिकेट जो क्या है । कही मंधीपिरी खाली है क्या ?

बरायत—धरे नहीं । (परदा उठाकर धम्बर चलता जाता है) ।

बीना—(तिर बजलाकर) कुछ मकाम में नहीं पाया ।

बरायत—(एक डुक लेकर वापस धाता है) परदा-तोड़क बलब में बर्सेम बीना बहुत तब बहुत बचक देना परंया । (बेब से एक लिखा हुआ कायम निकालकर बीना को देता है) ले पढ़ ले । (डुक खोलता है) ।

बीना—(कायम लेकर) लीजिए हेमिए धमी क्वीटी रेन बलाता हूँ । (बढ़ने लफता है) प्यारी बहनों धीर प्यारे माइयो धायने परदे के बिमाठ लड़ाई बढ़ने के लिये मेहरबानी काके हूँ भी धानै—

बरायत—(डुक के कपड़ों को उलट-बलट करते हुए) बर-बल बडल टीक । बेगी मुह ! तू बहुत होधियार है । के यह साड़ी पहन । (डुक में से साड़ी

निकासकर देता है) ।

बीना—बहुत घब्ररा सरकार । (सुन्न होकर पड़बसे को सेपार होता है) ।

नरायण—(उसे लाड़ी पहनाते हुए) मैं तुम्हें बलब मैं प्रपत्नी बीबी काहिर करूँगा ।

बीना—(धींठकर एक तरफ भागता है) धरे बाप रे । (बाहर की तरफ इशारा कर घपने काम मरोड़ता है) ।

नरायण—धरे उबर ! उबर कोर अटका नहीं है । धारे सिपनल डाकन है ।

बीना—हु-हु-हुडुर बपर बडुवी नहीं बापेनी ?

नरायण—धरे चुा चुप छस चुईल का नाप न ले ।

बीना—सैटिन कहीं बेभन तो बींभकर नहीं मारेंगी ।

नरायण—बुरख डरता क्यों है ? तेरे हाथों को सकना मार मण है क्या ? काहड़ी का कबाब लकड़ी से घोर पत्थर का पत्थर से देना । (उतकी बोती के ऊपर काड़ी पहनाता है) बेबना बडी हाथियापी से काम लेना बीना कहीं कनई न गुल बाप । घपने को बराबर घोरत ही सवभते रहना छाड़ी पहन लैने पर कोई स्पिकल काठ नहीं है यह । कुछ घाकाब बापीक कर देता धीर हाथ-पीर भी घोरतो की तरह जरा घडा से इबर-उबर हुलाका-दलाका । तेरे लंबे बाल भी घाज काम घा नए । कुछ छोटे अकर है मगर बांग्र सबक निए बापेसे । से यह अंवर पहन ले । (अंवर निकालकर पहनाता है) ।

बीना—(घोरतो की तरह नाज घोर घडा से काब) बरा घाडना तो देख लेने बींभिए ।

नरायण—बदन तो लगाने दे बरा ठहर । (बदन लया, कंठी से घलके तिर में घाम निकालकर हेयर-विभ लयाता है) ले ये जन्म पहन लो । (जन्म ली देता है) बस घड इसी बडी न घपने को घोरत सवभने लय ।

बीना—मागी ?

नरायण—(घपनी तरफ इशारा कर) हाँ ।

बीना—घड तो घाडना देख नू हुडुर ।

नरायण—ही अकर धीर जरा धीरत ली काम-काल वा नबुना ली

रिखा दे।

बीना—(ढोड़ी पर उँवती रख कर भाइना बैकता है) मगर एक बात रह गई थीर सब ठीक है।

नरामन—(घबराकर) क्या बात रह गई ?

बीना—रंग नहीं आया !

नरामन—नहीं आया ! घब क्या किया जाय ? (धड़कतीस क साप पालों पर हाथ रखकर बैठ जाता है)।

बीना—(कुछ सोचकर उझल पड़ता है) रंग नी आ नवा !

नरामन—(उठकर बीना का हाथ पकड़ लेता है) घरे किस तरह ?

बीना—बूट पॉलिश की दिबिया !

नरामन—बहुत बढ़िया ! क्या बात है ! थक यू ! निकाल निकाल बल्बी से बूट पॉलिश की दिबिया ! (धड़ी बैकता है) अभी इसक लिये भी बल्ल है।

बीना—(बूट पॉलिश की दिबिया धीरे बुबध निकालता है) म भीत्रिण सरकार।

नरामन—बीना तुने मेरी साब रख नी आन। नहीं तो में गिर गया हीठा बकर पम्बिक की नबरी में।

बीना—आप एक बात भूल गए !

नरामन—क्या ?

बीना—मे बीना बोड़े हूँ।

नरामन—ठीक नहूठी हो प्यारी ! लेकिन रिजर्स में बलती बल सफती है। नाटक में बबरवार रहूँगा। (पॉलिश निकालकर) लो पाँखें बंद करो।

बीना—(घम्बर की तरफ बैकता है)।

नरामन—घरी उबर क्या देख रही हो ?

बीना—बेकती हूँ बोर्ड डेना-पत्तर तो नहीं बला मा रखा है।

नरामन—ऐसी किसकी ताबत है ! लो पाँखें बन्द करो।

[बीना पाँखें बन्द करता है और नरामन बुक्य से उसके मुँह पर पॉलिश

सगाता है ।]

बीना—य-ह-हा ! बड़े मजे की खुमबू था रही है । जरा हमके-हलके हाथों से स्वामी जी ।

नरायण—देखो प्यारी सबों के बीच में जरा भी घामाघोभी तो छाय केनकर गड़बड़ा बायबा पीर हैसी उड़ जायगी ।

बीना—सजी बाह में पीरत बोड़े हैं या बबरा जाईगी ।

नरायण—मार जामा ! मार जामा ! अगर वहाँ यह कह दिया तो बपीर मरना हो जायबा ।

बीना—तोबा ! ठीबा ! (घपने गाल पर बपत लपाकर) नही स्वामी में मर्नों से बपों बबराईगी । (उसके हाथ में पॉलिघ लप जाती है, वह पकराता है) ।

नरायण—कोइ हरज नही । हाथो का रप दुसरा बोरे होगा । (बीना के बीनों हाथों में भी पॉलिघ लगा देता है । फिर उसे एक बमाल देता है) तो प्यकतू पॉलिघ लठ बमाल म पीघ लो ।

बीना—(बैसा ही करता है) ।

नरायण—मों यह सेरबर को काफी खेमानो ।

बीना—साइए प्राणमाय ! (सेरबर की काफी लेता है) ।

नरायण—(घड़ो बेककर) बमो घब पने ।

बीना—एक मिनट जरा घामना देख लू ।

नरायण—बसो ।

बीना—(लकड़ी की डोकरों से जलभर गिर बड़ता है) ।

नरायण—मैंबल कर । (उसे सँभालता है) ।

[दोनों बँधे हो जाने लगते हैं बीनर से बमेनी छींकी है—घाक—छी !]

बीना—(नरायण का हाथ लीककर) जरा देर कइर जाइए ।

नरायण—बनों ?

बीना—छीक हुई है न ?

नरायण—मुब बड़ी घाबबिबबसिनी है ।

बीना—घोरत जाठ ट्यूरी न ।

नरामन—ठीक-ठीक बिस्फुल ठीक ! मेकिन यह छीक पीठ पीछ की है इसका कोई दातरा नहीं । (हाथ पकड़कर उसे खींच ले जाता है) ।

[दोनों के आते ही अमेती घाठी है]

अमेती—(हाथ छोड़कर मयबाम् से कुछ प्रार्थना करती है) ।

[अयता परदा निरता है]

दूसरा दृश्य

[बाजार का एक मोड़—दोपे पर एक पाल लिए एक चाटवाला आता है ।]

चाटवाला—चाट ! चाट ! हाथ चाट ! पाठ चाट ! बटपटे मसासेबार ! खाने लो मया पावे बबखे लो याद रखे ।

[दूसरी तरफ से नरामन और बीना आते हैं । बीनी देखी हुई एक साइकिल एक तरफ से आकर दूसरी तरफ को खनी जाती है । नरामन और बीना का एकाएक साइकिल से एक तरफ को बचते हुए चाटवाल से टकरा खना । चाटवाला गिर पड़ता है उसका वाम बिहार जाता है । नरामन बीना का हाथ खींच लम्बे क्रम बढ़ाकर अन्धी छे बिलक गया पर चाटवाला सपककर नरामन को फिर वहाँ पकड़ जाता है । बीना भो धा जाता है और उसकी तरफ पीठ कर सका हो जाता है ।]

नरामन—(गुस्ते में) मया बाठ है ? तुम्हें धरम नहीं घाती ? मयक-निर्ण लने हारों से तुमने इस तरह एक जलपिन का हाथ पकड़ लिया । तुम पर दरबत इतक का मुकदमा क्यों नहीं बस सकता ?

चाटवाला—किस मुकदमे के फेर में पड़े हैं हजरत ! यहाँ देखो तुमने लो मया धारा खोमना ही उलट दिया । लीपा कर मे जमा धा रहा था अन्धी

बोहनी भी किसने की थी ? दृग्गत तो एक बमानटी थीच है । बाबूजी तुमने तो हमार पेन में छरी बार दी । रात कैसे कटेगी ? बाल-बच्चों को क्या मिनार्डिया ?

मरायन—हाथ छोड़ बी ।

बाबूजी—नहीं छोड़ूँगा । बिम्बा-बिबलाकर तुम्हारे चारों तरफ धमी पागो की भीड़ जमा कर लूँगा । मेरा लोमथे के पीछे रख दो ।

मरायन—कहता हूँ हाथ छोड़ दो । एक छरीठ घाबमी की बंदूखली मठ करो धीर खासकर उठ बसत बस कि उलझी बीबी उलझे साथ है ।

बाबूजी—धोखे सोतकन क्यों नहीं राह चलते ?

मरायन—मे पका-लिखा घाबमी क्या फिर घालीं मैं पट्टी बाँधकर बस रहा था । तुम ही रांग साइड पर थे । इतना सवा बीड़ा बाल कचे पर, उलझे सारी दुनिया का सामान सदा हाथ में घोंदीटी उलझे कड़ाई । मुँह में एक बीपू सकर उलझे भी बजाते बसो कि मोब कबरदार हो जायें । छोड़ो हाथ ।

बाबूजी—कभी नहीं ।

बीना—(साजन होकर) धोखे इलके तिर पर कुछ यह एसे नहीं मानेबा ।
[बाबूजी को डाक होता है और वह बीना की तरफ ब्यास से देखता है ।]

मरायन— धरे बस घाबमी हाथ तो छोड़ । (डुलरा हाथ साजन कर बड़ी में समय देखता है) ।

बाबूजी—मेरा पूर बारह गण का मास है । घालिरी पार्ह तक बसूत करूँगा (बहु फिर एक कर बीना की तरफ देखता है । बीना मुँह चिखता है) ।

मरायन—हाथ तो छोड़ नये । पीछे नहीं तो कैसे निकालूँगा ? (अडका देकर हाथ छोड़ा जाता है । बेब मे बस एण्ड का मोड निकालकर उलझे देता है) । दो एण्ड बासन कर ।

बाबूजी—(मोड को उगाड़-मतककर देना है) यह बस गण का मोड है । दो एण्ड घान धीर घाँठ के मोमेने या मे निकालूँगा ।

बीना—एक साथ ही बिक गया गली-बली माने-मारे फिरने से बचे ।
(नरामन से) पूरा मोट इसके सिर पर फेंकिए स्वामी बेर हो रही है । दोनों का जाना ।

आठवाला—(ठोड़ी पर बहून हाथ की धगुमी रख घोरतों के स्वर में) बेर हो रही है । (सहसा कुछ धार धाले ही वह चौंकर जाता है घोर बीना का हाथ पकड़कर खींच लाता है । उसके पीछे नरामन भी आता है) क्यों बोसत धाज बहून दिनों का मिसे । उबार आकर धब गफल भी नहीं दिखाते ।

नरामन—(हृषका-बबरा होकर) प्रो बेईमान तुम्हें हो गया क्या ? पराई घोरत का हाथ पकड़ लिया ?

आठवाला—(सलाम करके) धादाब धज है । बाबूजी यह सब बाकर धन्नों में कड़िए । यह बदमान तो दिन्नी है इसकी परछाईं देखकर ही मुझे धक हो गया था । इसकी धाबाज घोर लटके से धामिर पड़वान ही लिया मैंने इसे । नहीं तो धाज इसने धन्नी धूम भौंक दी थी मेरी धाँधों में । इस ठरुध सजाकर कहीं से जा रहे हैं इने बाबूजी ?

नरामन—(मुंह फिराकर मुट्टी बाँधता है) ।

बीना—छोड़ देर हो रही है एक बागह ठठर में जाना है ।

आठवाला—एक रुपया धाठ धाने पिछले रख बा धमी बरना कयामत तक नहीं छोड़ूया ।

नरामन—से यह है बड़ रुपया । (बसे बैठा है ।)

आठवाला—(बीना का हाथ छोड़कर दाम लेता है) जीते रहो बाबूजी पूरे धाक-भर में बसूम हुए हैं ।

[नरामन बीना का हाथ पकड़कर अन्दी से सरक जाता है । आठवाला धन्ना खोमना नमैठकर फिर धाबाज बैठा हुआ जाता जाता है—ग-र-र-न ।
बनी-नीनाला ३३ ।]

[परदा उठता है]

तीसरा दृश्य

[परदा-तोड़क बसब की घींटिंग । एक तरफ बसब के मेम्बर—घरें व घीरतें बँठी हैं । एक अर्धे मंच पर बसब के प्रधान खड़े होकर भाषण दे रहे हैं । पास ही जगजी धमकली बँठी हैं ।]

प्रधान—ईश्वर का बन्धनाब है रोड-बरोड हमारे बसब के मेम्बर बढते ही जा रहे हैं । इर बड़े सहर में परदा-तोड़क बसब की जाँच खुल रही हैं । घीरतों को अपने अधिकारों की पहचान हो जनी है । परदे का भूँषट डालकर जनको बिन-बहाड़े जल्दू बनाने वाले लोग रँह डियातै नजर आ रहे हैं ।

नरायण—(भीतर से) घीर किसी तरह इतना भूँषट सलटकर में भी आ पहुँचा बनाब ।

मेम्बर—(धींठकर पजर देखते हैं) ।

[नरायण बीना का हाथ पकड़े हुए आता है]

नरायण—भीबिए निकाल जावा मैं भी इस पिजरे से बाहर ।

मेम्बर—(खड़े हो ताली बजाकर) वाबाम ! मिसेज घीर मिस्टर नरायण ।

नरायण—(डोपी जहार सिर झुकाकर) देक यू ।

प्रधान—इमें घात-जसे निजर घीर साइसी सुधारकों की जलगत है तनी हिम्मुस्तान के लभाम धम्भबिश्वास मटियामेट होग । मैं घापका स्वागत करता हूँ मिस्टर नरायण घीर घापको बघाह देता हू ।

प्रधान की स्त्री—(जडकर) घीर मिमज नरायण म भी घापको घातकी हिम्मत घीर बुरदेवी के लिए बघाई देत हूँ घीर परदे के बाहर की घातारी की घाबहुवा में घापका स्वागत करती हूँ ।

[प्रधान की स्त्री नरायण का हाथ घीरतों से मिलाती है घीर प्रधान बीना का हाथ भरतों से मिलाता है । कुछ लोग अपने हाथ में बॉनिच की रपड़ लय आने से घबराने हैं । कुछ हाथ नूँघने घीर कमाल में पौँटते हैं । सब लोग घबरी-घबरी आहों में बँठते हैं । प्रधान घीर जनको स्त्री नरायण घीर बीना को लकर बँच पर जाते हैं ।]

प्रधान—घापको पररा-तोड़क क्लब में शामिल करते हुए हमें बेहद खुशी होती है। घाप क्लब की प्रतिज्ञा याद करके घाएँ हैं ?

भरायन—जी हाँ।

प्रधान—घण्टी बाज है। कापरे क मनाबिक सबके सामने प्रतिज्ञा कीजिए।

भरायन—म बम धीर ईस्वर को हाजिर-नाजिर समझकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने घर की छाम धीरतो का पररा मिटा दूँगा धीर उम्हे मरुओं के बराबर अधिकार ज्ञानित करने दूँगा। (बैठ जाता है)।

मेम्बर—(तल्ली बजाते हैं)।

प्रधान की स्त्री—घाप की नियम के अनुसार प्रतिज्ञा कीजिए। याद है ?

बीना—याद तो नहीं है। घाप बोल दीजिए, मैं बुरा भूँगी।

प्रधान की स्त्री—कहिए, मैं प्रतिज्ञा करती हूँ। मैं किसी बर्ख धीर जाति के मनुष्य से ऊन मून रेशम टाट-पाट मायनन प्लास्टिक बर्बरह किसी बीज का बना हुआ किसी तरह का पररा भारत नहीं करूँगी।

बीना—मैं प्रतिज्ञा करती हूँ किसी बरा (एक जाता है)।

भरायन—धमी जेनखाने से बाहर निकालकर लाया हूँ धीर घापने एक-एक कम्पार्सड सेंच इनके सिर पर लाद दिया। घाघा-घाघा कहलबाइए।

प्रधान की स्त्री—कहिए, मैं प्रतिज्ञा करती हूँ।

बीना—मैं प्रतिज्ञा करती हूँ।

प्रधान की स्त्री—मैं किसी बर्ख धीर जाति के मनुष्य से—

बीना—मैं किसी बर्ख धीर जाति के मनुष्य से—

प्रधान की स्त्री—ऊन मून रेशम टाट-पाट बर्बरह—

बीना—ऊन मून रेशम टाट-पाट बर्बरह—

प्रधान की स्त्री—किसी बीज का बना हुआ किसी तरह का पररा भारत नहीं करूँगी।

बीना—किसी बीज का बना हुआ किसी तरह का पररा भारत नहीं करूँगी।

प्रधान की स्त्री—(बोझती है)।

[नरायण मुस्से से घोर सब हीरानी से बीना की तरफ देखते हैं]

बीना—(सँभलता है) गी—बी—बी—कहेंगी परवा नहीं कहेंगी । अब धार हो गया । (तीन धार बुढ़ारता है) ।

प्रधान—ईश्वर धाप सोपों की पहर करें ।

प्रधान की स्त्री—(बीना से) कलक के नियम के प्रसंग पर धापको एक छोटा-सा सिक्कर देना होगा ।

नरायण—धरम की कोई बात नहीं । सिक्का हुआ पड़ सकती हो ।

बीना—(कापड़ निकालकर) पात्र बहुमा विन है । इसलिये मैं धर ही से कुछ सिक्कर साया है । (मेम्बर हीरान होते हैं और नरायण मुस्से से धरि पीतता है । बीना फिर सँभलता है) इ-इ-ई—माह सिक्कर भाई है ।

प्रधान—छोड़ हर्न नहीं सिक्का हुआ ही पड़िण ।

बीना—(पढ़ता है) प्यारी बहुमा धोर प्यारे भाइयो धारने परदे के सिक्का सदाइ लड़के क लिये मेहरबानी करके हर्न भी धरने कलक में धामिल दिया है । इनके कलक ह्व धारको ह्वय मे पयबाव बैठे हैं । प-र-ग यह तीन धारों का यह धून है जितने धोखों की धावारी को धीन लिया धोर उनके जीवन को पदुधो मे भी बधन बना दिया । मई बहुत दिन धोरों को ईश करके मनमानी कर चुके धर इनकी पोल तुल गई ।

मेम्बर—हियर, हियर ! (तासियाँ पीरने हैं) ।

बीना—परबो की इन कगडनी धोरता की इन मकामी धोर लमात्र के इन कलक को दूर कलने के लिये—मे परबा छाडकर मैदान में कल धाया है, (धीन हो धारों को छोड़ करता है) इ-इ-ई—धार्द मैदान में धूर भाई है । न मरे रिवात्र का गानमा हा जाय ।

मेम्बर—(तासियाँ बजाकर) हियर—हियर !

[माहुर कान्वाला धावात्र लगता है—“पकीही धरम—धरम पकीही !” धूनकर नरायण धरताता है धोर बीना धूर हो जाता है ।]

कि ऐ भोली-मासी घीरतो इस परदे के बास की बाटकर बाहर निकल आओ घीर तित्तसियो की तरह सूरज की सुनहरी किरणों में नाच करो । देखो पुरुषों ने दुनिया का सबसे कमकीला माम अपने सिये रिजर्व कर रखा है । धन्य में में आप सब मोनों का तन-मन-बन से सम्बन्ध करता हूँ । (सैनिक) टी-टी-नी करती हूँ । (बैठ जाता है) ।

[समाप्तव वाली बजाते हैं—तानियों की पड़पड़कट में आठवाला धाकर अपना खोमबा घोर संपीटी क्रूर पर रहता है ।]

आठवाला—(दोनों हाथ कमर में रक्कर) म र रं रं म ! पकीड़ी म रं रं म ! लता माफ हो मासिक ! इस परदा-तोड़क क्लब में जमा धामा हूँ लेकिन पकीड़ी बेच केने की नीयत से हरनिज नहीं !

प्रधान—बपरासी न नहीं रोका ? यह बबाली किरर से कुछ धामा यहाँ ?

आठवाला—इस परदा-तोड़क क्लब में कंसी रोज-टाक हुजुर बोके बीराहों घीर पूरे पलों में बपता हूँ । बड़-बोटे धमीर मरीब दीनो मेरी पकीड़ियों का मजा कैते है । एक बाम एक बाम ! एक छाय मसामा बैठा हूँ किसी के बाप को मासूम नहीं हो सकता और पकीड़ी भी जबसते हुए तैल में क्या ठमक रही है !

नरायण—(दीना से मैत्र के नीचे दिए जाने का इधारा करता है) ।

दीना—(मैत्र के नीचे तिर कर बैठा है) ।

प्रधान—क्या बनते हा ? निकलो यहाँ से ।

आठवाला—मेरी पकीड़ी स क्यादा करम धाप हरनिज नहीं हो सक्त ।

प्रधान—जह दिना जैसे आधो यहाँ तुम्हारी पकीड़ियाँ नहीं बिक सकती ।

आठवाला—इसकी जिसे फिर है ? (घंटो से एक खप्या निकालता है । उसे क्रूर पर बजाता है) बेसिए सरकार, है न सोटा ?

प्रधान—बहुत ही बुका ! कोई है निकालो इसे ।

आठवाला—जबर उसको भी ता बकड़ के बलूँ । सम्बन्ध कईमात्र विनुवाँ मूझे खोटा खप्या है यया भने कभी उसे कच्ची पकीड़ियाँ नहीं खिखाई सरकार ।

प्रधान—दिमाप खराब है क्या तुम्हारा ? यहाँ कोई विनुवाँ नहीं है ।

बाटवाला—माया है हुजूर मैं उसे यहीं धाते हुए देना है। उससे माय एक बाबूजी भी थे। उन्हीं से मैंने यह रुपया दिया है। (फिर रुपया बजाता है) सरासर लोटा।

नारायण—(बह भी मुंह खिपा जाता है)।

प्रधान—बकी मत हमारी मीटिंग पढ़बड़ा बी ! यह बर्नाल के बाहर है। ठीकर माफ़ कर खीमबा उतट दिया जायबा।

बाटवाला—बबमाय मैंने मैं कामिल पोत बरत में नाड़ी सपेटकर मैंने पूल दे गया।

प्रधान—(कुछ पाकर) कामिल घीर साडी ?

[कुछ मैम्बर लोप अपने हाथों को देखते हैं]

बाटवाला—हाँ हुजर कहना था ठठर करने जा रहा हूँ हो गया ठठर ? प्रधान की स्त्री—मिसेज नारायण घाय परदेन नीबी किय बड़ी देर से फर्ष पर क्या टटोल रही है ?

प्रधान—घीर मिस्टर नारायण घाय उबर क्या कर रहे हैं ?

नारायण—मैंनां क्या बगाऊँ मेरी फाउन्डेशन पैर और इनकी रिस्पेक्श विर पड़े हैं उन्हीं को जोष रहे हैं।

प्रधान की स्त्री—बड़ी देर हो गई बहुत महीं मिली ?

[प्रधान हीरान होकर कुछ सीबता है। बाटवाला नारायण का हाथ धीबता है।]

बाटवाला—घाराब बजा लाता है सरकार ! यह रुपया बिस्त्रुम लोटा है, इसे मिहरबानी करके बरत दीजिये।

बीबा—(मिन्न के लीचे माफ़ी घीर करर धोलता है)।

नारायण—बड़ बदनमीज हो बाहर दरवाज पर पड़ा रहना था तुम्हें ! (रुपया देखकर) लो यह क्या ! जाओ फौरन निकल जाओ।

बाटवाला—जै हा सरकार बी ! यह पाटा रुपया तो स लो ! (रुपया देखकर लोबबा समेशता है) पर्रर्रर्र ! परकीड़ी ! परकीड़ी पर्रर्रर्र ! (बता जाता है)।

प्रधान—मिस्टर नरामन कुछ समय में नहीं घाया ।

प्रधान की स्त्री—रिस्टबाच नहीं मिली बहुत !

बीना—(मेज के नीचे से) मेरे बाप-बारा में से किसी ने रिस्टबाच नहीं पहनी सरकार !

[सारी सभा चौंक पड़ती है । बीना हाथ में साड़ी-अंपर-बप्पल लिए मेज के नीचे से निकलता है घीर उन्हें नरामन के हाथसे कर देता है ।]

मेम्बर—(हम्माड़े में आ जाते हैं) ।

बीना—मौजिए सरकार, मंने लो उगी बक्त बापछे छट्टी मांगी थी । ग्ह बहूजी की चीजें उम्हें दे भीजिएया । बबा भला । जे राम जी की ! मेरे ठठर में लो पलनी हुई हो उसे माफ़ कर देना । (बला जाता है) ।

प्रधान—पछुनोम ! पछुनोम !! बेहूत पछुनोस !

मेम्बर—(उठकर नरामन की तरफ़ नकरत की संयुक्ती उठाते हैं) ।

प्रधान—पार जैने पड़ लिल घरीक मोन ऐसी करतूत करें ता बत हो नया ममार-मुबार ! बार्द ! बार्द ! बार्द !

मेम्बर—छो ! छो ! छी !

नरामन—(सिर नीचा कर बैठा है उसके हाथ की साड़ी-अंबर नीचे पिर जाते हैं) ।

[परदा गिरता है]

बड़े दिन का शिकार



“ बड़क खीरी की नहीं लाइसेत बीजूव घोर बंगल खुला हुआ ।”

[स्नान—भाबर का एक घना जर्मल । समय—संध्या । राज्नी घोर लंका-निया की प्रणयन गङ्गी । उसके भीतर समीन में पड़ सूखे पत्तों में लड़ बड़ाहर तुनाई बैती है । बाई तरफ से प्रमोद बम्बूक में गोली भरते हुए आता है । बम्बूक आबाज के निघाने पर बम्बूक स्थिर कर ज्योंही वह छोड़ी बबाना चाहता है कि डॉकिस आता है और उसके हाथ को खींचकर उसे रोक लेता है ।]

प्रमोद—शुक्र में ही तुमने टोक दिया ऐसी मजाक अच्छी नहीं है डॉकिस । (बम्बूक नीची कर लेता है) ।

डॉकिस—वैसी प्रमोद तुम मेरे किसी दोस्त हो । तुम्हारी भलाई-बुराई मेरा भला-बुरा है । यह बिलकुल धिक्कार के काबरे के खिलाफ बात है ।

प्रमोद—अरे बाई, बम्बूक खोरी की नहीं लाइसेंस भीजुप है और जंगल खुला हुआ । बड़े डरपोक हो तुम फिर और कौन-सा डाकवा-कानून है ? (फिर बम्बूक छानने लगता है) ।

डॉकिस—और भी तो एक बरीर लिखी हुई कानून की धिक्कार है । मुना बिना धिक्कार को देखे गोली नहीं चलाई जाती ।

प्रमोद—क्यों ?

डॉकिस—भाग जो कोई खूबार जानकर हुआ और तुम्हारी बोली छेदे अच्छी तरह न लगी तो वह बड़ी बेरहमी और बेदर्दी से तुम्हारी जान उतारकर रख देगा ।

प्रमोद—हूँ ! बिना देखे गोली ? वह मुनो वह आबाज छेदे को देख रहा हूँ । और वह पुराने पमाने में जो शम्भू-बेबी बाछ छोड़ते वे वह आबाज हा के सहारे तो वा । तुम बड़ बकियानुसी हो होना भी चाहिए । रेल के गाई छेदे, लोहे की बनी हुई लीक पर ही तो हमारा तुम्हारी बाकी बीकती है । वह बड़बड़ाहट नहीं मुन रहे हो तुम ? खंखी सूपर ही है । सूख पत्तों पर मे

ससकी बाब को साफ पहचानता है : (पिर बाबूक का निशाना बचारा है) ।

टांकिस—पछतामोने ।

प्रमोद—कभी नहीं । आज बड़े दिन की हुईगी परम हो जायगी तुम्हारी । सारी रेलवे जॉलोनी में खराब फेंस जायगी । तम भी ब दूध ठंमार रखी (गोली बजा ही देता है) ।

टांकिस—(भो मजबूर होकर अपनी बन्धुक टाकता है) ।

[झाड़ी में से एक भद एक पीरत पीर एक दबड़े की रोने की आवाज से आती है ।]

टांकिस—(निराश होकर अपनी बन्धुक नीची कर लेता है) साबिरकार कर ही जायी न तुमने नाबामी । अपनी जिद को बड़ा मानना धीर दूधरे की राम को मार्शाब समझने का नतीजा भुगथो भद ।

प्रमोद—(बन्धुक सैकर टांकिस की शरत में जाता है) तुमने ठीक कहा दोस्त मदद करो ।

टांकिस—मरी घोट में बहूँ झिोने ?

प्रमोद—किर क्या हुआ ?

टांकिस—पास ही तुम्हारी मोटर तो लड़ी है ।

प्रमोद—तुम भी माभो अपनी बन्धुक । दोनों को मोटर में भेज दें । (उत्ते हाप से बन्धुक लेना चाहता है । डाइवर को पुकारता है) डाइवर ! डाइवर ! (कोई आवाज नहीं मिलता) ओ पया क्या ? माभो दैते नहीं नहीं बन्धुक ?

टांकिस—वह बुजदिली है ।

प्रमोद—नहीं माभेने नहीं सिर्फ बन्धुके ही मोटर में फार्म की भेज दैते है ।

टांकिस—यह क्या बहादुरी है ?

[पीर भी पीर से रोने की आवाजें झाड़ी के भीतर से आती हैं]

प्रमोद—लेकिन मेरा कसूर उनना नहीं जितना उनका है । वहाँ झाड़ी के भीतर घुसकर बैठे है । यह जानवरो क रहने की जगह है या दमाग की ?

टांकिस—भव हवें पीठे को नहीं धान को देखना चाहिए । मुझे तीन

साबाई सुनाई दे रही है। एक मर्द, एक बीरत एक बच्चे की।

प्रमोद—पोली एक ही के मनी है टाकिंस।

टाकिंस—कैसे कहते हो? पोली चाया हुआ हमेशा के लिये बुर भी तो हो सकता है?

प्रमोद—टाकिंस! बचाओ।

टाकिंस—मरे तुम तो बचे ही हुए हो। घोर घमने बचने की नया धब हई बचाने की कुछ कोशिश करो।

साभी—(झाड़ी के भीतर से) हाय! हाय! बड़ा रे! मारि रिहिंस!

साभी की स्त्री—(वहीं से) मोर सुहाब केर साम!

साभी का बच्चा—मो! बप्पा रे बप्पा!

टाकिंस—तुमने आज मुझे भी फँसा दिया प्रमोद। बड़े दिन की छुट्टियों में बम्बई की सैर का प्रोग्राम का तुमने इस साबर में भरमा दिया। धब क्या हुआ?

प्रमोद—टाकिंस! मैं बाबे के साथ कहता हूँ मरा कोई नहीं है।

टाकिंस—पगर मरा कोई नहीं है तो ससकी मेहरबानी है। यलो बायलों की लम्हापी मोटर में बस्ती से वास्तुताल पहुँचा दें। यही पहला फर्ज है। किन्तु पपर किमी के गहरी गोली घुस गई तो तो?

प्रमोद—(बाब से एक मोर्ते की गहरी निकालकर उसे दिखाता है) यह देखिए उसका भी इलाज।

टाकिंस—यह क्या मोर्ते की गहरी! अंपल में क्या इसी मतलब से रख घाप वे?

प्रमोद—जाने की सुनाई का जगतान करने के लिये कल ही ब्रेक भुना लिबा था। गाड़ीवाज आज बड़े दिन की छुट्टी घमझकर नहीं घाप। बस्ती में बेश ही मैं रख लाया। मुनीम भी इन छुट्टियों में घपने पर गए हैं।

साभी की स्त्री—(झाड़ी के भीतर से) पिसुका रे! धब हमार के बाप?

टाकिंस—जीन हो तुम इस प्यड़ी के भीतर? बाहर निकलो भाई। देखे बबराने के काप नहीं बनेमा।

साम्नी—(झाड़ी के भीतर से) धो मीवा रे ! मरि गया ! ऊँ इ इ (कराहता है) ।

डॉकिंस—वे नहीं धा सकते तो बना प्रमोद इसानियत हमें पुकार रही है उधर ।

[दोनों झाड़ी की तरफ बढ़ते हैं]

प्रमोद—किबर से है रास्ता ? वह भी मला किसी मसे घायमी के पसने की जगह थी ? क्या हो गया ? इधर घामो ।

साम्नी—(झाड़ी में से) हाय ! हाय ! अब हमार के बाब ?

डॉकिंस—मरा ठो नहीं जान पड़ता चायब बकर हुपा है कोई । (झाड़ी में देखकर) वह दिखाई भी एक घोरत ।

साम्नी की घोरत—मारि दिहिय बा मारि दिहिय बा ।

डॉकिंस—झाड़ी से बाहर घामो मारि ।

साम्नी—(भीतर से रोता हुआ) कैसन बरबू सरकार ! योनी मानि क्या ।

प्रमोद—योनी ? कहाँ लयी ?

साम्नी—(भीतर से रोते-रोते) बोड़ माँ !

प्रमोद—(घाड़ी पर हाथ रख संतोष की साँस लेता है) ।

[सिर पर पठरी धीरे धीरे रोते हुए लड़के को लेकर साम्नी की सभी झाड़ी के बाहर घामे लमतो है ।]

डॉकिंस—पठरी तो सिर पर से उतार लो, लड़के की भी । सभी चीजें लादकर मला कैसे बाहर घा बकोबी ?

साम्नी की घोरत—(पठरी धीरे लड़के को कभीन पर रखती है) ।

[डॉकिंस उसके पठरी धीरे प्रमोद उसके लड़के को लेकर बाहर आता है । साम्नी की घोरत भी ।]

डॉकिंस—मारि माँ ! कौन से रास्ते से गए तुम इस झाड़ी के भीतर ?

साम्नी की घोरत—एक घरीब कैर मान बड़े दुह-दुह बरबूक !

साम्नी—(भीतर से) ई बिपावान जंबल मो मानुष कैरि जानबर बनाइ मारि दिहिय बा ।

प्रमोद—धीर बह कौन है ?

ताम्बी की धीरत—बाटे । ऊ हमार भतार हुम्न बाट । उनकेरि तुम बोली मारि बिहिन । हम सोहार का बिगाड़िस रहा ? ऊँ—ऊँ—ऊँ ५ (रोती है) नीली । पोट माँ ! कौसन घइवे ?

प्रमोद—धीरब रखो माँ हम उठे घनी ले भावेया । (झाड़ी के भीतर बुझता है) ।

टाँकिस—मकान कहाँ है तुम्हारा ?

ताम्बी की धीरत—पूरब बिना सरकार । (रोती है) ऊँ ५ ५ ।

ताम्बी का लड़का—(रोता है ।) ऊँ ५ ऊँ ५ ऊँ ५ !

टाँकिस—सड़के को चुप कराने के बरके तुम सुब भी रोने लगी ? देखो ऐसे कोई फाबवा न होपा ।

[प्रमोद ताम्बी को अपनी पीठ पर लादकर झाड़ी के भीतर से निकलता है । ताम्बी के पैर में उसके सिर का साफा लिपटा हुआ है धीर उसके बंधे पर एक फटा-पुसला कंबल है ।]

प्रमोद—(ताम्बी को बड़ी लबरबारी से जमीन पर रखता है) ।

ताम्बी—(कराहता हुआ जमीन पर बैठकर अपना पैर पकड़ता है) ।

टाँकिस—इस झाड़ी में कहाँ से धाकर मरे तुम ? इतनी बड़ी बुनिया में धीर कहीं बनह ही नहीं रह गई थी तुम्हारे लिये ?

ताम्बी—गरीब मगह, मजूरी क' तमास माँ रहिन रहा । बंधन माँ रस्ता भूज गहन रहा । का करि ? फुटस तकरीर । रात काटे बदे इहाँ बसा भाहन रहा । (बिल्लाकर) धो—हो—हो । बड़ा बरब बाव सरकार ।

प्रमोद—बह नवा धिर का तमाम साफा लपेट लिया पैर में ? बिछाओ कहाँ पर लबी है पोसी ? खोलो पट्टी ।

ताम्बी—(पैर को हाथों से पकड़कर) ना—ना—ना—ना । हाथ माहीं बपाओ । धो—हो—हो—हो । (बाँस पीसता है धीर लम्बी साँस छोड़ता है) फू ५ ५ ५ । हूँही में छेर हो नभा बाबू जी ! धब के मजूरी बेने ? कौसन रोटी मिलिबे ?

डॉक्टर—घरे भले पावनी बरा दिखायो तो बही ।

साथी—ऊँ हूँ-हूँ हूँ ! अब मरि बइबू !

साथी की धीरज—(रोती है) अब मरि बइबे मोर अठार ? तब हूय
कैसन नियम हो गया ! ऊँ \$ ऊँ \$ ऊँ \$!

साथी का सड़का—बप्पा हो मोर बप्पा ! ऊँ \$ ऊँ \$ ऊँ \$!

डॉक्टर—तुमने तो पासमान छिर पर उठ सिवा । एय काम नहीं बलेवा ।
बिछी के जान-भूमकर बोड़े मोली बसाई । तुम्हें अभी मोटर में अस्पताल पहुँचा
बैते हैं ।

साथी—अस्पताल ? नाही हमका पापा माँ पहुँचाव य ।

प्रमोद—बाने में किससिमे ?

साथी—रबट तिसइक ।

डॉक्टर—किसकी रपो? दिखायोमे ? बिछी तुमनी से बोली नही बसाई
हमने ।

प्रमोद—ए से बेर मत करो । कौरन ही अस्पताल जाकर अपना इलाज
करायो पहले । बंसे हा जाने पर फिर जाना बाने में ।

साथी—(रोते-रोते) घरे बरीब का के इलाज करिबे ? कैसन बोड़
बुड़िबे ? कैसन दो बइबाक' मजूरी बिलिबे ?

साथी की धीरज—(धीरे धीरे रोते फिर) घरे बरीब का के इलाज करिबे ?
कैसन बोड़ बुड़िबे ? कउन दो बइबाक' मजूरी बिलिबे ?

साथी का सड़का—है मोर बइबा ! है मोर बप्पा !

प्रमोद—(बेब से मोरों की मजूरी निकालता है) यह देखो यह मोरों
की मजूरी है । (एक-एक कर मोर जलता है) ।

साथी—अरे ! कैसन नइबू अस्पताल ? है मोरी बप्पा रे ! (रोता है) ।

प्रमोद—हम अपनी मोटर में पहुँचा देने को तो बइबे है ।

साथी—राज रे राज । अब बोड़वा काटि बिहिन बइबे । तब का बइबू,
का बइबू ? (रोता है) ।

साथी की धीरज—(रोती हुई) ईया रे ईया । अब बोड़वा काटि

विहित अहमे । तब का कमरू का बहनु ?

प्रमोद—मेरे सब इंतजाम हो जाममा पहले घस्पताल में बचा तो करा लो ।

साम्मी—रीरा सरकारी मनई बाट ? ई बगुन ?

प्रमोद—मेरे पिठाबी का बहुत बड़ा फार्म है । पहले पीर तो ठीक करा लो । मजूरी का इंतजाम होते देर न मग्गी । (मिलकर उसे सी छपए के मोड बैठे हुए) सो ।

साम्मी—का हो ई ?

सामी की धीरत—(घबर पीर से देखकर रोने के स्वर में) हम हु देखि त ।

टाँकिस—गोट हु नी छपए के । माग कुम यए तेरे ।

साम्मी—(मोड लेकर भीतर की बज में रखता है उसके कंधे का कंबस गिर पड़ता है जमीन में) धो छपए ! राम की तोहार बना करे !

साम्मी की धीरत—(रोने के स्वर में) बिसुबार बध्या ! तोहार कम्मर गिर पवा !

साम्मी—(स्त्री को डाँटते हुए) रोबत काहे ? चुप र' (लड़का रोता है) चुप कर बचवा के ।

साम्मी की धीरत—(चुप हो जाती है । लड़के को थोड़ में से चुप कराती है) घाी निदिया ५ ५ ।

साम्मी—घस्पताल पहुँचाइ छ ।

प्रमोद—घस्पताल में बचा कहोगे कैसे चोट लबी ?

साम्मी—कै देबो सरकार जंगल माँ एकी बरखत पर से गिर गइल रहा ।

प्रमोद—घादमी बनता पुरबा है । यही बात एक लम्ब में नहीं माई, इतनी घबस रखकर भी इस झड़ी के भीतर क्यों चुप पड़े ?

टाँकिस—नहीं तो ये सी छपए कैसे मिलते ?

प्रमोद—(बोर से घाबाव देता है) डाइबर !

डाइबर—(तपप्य से) बी सरकार ।

प्रमोद—जहाँ तक बाकी घा सके बड़ी तक लाकर धीरत यहीं मायो । एक

बायल को धसपताम पहुँचाना है ।

टाँकिस—बस सकोये माड़ी ठक ?

सामी—(बन्नी बर बीडे-बीडे धामे को सिलकता हूमा) हई-बी-बी-बी !
वी बबवा रे ! (एक बायल है) ।

[नेपथ्य में मोटर के धामे की आवाज । मोटर बोलू बिकर एक जाती है]

डाइबर—(हौकर प्रता है) सरकार, मोटर हाबिर है ।

प्रमोद—इसे धसपताम में भरती करा माओ । बैचारे के बेर में बोट लग
बई है । येरा नाम सेना डॉक्टर साहब है । जो कुछ बर्ष सनेवा में बूबा ।
बास्वी सीटना हम ठीक यहीं बर मिलेये ।

डाइबर—(सामी का हाब बन्नुकर) बला उठो ।

सामी—(बई से चीकता है) डॉ S D, मरि मवा भाई ।

टाँकिस—डाइबर, तुम इतका बह पैर बफड़ो बिसमें बोट नहीं है । पै
बोलो हाब बफड़ता हूँ । तुम येरी बन्नुक संबालो । (प्रमोद को धरनी बन्नुक के
बेता है) ।

सामी—(धीरछ से) बबवा के उठ्य बठरी उठ्य—बब !

[टाँकिस और डाइबर सामी को उठाकर ले जाते हैं । बठरी और बन्ने
को लेकर उसकी धोरत भी जाती है ।]

प्रमोद—यह कम्बल यहीं रह गया उठ्य से जाओ न ।

सामी—(नेपथ्य से) घाटि बवा बीबर के होई ?

प्रमोद—(बहो बर से उनको जाले हुए बैकता है) ।

[नेपथ्य में मोटर स्टार्ट होकर बोलू बिकी हुई जाती है । टाँकिस सीबरकर
जाता है और प्रमोद के हाब से धरनी बन्नुक ले जाता है ।]

टाँकिस—बलो हस्ती धाम घूटी ।

प्रमोद—एक लो बरए की बरत लो बइ गई भाई ।

टाँकिस—बामी हाब लौट जाना ठीक नहीं जान बइता । बोस्त लीय धर
बडाक उडाबेने ।

प्रमोद—टाँकिस ! बह पड़ी ठीक नहीं है । धाँसी के पुरे से धरनी बई

माम से लूँ है। बरा बकत टन जाने दो; दस-बीस मिनट घायम कर लें यही पर।

[दोनों कमरे पर बठकर लिबरेट लुमपाकर पीने लगते हैं और बन्दूकों को लिफ्ताने आकर भेद करते हैं। परदा फिरता है और एक घंटे का प्रतीत दिखाकर फिर उठ जाता है। टॉकिंस और प्रमोद दोनों उठी अपहू सोए हैं। प्रथमक डॉकिंस उठ जाता है।]

डॉकिंस—(पड़ी बैककर प्रमोद को उठाता है) प्रमोद। प्रमोद। उठोने नहीं? दस-बीस मिनट के बरसे पूरा एक बंटो सी मय हम। बनी थाप हो गई, थापब कोई सिकार हाप लप थाप। (दोनों उठ जाते होते हैं। प्रथमक बाहिनी प्रोर पत्तों की धड़कड़ाहूट सुबकर) यह सुनो है म सिकार?

प्रमोद—हो सकता है लेकिन बिना देसे सोनी नहीं छोड़ूंगा। सी रपप इस बसीहूत की धमी नकद कीमत चुकाई है।

डॉकिंस—आवाप। (उबकी बीठ ठोकता है) बनी फिर देबकर ही सोनी छोड़ना।

[दोनों बातें हैं]

प्रमोद—(नेपथ्य में) फिर टॉकिंस?

डॉकिंस—इसी बान के पेड़ की बमस में। ठीक नाक की तीब में। देखो?

प्रमोद—हाँ देखा। लेकिन यह तो कोई धावनी है। बीकता हुपा था रखा है।

डॉकिंस—इली की बाहूट सुनी होबी। बनी वहीं कुछ नहीं है वहाँ। बाहर के झीटने का बी बकत हो पया।

प्रमोद—बनी सैने तो बहूने ही कह दिया था धाव ठीक बड़ी नहीं है।

[दोनों लौटकर आ जाते हैं]

डॉकिंस—यह धावनी तो इबर ही बना था रखा है।

प्रमोद—(उबर बैककर) यह तो हनारा ही सुनी बान पड़ता है।

[विघन का घाना]

विघन—सरकार।

प्रमोद—बनो बिघन खैर तो है ? तुम्हारी बात खीर खर में यह बनराहट
कैसी है ?

बिघन—एक सामी नाम बना है छोटे तरकार । इसी खबल में उसके
घाने का सठ मिला है ।

प्रमोद—कब माया ?

बिघन—प्राज ही बजररम तुम्ह । कठी को बुँकने घाया हूँ । घापने तो
नहीं देखा ?

प्रमोद—मे क्या तुम्हारे साक्षियों को पहचानता हूँ ? कम ही घाम तो म
छुटी पर घामा ।

टॉटस—कुछ हुनिया तो बताओ जतका ?

बिघन—घटने एक की मेली बोठा बरन में मिरजई खिर पर एक मिला
साध्य खीर कप पर एक पटा सास कमबल । (बमीन बर एक कमबल बड़ा
बैजकर) है ! कमबल तो यहो जान पड़ता है ।

टाकिस—(तासो खीरकर हँसता है) हूँ—हूँ—हूँ ! बाद मोंड ! खीर
सकके सप जसकी खीर खीर एक छोटा लकड़ा भी था ?

बिघन—हाँ—हाँ ! नहीं—नहीं ! घापने देखे ?

टॉटस—माई देखे तो सही सेकिन बरख नहीं ।

बिघन—नै दिख तरक मए ?

प्रमोद—जाने भी से बिघन जहाँ भी बए ।

बिघन—जह पिताजी से रागा पेघपी सेकर जाना है खरकार, जाने कैवे
हूँ ? मे जने बिना हुबकड़ी पहनाए खेन नहीं लूँगा । फिर को मए मे ?

प्रमोद—यए नहीं हमारी माटर मई है जग्हें पहुँचाने । कुइबर माकर
बठापेया ।

बिघन—हूँ ! हूँ ! बह क्या क्रिया घापने ?

प्रमोद—मैने जत खीर की टॉस में खोली मार की । जाने भी से जठे
करनी का पत मिल गया । सेकिन मोटर मे बड़ी खैर लया की ।

[नेबण्य में मोटर का धीवू]

बड़े दिन का तिकार।

टांकिस—शाबर या नहीं।

प्रमोद—मिस्टर टांकिस यह कसे ताज्जुब की बात है, पिता के प्रपराबी को सया गया पुत्र के हो हाय से मिलनी थी ?

टांकिस—मैं कुछ घीर सोचता हूँ मुझे तुम्हारी बात से इतिहास नहीं।

प्रमोद—बाइबर का मा जाने दो।

[बाइबर घाता है]

टांकिस—क्यों पहुँचा घाय उसे अस्पताल ?

बाइबर—वह नहीं गया अस्पताल।

टांकिस—क्यों ?

बाइबर—कहने लगा ठीक हा नहीं बात।

प्रमोद—हूँ ! जोट ठीक हो गई ? उसके पैर को पट्टी ?

बाइबर—उसके सोलकर सिर पर लपेट ली।

प्रमोद—पैर की पोसी ? पाब ? खून ?

बाइबर—कहीं कुछ नहीं सरकार।

बिभान—फिर कितना गया वह ?

बाइबर—मोटर कम्पनी में टिकट घर की तरफ।

प्रमोद—तुम पहुँचा घाय से ?

बाइबर—नहीं वह खुद ही लौटकर जमा गया था।

टांकिस—यही पर तुम्हारी बात से मेरा इतिहास नहीं था।

बिभान—उसने कहीं का टिकट खरीदा ?

बाइबर—मैं गया था।

प्रमोद—तुम्हें उसे पकड़कर यहाँ मेरे पास लाना था। वह मुझे सोचा

देकर बना गया।

बिभान—घीर आपके पिताजी को भी लो।

प्रमोद—पिताजी से कितना पेशानी से गया ?

बिभान—नकर बो सी रूप।

प्रमोद—सी से पूरे ठीक सी रूप।

विद्यन—छी धीर कीज से ?

प्रमोद—कुछ नहीं विद्यन पिताजी से कुछ न कहना ।

विद्यन—लेकिन पुस्तक में बाहर सभी बुद्धिया कपता ही पढ़ना ।

प्रमोद—बड़ी देर सयाई तुमने बाहर ।

कुम्हार—पंचर टीक करने में देर हो गई सरकार ।

बांकिश—बसो प्रमोद क्या कामका घर ? इस बड़े दिन के प्रकार में हम

कुछ ही मुर्गी बन गए ।

प्रमोद—बसो लेकिन विद्यन कुछ पिताजी से ही ।

[सब जाते हैं मोटर के चोंचु की प्रायाज के साथ-साथ परदा पिरता है]

पात्र

रौंधिया

उतका पहाड़ी लीकर

सन्तू

उतका सवुका

बहुजी }

बाबूजी }

वे दोनों

बालिया

● स्थान—बाबूजी का कमरा

काल—दिन के १० ४२ से ११ २२ तक । बीच में पंद्रह मिनट का महीत

साटरीफाटक



“रोमिया को घोड़ा बना लालू का प्रवेश।”

[बाबूजी का कमरा । एक घोर दर्शन एक तरफ मित्र-कुरसी । परलोक के नीचे एक टुक एक सुद-नेस एक चहूँदानी । मैत्र पर एक प्रामोक्षिक, उसके सहारे कुछ नितायें जसम-रवात घोर एक प्रताप यकी । वो धाने-जाने के मार्ग । भीतर के माग से रीशिया को घीड़ा बना उसकी रस्सी की लपाम एक हाथ से धामे लसुनू धाता है । उसके दूसरे हाथ में एक सक्की है । रीशिया की कमर में बंधी हुई घोठी में एक हाड़ कोसकर घोड़ की पूँट बनाई गई है ।]

रीशिया—(लसुनू को गिरा उठकर धपने कपड़ भड़कता है) नहीं लसुनूजी बस हो गया सब ब्यादे नहीं । बाबूजी गए हैं नहीं मोकपी की सोच में धीर बहूजी महा बुनी होंगी । दोनों में से कोई भी जिमी बस्त धा सजते हैं वो गया बहूँगे । मुबह से धयी तक मेने बीठक में भड़कू नहीं बी है । (पीठ पीछे कोसा हुमा भड़क निकालकर) धाप भी तो सबक याद करने बीऽ भाइए नहीं तो कनपकड़ी हो जायगी ।

[लसुनू कुर्सी पर बंठकर प्रामोक्षिक में जाती देता है । रीशिया हाथ से झपारा कर मना करता है ।]

लसुनू—मया पीठ है मुनते ही फड़क उठेगा ।

रीशिया—मे तो कान में घेंगुली कोष कैठा हूँ । (दोनों कानों में घेंगुलियाँ लोप कैठा है) ।

लसुनू—(प्रामोक्षिक में मुई बदल रैकांड बनाता है) ।

रीशिया—(धीरे-धीरे एक कान की घेंगुली हटाता है) याना धबध्ना लपटा है दूसरे कान की घेंगुली भी हटा देता है धीर दोनों हाथों से ताली बजाने लपटा है) ।

लसुनू—मरे बरबादा तो बन्द कर ले नहीं तो फिर कोई बहाना न बस सकेगा ।

रीशिया—(लौकल देकर बरबादा बन्द करता है कमा फर्श पर हाड़ू देता है धीर कभी ताली बजाकर लपटा है) ।

[कुछ देर बाद भीतर के दरवाजे पर खट-खट होती है। लल्लू भद्र के प्रामोक्षीय बग्न कर किताब पढ़ने लगता है और रौंझिया जोर-जोर से मध्न् देना प्रारम्भ करता है।]

बहुजी—(दरवाजा खटखटाती हुई) मध्न् ! न खोलो दरवाजा ?

रौंझिया—(भद्र से मध्न् देना छोड़कर) भाग है क्या ? धाया बहुजी पाया। (द्वार खोलता है)।

बहुजी—(ताजे बुने हुए बालों के ऊपर लोलिया रखे धरती है। धाये ही रौंझिया के कान टूँटती है) क्यों रे प्रामोक्षीय किसने बताया ?

लल्लू—(बाँ की गजर बजाकर रौंझिया से कुछ न कहने का इशारा करता है)।

रौंझिया—मैं क्या जानूँ किसने बताया ? न मुझे चाबी देने का पहर, न हुई सबाजी घाती है और न रिफाहों को बचना घाता है।

लल्लू—(जोर-जोर से किताब पढ़ने लगता है) एच-ई ही ही मने बहु मर्दे एच-एच ई पी पी मने बहु धौरत।

बहुजी—लल्लू किसने बताया प्रामोक्षीय ?

लल्लू—(बिलकुल अनजान होकर) प्रामोक्षीय ? कहाँ ? कैता ? नाँ। मे लो यहाँ किताब पढ़ रहा हूँ। जाने कहाँ किसने बताया ?

बहुजी—यहीं बताया।

लल्लू—यहाँ किसी ने नहीं बताया। बहुजने मैं बजा होपां वा तुम्हारे म्दान बर्न होंगे। देलो प्रामोक्षीय का इवकन बन्ध है जैसे बाबूजी बन्ध कर म्ए के एच ई ही—

बहुजी—धीर धीरे तक तुम्हें मध्न् भी नहीं दी रौंझिया।

रौंझिया—भायके पीने बालों में धूल बन बावनी इसमिय हाथ रोक दिया है। धाच यहाँ से जायें तो फिर चने मेरा मध्न्।

बहुजी—मध्न् घाने दो उन्हें ! (नृह बनाकर चली जाती है)।

रौंझिया—(मध्न् देने लगता है)।

५—एच-एच ई पी पी मने धौरत। रौंझिया तुम्हें बाबूजी है धंवेबी

में घीरठ के लपन में बड़े के लपन से एक हकक बाकी है। क्यों हुआ ?

रीबिया—घाबहुवा का घसर मेमे सुना है घीरठों की तगुररती घच्छी रहती है वहाँ ठंडे मुसक में ।

[बाहर के दरवाजे पर खड़-खट होती है]

लल्लू—देस तो कीम है ?

रीबिया—साए, बाए बाबूजी बीकरी बूँडकर साए। (दरवाजा खोलता है)।

बहुजी—(भीतर से आकर) क्या कहा साहब में ?

बाबूजी—(भीतर आकर) क्या बतार्क ? घर्बी के साथ टाटिफिकेट मस्वी करवा पूष गया । (बस्वी में मेज पर की कुछ किताबों में बूँडता है, नहीं किताब) ।

बहुजी—कहाँ रखा वा ?

बाबूजी—(तिर कुजाकर) कहाँ बतार्क ? बारह बजे तक बूँडकर घे घामो तो क्यूने है बीकरी मिल घायबी नहीं तो बहो सैकड़ों कम्बीदवार मिक्-मिगा रहे है । (किताबें खोलकर उनके भीतर बूँडता है) ।

बहुजी—लल्लू तुवने देखा है कहीं ?

लल्लू—मेने कहीं नहीं देखा ।

बाबूजी—रखा तो है किती किताब के भीतर ही । लेकिन वह किताब कीमती है ?

बहुजी—कुछ किताबों में ने बूँडती हूँ । (एक किताब खोलकर बूँडती है) ।

लल्लू—धीर कुछ में में । (एक किताब वह भी खोलकर बूँडता है) ।

[मेपप्य में प्यारह का घंटा बजता है]

बाबूजी—(घोंककर) घरे बाप रे ! बारह बज बह ! (तिर पीछकर) घब क्या होवा ?

लल्लू—(घड़ी उठाकर दिखाता है) नहीं बाबूजी घबी तो तिक प्यारह बजे हैं । बारह बजे तक ता हम घापके पत्रह टाटिफिकेट बूँड बर्सेने । (एक किताब के भीतर बूँडता है) ।

बहुजी—रीबिया तू ने नहीं देखा ? (दूसरी किताब के भीतर बूँडती है) ।

रौशिया—साटरी फटक बैठा होता है वह ? सींग-जैसा या पूँज की तरह ? कबो बाबूजी ?

बाबूजी—वह मेरी लिवाकट का छबूत मेरी रोशनी और मेरी पॉलिश है।

रौशिया—तो तो वह रखा है।

बाबूजी—घामी तक क्यों नहीं बताया ?

रौशिया—(कोने में से एक जूते पर पॉलिश करने का चीबड़ा निकालकर देने लगता है) लीजिए।

बाबूजी—यह तो जूता रगड़ने का चीबड़ा है।

रौशिया—घाय ही ने तो पॉलिश कहा था।

बाबूजी—जूते की मोड़े कहा था।

रौशिया—उममम। (भोतर चलता जाता है)।

बाबूजी—(धिर पर खँसती रककर सोचता है) दिखाने ? (कमिष् के नीचे झूँटा है, कुछ नहीं मिलता) बिस्तर एक-एक कर उठा बेसीम पर फेंक देता है)।

[बहूजो धीरे सन्तु जो चादर धरी धीरे कमबल की एक-एक तह में घुसते हैं। कुछ नहीं मिलता।]

रौशिया—(बाबूजी की एक टाह धीरे टोच निकर घाता है) लीजिए यह घायकी टाह धीरे वह घायका टोप। बड़ी की चीजें नहीं के नए घाय लमी घायकी भीकरी घटक पई। इन्हें पहनकर बिलाइए मफ़बर हो—वह बरुर घायको भीकरी दे देंगे। मेरी लबम में तो मत्तो करने से यही रह गए। बड़ी है घायके फाटरी घाटक या साटरी फटक की धी घाय कहीं।

बाबूजी—नहीं है यह लू बेवकूफ़ है।

रौशिया—तो फिर कहीं कहीं घाय नहीं हुई।

बाबूजी—हां हुई-हुई बारह बज से पहले हुई। सन्तु तुम इन देज पर की रिताबो के बीच में सन्तु की माँ तुम कपड़ों की कबो में। रौशिया लू चारपाई के नीचे देठ यह टुक धीरे सट केस बाहर निकाल।

रौशिया—(चारपाई के नीचे से टुक धीरे सूदरेस बाहर निकालता है)।

लक्ष्मी—(माता को हथारे से बच करा धड़ी उठता उतकी लुई धारें बड़ा देता है) ।

बाबूजी—(कसमबख्त खोजकर उतमें खूँता है) इसमें रखा का ऐसी भी कुछ बाद घाती है । धीर बाद ऐसी मोठेबाब है जितना उठे पकड़ने को दोड़ो उठता ही मामती जाती है ।

बहूजी—(फिताब में खंडना छेड़कर उठे बड़मे में लग जाती है) ।

लक्ष्मी—ठीक है पिताजी एक रेफार्ड कामोफोन में बजा भीजिए, मन घालत हो जायया धीर सॉर्टिफिकेट बीच उठेया धपने-धाय बहू जी होया ।

बाबूजी—मुझे इसी मुझी है । (हजी से) धीर तुम्हारे भी फिताब पकड़ने का क्या यही समय है ? (सुटकेत जोतकर उतमें से कुछ कपड़े धीर फिताबें निकालकर उतमें खूँता है) धारबय को बाग है । रखा तो का बरीं यथा तो फिर कहां ? मेरा सॉर्टिफिकेट, बहू बसकीयती है तो किफ मेरे लिये दूसरे की नजर में बहू किफ एक रहो का टुकड़ा है । कोई उठे चुराए भी तो किफ माथ क लिये ?

लक्ष्मी—धाने धीर होठ दोनों कुछ बैर के लिये बन्द कर ध्याव कीजिए पिताजी ।

बाबूजी—हां कुछ बाद धा तो रही है । लोड़े का टुक ? बहू रखा, बतमें लफड़ी का कसमबख्त ! (कसमबख्त को फिर कुछ में रसाकर बाहर निकालता है फिर उठे सोफता है) कसमबख्त में एक पकित कुछ ? नबारर ! बत ! धब धीर धारें कुछ धाव बड़ी बड़ता । (हजी से) क्यों यथा कुछ पठा ?

बहूजी—रामायण में तो मही का ?

बाबूजी—ठीक ! बहू लफटा निघाना लफावा ? बहू है रामायण ?

बहूजी—पस्येधर मुमुन्द की भीती मे यई की धमण्ड बाड के लिये । बाकर धीव लागी है । (धपना मुनघोबर उठा मुनते हुए धती जाती है) ।

लक्ष्मी—पिताजी गीता में तो न का ?

बाबूजी—कहां है गीता ?

लक्ष्मी—बहुत के पिताजी मे गए है धमण्ड पाठ के लिये । मांय भाई ?

पात्र

कविल बाबू

मालती

उसकी पत्नी

रमू

उसका छोटा लड़का

डॉक्टर साहब

पड़ोस के कुछ छोटे लड़के

स्थान—मालती के सोन का कमरा

काल—एक संध्या

रम्बू—मुझे धाज मुक्त ही नहीं है।

मासती—तोमे को तो थाएवा ?

रम्बू—मझ भीव भी नहीं लज रही है।

मासती—(तुरन्त उठकर चीक जाती है और उसका हाथ पकड़ लेती है)।

रम्बू—(बाजू बुर खेंक देता है)।

मासती—(उसका हाथ पकड़े हुए ही) मार्के तक चपल ! (बुलटा हाथ ठामकर चपल मारते हुए अचानक बक जाती है और बचड़े हुए हाथ को काँचती हुई) रम्बू तेरे हाथ परम है ! (उसके माथे पर हाथ रखती है) माथा भी तो। तुमके फिर बुकार था परम ! (बसै बलंग की तरफ लै जाती है)।

रम्बू—कैसी बाने कर रही हो ? बुकार थाया होता तो क्या मैं बाहर अपने मापिबों के साथ फुटबॉल खेलता होता ?

मासती—तू बचवा है बच्चे ऐसी ही मादानी कभी-कभी कर लेते हैं। माता पिता का कर्तव्य है सावधानी से उनको देख-रेख करें।

रम्बू—मैं ठमक गया तुम मुझे बँसा देना नहीं चाहती हो। इसी से मेरे बुकार बुला रही हो। अचछा बाने भी वो मैं छोड़ता हूँ जैसे वा मासब। बड़ी चाहिए मुझ देता न वो मझे बँसा। (हाथ छुड़ाकर बाने लपटा है)।

मासती—(उसका हाथ नहीं छोड़ती)।

रम्बू—लेतने को तो बाने हो।

मासती—नहीं और देखियन करार हो जायगी (गोब में घठाकर रम्बू को बिस्तर पर मुला देती है) क्यापा बाते न कर चुबचाप सो रह विताजी क बपुतर से लौटने तक। फिर जैता रहें नहीं करवा। (कंबल थोड़ा देती है)।

रम्बू—(कंबल के नीतर लै) जाने वा माँ मेरे माथी मेरी राह देस रह होव।

मासती—कह तो दिवा नहीं। (बैठकर फिर घालू धीमल लपती है) विताजी बारा बहोमै।

रम्बू—(कंबल से बाहर नैज निकालकर) कीन कहता है मझे बुकार है ? (बलंग कर लै नीचे भूमि पर कूब जाता है) बीपाण कहीं एंमे कर पीर लपटा

हैं ? मैं बिलकुल ठीक हूँ । मैं जाऊँगा सलन । (बाहर को जाने लगता है) ।

मासती—(उठकर उसे पकड़ लेती है) देख कहना न मामा तो ठीक न होगा । उसके घर जाने पर मैं तुम्हें दूब मार बिभाऊँगी । (फिर उसे बिस्तर पर लुमा देती है) धपर खुपचाप बिस्तर में सो खेमा तो—

[बाहर रम्भू के साथी उसे पुकारते हैं—“रम्भू ! रम्भू !”]

रम्भू—(उठकर जाने लगता है) धाया ।

मासती—(फिर उसे रोक एक बबन्नी निकालकर देती है) ले यह बबन्नी है । धपर पिताजी के जाने तक खुपचाप सो खेमा तो तेरे लिए हॉडी-स्टिक नेंदबा हूँगी ।

रम्भू—बैसी रमेघ के पात है ?

मासती—हाँ बैसी ही, उससे भी धच्छी ।

रम्भू—धोर एक नेंद भी ?

मासती—हाँ वह भी ।

[कई धाबाजें खिड़की के पास से धाती हैं—“रम्भू ! रम्भू !”]

रम्भू—(फिर उठकर मासती की धोर देख धनुमति की भीज माँपते हुए) भी ।

मासती—हॉडी स्टिक लहाँ बाहता ?

रम्भू—बाहता हूँ । ठव कह बो उनसे रम्भू बीमार पड़ गया । (मुँह बककर तो बाठा है) ।

मासती—(खिड़की के पास जा बाहर लड़कों से कहती है) क्या कहते हो रम्भू से ? वह धाज बीमार है धलने नहीं जा सकता । (रम्भू के पास लौटती है) ।

रम्भू—लेकिन माँ तुम झूठ-मूठ ही मुझे बीमार बना रही हो । वह भी क्या कोई धच्छी बात है ?

मासती—सगर में एसी कौन माठा है जो धपने पुत्र को बीमार बना देना बाहती हो ?

रम्भू—लेकिन कीजे ? कँसे कहती हो तुम यह बुझार है ? क्या तुम

डॉक्टरजी हो ?

मासती—(मेज का डायर खोल उसके से बर्मामीटर निकालती है) जो यह बर्मामीटर मुंह में डालो यह करेगा फेसला ।

रम्मु—(मुंह खोलकर बर्मामीटर लगाता है) ।

मासती—(मेज पर से घड़ी हाथ में उठा लेती है) ।

[रम्मु का एक लाची घाता है]

लाची—रम्मु कहाँ है ?

मासती—कह तो बिपा उसका जी घाब ठीक नहीं है । बापों नम छोड़ो उसे ।

लाची—घमो-घमो तो वह बिलकुल ठीक था ।

रम्मु—(बर्मामीटर मुंह में डाल उसे अपनी तरफ हमारे से मुलाता है) ।

लाची—(रम्मु की घोर बढ़ता है) ।

मासती—(उसे रोककर) नहीं उसके पास न जाओ । कम को ठीक हो जाने पर वह जरूर तुम्हारे साथ मेरेबा । (लाची का हाथ पकड़कर उसे डार के बाहर कर देती है । घड़ी मेज पर एक फिर रम्मु के मुंह से बर्मामीटर निकालकर बैकती है और चीक उठती है) है । एक ही बार डिडी !

रम्मु—(विस्तर पर उठकर) बुवार है ? कितना माँ ?

मासती—सुना नहीं तुमने ? एक गो बार डिडी ! कहा न था मैंने ? यह तो हुपा बिस्वास ?

रम्मु—(विस्तर में लोकर मुंह डक लेता है) ।

मासती—बाडा जी लव रहा है ?

रम्मु—बैठा समझो ।

मासती—एक कमल घीर ले घानी हूँ । (घाती है) ।

[कामाक्षी करते हुए रम्मु के बार लाची बने बर भीतर घाते हैं]

एम्मा लाची—नहीं है कोई परी ।

रम्मु—(विस्तर छोड़कर उनके बीच में घा जाता है) ।

अनरा लाची—बस ।

रम्पू—माँ कहती है बुखार है। लेकिन मेरा मन कसने की बात कर रहा है।

लौसरा साबी—तुम्हारी कमर में क्लिपन को सुलाकर छोड़ा दोगे। उनक पैर में बोटा बन गई वह नहीं लभ सकता। पापो क्लिपन।

क्लिपन—(पलंग में जाता जाता है)।

[क्लिपन को पलंग में सुलाकर साबी जैसे ही उसे सम्बल छोड़ते हैं, भीतर से दूसरा सम्बल लेकर मासती घा जाती है।]

मासती—अच्छा ३६ ! (सपट कर रम्पू का हाथ पकड़ लेती है)।

[सब सापी हँसते हुए भाव जाती हैं]

रम्पू—हँ ! हँ ! माँ !

मासती—(रम्पू को फिर पलंग में सुलाकर) हठ नहीं करते बेटा माता पिता का कहना मानते हैं। बीमारी में परहेज से रहते हैं, जरा ही भुल से कुछ बढ़ जाती है। डार बन्द कर साँकल बड़ा दूँ। तुम्हारे बाबी एमे न मारेंगे। (डार बन्द कर साँकल बड़ा देती है)।

रामू—हाँकी स्टिक मया रोगी न ? (कमल के बाहर मँह निकालता है)।

मासती—हाँ तो यह विद्या।

रम्पू—तब बीमार होकर सेठ रहने में कोई बाटा मझी है ? कस मे परहेज कर लूँगा लेकिन घाने से नहीं।

मासती—अधिक बज-बज न करो कुछ बेर धाराम बकरी है। (बसका मुँह बक देती है और फिर घालू काटने में लभ जाती है)।

[पड़ीत में कहीं रेडियो बजता सुनाई देता है]

रम्पू—(बीरे से सम्बल के बाहर मुँह निकालकर फिर भीतर कर जाता है)।

मासती—(घालू-काटकर पठ काड़ी हो जाती है। मझी को देखती है) घाम का समय हो गया उनके घाने का भी। (रम्पू की तरफ दृष्टि कर) एक ही बार बिपी का बुखार और कोई प्रभाव ही नहीं। घारबवं है ! घासक ही... ठग्य। बुखार की भी ताकत को जाती है।

[धानू की वाली लेकर भीतर जाने लगती है]

कपिल बाबू—(बाहर से द्वार खटखटाने हैं) ।

धानती—(सीटल जोलती है) ।

कपिल बाबू—(घाबर) कौन साया है ? रम्भू ? क्या हो गया ?

धानती—(उन्हें पर्मावीटर देती हुई) देखिए, इतना बुरा है ।

कपिल बाबू—(पर्मावीटर में देखकर) एक तो बार किसी ! एकदम बहुत ब्यारे ! बाबर डॉक्टर साहब को बना साठा है । फिर कहीं बाहर व मिथ्य बार्पे । (जाता है) ।

धानती—(धानू की वाली लेकर भीतर जाती जाती है) ।

[टिड्डी की राह फुटबॉल कमरे के भीतर जा जाती है]

रम्भू—(मुँह खोलकर देखता है) ।

[रम्भू के बार साथी भीतर घा जाती हैं]

पहला साथी—रुई गई फुटबॉल ?

रम्भू—बहु बेसी उस होने में ।

दूसरा साथी—(फुटबॉल उठकर) फिर सा वण क्या ?

रम्भू—हो बुरा घा गया ।

तीसरा साथी—कौन कहना है ?

रम्भू—बन्नामीटर ।

पहला साथी—बननी कही ।

रम्भू—मैं तो ठीक हूँ ।

दूसरा साथी—फिर सी क्यों बए ?

रम्भू—हूँ ही स्टिक की धारा में ।

तीसरा साथी—(भीतर से धानती की धाह बाहर) बसो वे घा गई ।

पहला साथी—(बाहर से कपिल बाबू को धाखा देखकर) उधर से धानू भी घा रहे हैं ।

दूसरा साथी—बसो जब बन्ना के भीचे दिए जायें ।

[तब बन्ना के भीचे दिग्ने हैं । बाहर से डॉक्टर के साथ कपिल बाबू

घसे है, नीतर से मालती ।]

डॉक्टर—(रम्भू के पास जाकर) क्यों रम्भू ? क्या हो गया ?

रम्भू—माता जी से पूछिए ।

मालती—(बीमे स्वर में) यह बर्मामीटर दिखा बीजिए । (कपिल बाबू को बर्मामीटर देती है) ।

डॉक्टर—(रम्भू की नाड़ी और माथे पर हाथ रखकर) जवान दिखाओ ।

रम्भू—(जवान दिखाकर) मूँस सनी है डॉक्टर साहब बड़ी जोर की ।

डॉक्टर—(नाक के स्वर में) हूँ 5 5 ।

कपिल बाबू—यह टेपरेचर घसी लिया बा । (डॉक्टर को बर्मामीटर देता है) ।

डॉक्टर—(बर्मामीटर में पड़कर) एक सी चार डिग्री ! बहुत है ! (फिर रम्भू के हाथ की नाड़ी और माथे पर हाथ रखता है) ह-ह-ह-ह ! (बड़ी जोर से हँसता है) ।

कपिल बाबू—क्या बात है डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर—(बर्मामीटर भड़काते हुए फिर हँसते हैं) ह-ह-ह ! बर्मामीटर मजाने से पहले झटका दिया बा क्या ?

कपिल बाबू—(मालती की तरफ इशारा कर) क्यों ?

मालती—ठीक घाट नहीं । घायब झटका लिया बा ।

डॉक्टर—नहीं झटकाया । (रम्भू से) जो तो घाया मिनट । (रम्भू के मूँह में बर्मामीटर देकर हाथ की बड़ी में देखते हैं) ।

कपिल बाबू—में की घबग्मे में पड़ गया बा । (डॉक्टर से क्षिपाकर पत्थरों को दो प्रश्निकाँ दिखाते हैं) ।

मालती—(भीतर जाती है) ।

कपिल बाबू—कधी-कधी बड़ा बोला हो जाता है ।

डॉक्टर—हूँ 5 5 ।

कपिल बाबू—दिना बात घायको कष्ट दिया ।

मालती—(जाकर कपिल बाबू को दो चपट देती है) ।

डॉक्टर—(बर्मामीटर निकालकर देखते हैं) नहीं बच्चा नहीं है। बर्मा-मीटर में किसी का पढ़ना टेंपरेचर होगा।

रम्भू—(बर्मा से नीचे खूबकर) बलने को बाऊँ ?

डॉक्टर—घबराय।

रम्भू—(मालती से) हाँकी स्टिक रैमा बोयी न ?

मालती—(खुप रहती है)।

कपिल बाबू—(डॉक्टर को स्पष्ट करते हुए) मौजिए।

डॉक्टर—क्या है यह ?

कपिल बाबू—घायकी प्येम।

डॉक्टर—तकिन इलाज किमका किया ?

रम्भू—माता जी की बुद्धि फूटा।

[रम्भू के सब छापी हुईते हुए पलंग के नीचे से निकलने हैं]

सब साबी—बलो रम्भू ! फूटबॉल की मैच खेलने।

डॉक्टर—ठहरो ईप्टन कौन है ?

बहुला सापी—(फूटबॉल बलत में बबाए) मैं हूँ।

डॉक्टर—(कपिल बाबू से स्पष्ट लेकर पहले साबी को डैते हुए) लो रिक्त मॉडेट के निम्न।

सब साबी—बायबाय ! (ताली बजाकर) बाय ! डॉक्टर माहय की जय !

[रम्भू सहित सब लड़के ताली पीछते हुए भाते हैं। डॉक्टर साहब कपिल बाबू को बर्मामीटर लौटाते हैं।]

कपिल बाबू—(बर्मामीटर बरनी को डैते हैं) घब मे देख लिया करना पारे की रेखा बहाँ पर है।

[मालती नीची बुद्धि कर मुनकाली है]

डॉक्टर—घबछा (हाथ जोड़ता है)।

कपिल बाबू—बाय लो पी जाइए।

मालती—न बार है। (भीतर जाती है)।

[दोनों कुरानियों में बैठते हैं। भीतर बाय के प्याले बनवते हैं]

[बरबा गिरता है]

पात्र

मास्टर जी

उनकी धर्मपत्नी

एक बेहारी स्कूल के हेडमास्टर

स्थान—गाँव में मास्टर जी के धर्मवन का कमरा

काल—दिन में १०० घीर १३० के बीच में

कर्मस्वरूप हमारे घटीर घोर मन के बीच में घमघम हो गई है—हमें मुझ का भेद नहीं मिलता ।

रानी—तो क्या करने को कहते हो ?

मास्टरजी—भीतर के काम-काज देखिओ-कितारों से मन जब्त करने पर तुम्हें के बमलों घोर स्वारियों में बली बाधो । हीनो पीड़ो बाध-पाठ प्रकाशकर माय के सामने लाकर रख दो ।

रानी—मैं कहती हूँ यह जो इतना अपना इतनी बरती घोर इतना समझ अप तुम्हें में खर्च कर रहे हैं वह भी सब उत्कारियों में ही व्यय होता तो—

मास्टरजी—या तुम्हारे उस नए नैकेस के ही फंड में क्या कर दिया जाया क्यों ? सिर्फ बालबतों की तरह पैट करने के सिधे ही हम नहीं हैं । उरकारी बार्ड जाती है तो क्या हमारी प्रीकों में एक सपने का संसार नहीं बनते ? पैट की बूझ से मन के भोजन का मुख्य प्रपिक है । क्या ही प्रवर तुम्हारा भयबान है तो भी क्या हम तुम्हें की बिनी से बने नहीं क्या सकते ?

रानी—तुम तो न-जाने कहाँ-से-कहाँ बात को बीच के बाँधे हो ? कहाँ नहीं करती मैं तुम्हारे कूल-मर्तों के बीच में परिषय ?

मास्टरजी—यह तुमने बूझ नहीं । किसी तरह माय की दुद्धी काटने को तुम्हें रात्री किया तो तुमने अपनी प्रेम्णी सीनकर रख की । बलीके में पहुँची तो मार्केस्पर के छोटे-छोटे पेड़ों को बकिर्बा समझकर तोड़ लाई । टमाटर तोड़ने बेध में पहुँची तो सोने का लोकेट गँवाकर लौटी ।

रानी—(नाराज होकर जाने लगती है) ।

मास्टरजी—(पानी का हाथ पकड़ लेते हैं) हैं तुम तो नाराज हीकर जाने मतन बात यह है जब तक हम अपनी कमजोरी को कमजोरी न समझें तब तक हम बनवान हो नहीं सकते ।

रानी—क्या किसी की दुर्बलता का इस तरह विनाश करना ठीक है ? माय खेतों पर काम करते हैं तो क्या मैं रमोईबर में नहीं रहनी ? घनाज घोर गिरवा पैदा करना ही क्या बहुत बड़ा काम है ? उमे पकाना क्या कोई

बाबू है कि मग्न पडा घोर हुवा तैबार । मे कहती हूँ उसमें तो घोर भी क्यावा
 ताकतानी घोर मेहनत चाहिए । क्या बुरा वा दाहर में ? कई धन्डे बरों में
 दबान करके व । बुरर के लिय भगवान काठी देते ही मे । तनक सवार हुई
 घोर छोड़ दिया वह सब । पिताजी ने कितना समझाया एक नहीं मानी । बडे
 ज्ञान की तरफ — जाने बने । जब इस पर हाथ रखकर तुम भूमि की घोर
 देखते हो तो मे समझती हूँ तुम्हारी बुद्धि जो गई घोर तुम उसी को बंध
 रहे हो ।

मास्टरजी—जिरी पागत हो तुम । मन घोर घरीर के भ्रम का सार्वजस्य
 होना बहरी है । पुस्तक घोर लेख लिखते लिखते जब मे एक बाता हूँ तो उस
 बकल को खेतों पर सापीरिक भ्रम में भ्रमा देता हूँ घोर हाथ-वीरों के एक
 बाने पर मे फिर विमापी काम की शरण में जाता बाता हूँ ।

स्त्री—मे फिर कहूंगी जब घादमी हाथ-वीरों से काम-बोरी करने लगता है
 तो वह दाहर की तरफ वीर बढ़ता है घोर जब मस्तिष्क का काम नहीं हो
 लगता उससे तमी नाथ में जाकर निर छिनाता है ।

मास्टरजी—(हँसते हैं) ह—ह—ह ।

[कोई दाहर से डार खटखटाता है]

स्त्री—हेडमास्टर साहब होन ।

मास्टरजी—हाँ डार खोल दो ।

स्त्री—(डार खोल देती है) ।

हेडमास्टर—(घाकर) घमी लागता नहीं जाया है मेने मुबइ से ।

मास्टरजी—बवों-बवो ऐसी भुल-सुइताल की क्या बकरत है ?

हेडमास्टर—बस्त ही कहाँ है ? फूल-पत्तियों से बीबारें घोर फटक लबाए ।

स्त्री—भेज—बुधियों का इतनाम किया । लड़कों के बिच घोर माँडनों की
 प्रदर्शनी सबाई । एक बचकर पन्द्रह निनट हो गए । नाथ निनट मे लडा-बोकर
 पला हूँ बही रास्ते । घाय बोगों तैबार रहे । मेने पूरी कोसिध की है घापके
 बचापतिव मे हवारा बापिकोत्सव हर बुद्धि से सफल रहे, भीमतीजी बचनों को
 एनाम बाँटकर हूँमे हुवावे करेबी ।

कतस्वल्प हमारे घरीर घीर मन के बीच में घनबन्ध हो गई है—हमें मुझ का बंध नहीं मिलता ।

स्त्री—तो क्या करने को कहते हो ?

मास्टरजी—भीतर के काम-काज रेडियो-किताबों से मन उचट जाने पर फूलों के पमलों घीर बपारियों में बली बागो । सीधो सीधो बात-बात उखाड़कर वाय के सामने लाकर रख दो ।

स्त्री—मैं कहती हूँ यह जो इतना क्या इतनी बरती घीर इतना समय वाय फूलों में खर्च कर रहे हैं वह भी सब तरकारियों में ही व्यय होता तो—

मास्टरजी—या तुम्हारे उस नए नैबलैस के ही फंड में बमा कर दिया जा क्यों ? सिर्फं बातबतों की तरह पेट भरने के लिये ही हुय नहीं है ।

रफाटी जाई जाती है तो क्या फूस हमारी घाँवों में एक सपने का संघार नहीं बनाते ? पेट की मुझ से मन के भोजन का मूस्य अधिक है । क्या ही सबर तुम्हारा बयबान है तो भी क्या हम फूलों की बिबी से उठे नहीं क्या सकते ?

स्त्री—तुम तो न-जाने कहीं-से-कहीं बात की बीच के जाठे हो ? कई नहीं करती मैं तुम्हारे फूल-पत्तों के बीच में परिधन ?

मास्टरजी—बह तुमने अपनी घंगुनी घीनकर रख दी । किसी तरह वाय की मुट्टी काटने को तुम्हें राजी किया तो तुमने अपनी घंगुनी घीनकर रख दी । बनीके में पहुँची तो मार्कस्वर के छोटे-छोटे पैरों को बनिबाँ समझकर तोड़ लाई । टमाटर तोड़ने बेल में पहुँची तो बोलने का लक्षित नैबाकर लौटी ।

स्त्री—(नाराज होकर जाने लपती है) ।

मास्टरजी—(बली का हाथ पकड़ लिये हैं) हैं तुम तो नाराज होकर जाने लपती । बंटी घुम्कारी कसम ! जब एक घर भी तुम्हारे बिस्व न बोलना । एक हन बनबान हो नहीं सकते ।

स्त्री—क्या किसी की दुर्बलता का इत तरह बिजापन करना ठीक है ? वाय लेनों पर काम करते हैं तो क्या मैं रसोईपर में नहीं रहनी ? घनाज घीर तरकारियाँ पैदा करना ही क्या बहुत बड़ा काम है ? जमे पकाना क्या कीई

समझे । मेरे सामने घोंघेरा छा रहा है । मैं विरत । (बढ़ाव से विरत पड़ता है) ।
 [हेडमास्टरजी घबसे हैं]

हेडमास्टर—क्या हुआ ? क्या हुआ ?
 स्त्री—कहते हैं चाप ने बल लिया । हेडमास्टरजी बस्ती कुछ मरब

कीबिए ।

हेडमास्टरजी—पबराइए नहीं । एक डॉक्टर और एक मरबने वाले को
 लेकर मैं अभी जाता हूँ । (बोझते हुए जाता है) ।
 स्त्री—(मास्टरजी की नाड़ी पर हाथ रखती है) ।
 [बरबा विरता है]

मधुरा—तो क्यों न उबर ही क्या प्रकृत पड़ जायगा ?

सुन्दर—बात ऐसी है, वे अपने तुकानी बीरे में हैं । सिर्फ़ इही महीने में सारे प्रान्त के श्रील-तामाबों की सबे करनी है बाहे । मचानों पर बहुत सम्भव है चार बघों में भी एक मछली न लठियी । यहाँ पर पानतु मछलियाँ बहुत प्रानत हैं । पोड़ी ही बेर में वे तीनों भेजे कर जायेंगे । जाई, अभी तो तुम्हारी आशामद कर लाया हूँ यहाँ ।

[तीनों श्रील के किनारे बीठते हैं]

मधुरा—बटोरनी साहब क्या तीनों भेजे उड़ा जायेंगे प्रकेसे ?

सुन्दर—समझते क्या हो उनको मीटाई पप से बनी है ? पकरापो नहीं के फोफ्ट का बुझ नहीं आते । सिर्फ़ उन्हें सिखायी है सिखायी नहीं ।

मधुरा—धीर जो कहीं पुजारी बी ने पकड़ सिवा ता तुम धाज बकर हूँ कबी हाऊस भिजवा देने बाल हो ।

सुन्दर—बो परेड मैंने तुम्हें सिखाई है चली से पुजारी बी नर प्रकृत बजावेंगे ।

त्रिलोक—(बीने में हाथ डेकर) य इतने टिकट क्यों जाए हो ?

सुन्दर—अभी रको इन्हें इनसे ग्यीता सिवा जायया मछलियों को ।

मधुरा—(अपने बीने में हाथ डेकर) धीर इस मुँहे हुए घाटे का क्या करोगे ?

सुन्दर—यह ग्यीते में सिखाया जाया ।

[मन्दिर में फिर घटा बजता है]

त्रिलोक—धीर तुम अपने बीने में क्या जाए हो ?

सुन्दर—तामा बुझ नहीं उन से जाने के लिए है । चीज रहा हूँ, अगर कोई तीन बूट की मछली जैसे गई, तो उसे बीने से जायेंगे ?

मधुरा—एक-एक बूट के तीन टुकड़ कर तीनों बीनों में नर के चलेंगे ।

सुन्दर—हाँ ठीक ऐसे ही बीने यह बची के टुकड़े यहाँ जाए है । तामो परम अपने बँडे ।

पुजारी—(मन्दिर से पुकारता है) बीने है रे ? यहाँ क्या कर रहे हो ?

तुम्हारी मछली—

सुन्दर—(घबानक बंधी सेनासते हुए) हाँ हाँ फेंसी-झेंसी ! लेकिन बड़ा धोर लग रहा है । जान पड़ता है तीस पीढ़ से भी भारी है माहसीर ।

मन्सुरा—(आवाज) झील खो ! झील खो !

सुन्दर—क्या कामका ? यह खीन नहीं ग्री है भारी !

मन्सुरा—(आवाज) तुम क्यों नहीं खींचते फिर ?

सुन्दर—(धोर लगाता हुआ) खिच नहीं रही है । काँटा कहीं सिवार ने तो नहीं फेंक दिया ?

मन्सुरा—(आवाज) मैं घाँटें क्या जोर लगाने के लिए ?

सुन्दर—नहीं तुम वहीं बिपके रहो । (फिर धोर लगाकर) कोई गई जाठ की मछली तो नहीं पीसा हो गई ?

[घबानक जल-धर में धोर का घंझ बजता है]

मन्सुरा—(आवाज) हूँ ! यह तो पूरा जठम हो गई ।

सुन्दर—एक क्षण में इसकी छोटी बुजा ? (जेब में हाथ डालकर) ली एक क्षण धोर से बाकर है घाघो डरे ।

मन्सुरा—(आवाज) कैसे ? घरे ! घरे ! बुजारी की उसका पूँवट खिचकाकर उसके माने पर प्रसाह की रोमी लगाने के धोर में पड़े हैं ।

सुन्दर—घाघो मन्सुरा धोर लगायी थायद एक ही मछली के काब बन जाय ।

[मन्सुरा घाता है । दोनों धीरे-धीरे बंधी खींचते हैं । कटि में लगा हुआ एक पुराना बूट बाहर निकलता है ।]

मन्सुरा—यह तो पुरानी पलटन का बूट है ।

सुन्दर—हे मदनान् ! (भागे पर हाथ धारता है) तीस पीढ़ की माहसीर ।

मन्सुरा—बिलोक गया । धर बुजारी की रबर बैचने की पुरतल हो गई ।

सुन्दर—(जाने से बंधी के तीन दुकने कर उसकी बरखी जोल देता है) ।

बिलोक—(साड़ी खोल हँसता हुआ घाता है) क्यों कियनी मछलियाँ भारी ? (साड़ी धारि बँले में दिया देता है) ।

बपुरा—(उसे धूट उठाकर दिखाता है)

मिलोड—कोई फिगर नहीं। धमी मुझे बचराती मिला। वह कहता था—बचर में बटोरनी साहब का तार धाया है। आज उनका यहाँ धाने का शोबाब कैसिल हो गया।

दुबारी—(आश्चर्य) धमी एक घोरत बुना करने पाई थी। वह वहाँ अपना सिगरेट का डिब्बा भूस धई। बड़ी बाहिमात बात! इसी तरफ को बई थी। कहाँ है ?

मुन्वर—हम क्या जानें ?

दुबारी—(आश्चर्य) घोर तुम धमी तक नहीं जाने क्या कर रहे हो ?

मुन्वर—बही धपनी पुछनी प्रेडिटस ! घट्टेधन ! (सब खड़े हो जाते हैं) राइट टर्न ! बाच ! कैस्ट-राइट, कैफ्ट राइट, राइट, राइट ।

[सब धंडे कंधों पर रख बीते पठा कयम मिला जैसे जाते हैं]

[परषा पिरता है]

दुपहारी मछली—

सुन्दर—(अचानक बंधी सेनालते हुए) हूँ हूँ कैंडी-मैंसी ! केकिन बड़ा खोर लम रहा है ! लाम पटना है तीस पींड से भी भारी है माहसीर !

मचुरा—(घाबाज) डीम बो ! डीम बो !

सुन्दर—क्या पायवा ? यह खीन नहीं नहीं है घाई !

मचुरा—(घाबाज) तुम क्यों नहीं खीचते फिर ?

सुन्दर—(खोर लपटा हुआ) खिच नहीं रही है ! कौटा कहीं बिमार ने तो नहीं खेंस क्या ?

मचुरा—(घाबाज) मैं घाई क्या खोर लवाने के लिए ?

सुन्दर—नहीं तुम बहीं खिचके रही ! (फिर खोर लगाकर) खीरे नई बात की मछली तो नहीं पैदा हो गई ?

[अचानक अन्धिर में खोर का शंख बजता है]

मचुरा—(घाबाज) हूँ ! यह तो पूजा कठम हो गई !

सुन्दर—एक रुपए में इतनी छोटी पूजा ? (बेच में हाथ डालकर) लौ एक रुपया खीरे के बाकर के घायो बसे !

मचुरा—(घाबाज) कैंसे ? घरे ! घरे ! गुवाठी की उलका पूर्वक खिसकाकर उसके काने पर ब्रह्मा की पीली लपली के खेर में पड़े हैं !

सुन्दर—घायो मचुरा खोर लगायो, घाबाज एक ही मछली के काम बन पाय !

[मचुरा घाता है ! दोनों खीरे-खीरे बंधी खीचते हैं ! कटि ने लगा हुआ एक नुराना बूट बाहर निकलता है !]

मचुरा—यह तो नुरानी बलदम का बूट है !

सुन्दर—है मचुरा ! (काने पर हाथ मागता है) तीस पींड की माहसीर !

मचुरा—बिलोक क्या ! घब नुरानी को खोर बेचने की पुरतत हो गई !

सुन्दर—(असो से बंधो के तीस डूबते कर उलकी परकी खोल देता है) !

बिलोक—(साड़ी खोल हँसता हुआ घाता है) क्यों कितनी मछमियाँ भारी ? (साड़ी भारि बसे में दिया देता है) !

मधुर—(उसे बूट उठाकर दिखाता है)

त्रिलोक—कोई फिस्स नहीं ! धमी मुझे खपरासी मिला । वह कहता था—खपरा में खटोरजी साहब का तार धाया है, धान धनका यहाँ धाने का मोहाम केसिल हो गया ।

पुजारी—(आवाज) धमी एक धीरव पूजा करने आई थी । वह बड़ी अपना तियरेट का डिम्बा भूम गई । बड़ी बाहियात बात । इसी तरह को गई थी । कहाँ है ?

सुन्दर—हम क्या जानें ?

पुजारी—(आवाज) धीरव तुम धनी तक नहीं बने क्या कर रहे हो ?

सुन्दर—बड़ी धपनी पुजारी प्रेसिडेंट ! घट्टेघन ! (सब खड़े हो जाते हैं) राइट टर्न ! मार्च ! केस्ट-राइट, केस्ट राइट, राइट, राइट ।

[सब बंदे बंधों पर एक बंसे पठ्य, करम मिला जने जाते हैं]

[परवा फिरता है]